भजन संहिता

अध्याय 1

1 धन्य है वह मनुष्य जो दुष्टों की युक्ति पर नहीं चलता, न पापियों के मार्ग में खड़ा होता, न ठट्ठा करनेवालों की मण्डली में बैठता।
2 परन्तु वह तो यहोवा की व्यवस्था से प्रसन्न रहता है, और उसकी व्यवस्था पर रात दिन ध्यान करता रहता है।
3 वह उस वृक्ष के समान होगा जो बहती नदियों के किनारे लगाया गया है। वह अपनी ऋतु में फलता है; उसके पत्ते कभी मुरझाते नहीं, और जो कुछ वह पुरूष करे वह सफल होता है।
4 दुष्ट लोग ऐसे नहीं हैं, वे भूसी के समान हैं, जिसे पवन उड़ा ले जाती है।
5 इसलिये दुष्ट लोग न्याय में खड़े न रह सकेंगे, और न पापी धर्मियों की मण्डली में खड़े रह सकेंगे।
6 क्योंकि यहोवा धर्मियों का मार्ग जानता है, परन्तु दुष्टों का मार्ग नाश हो जाता है।

अध्याय दो

1 अन्यजाति लोग क्यों क्रोध करते हैं, और देश देश के लोग क्यों व्यर्थ बातें सोचते हैं?
2 पृथ्वी के राजा इकट्ठे होकर, और हाकिम आपस में सम्मति करके यहोवा और उसके अभिषिक्त के विरुद्ध कहते हैं,
3 आओ, हम उनके बन्धन तोड़ डालें, और उनकी रस्सियों को अपने ऊपर से उतार फेंकें।
4 जो स्वर्ग में बैठा है वह हंसेगा; प्रभु उनका उपहास करेगा।
5 तब वह क्रोध में उन से बातें करेगा, और क्रोध में उन को क्रोध दिलाएगा।
6 तौभी मैं ने अपने राजा को अपने पवित्र पर्वत सिय्योन पर नियुक्त किया है।
7 मैं यह आज्ञा सुनाता हूं: यहोवा ने मुझ से कहा है, तू मेरा पुत्र है; आज मैं ने तुझे उत्पन्न किया है।
8 मुझ से मांग, और मैं अन्यजातियों को तेरी सम्पत्ति होने के लिये, और पृथ्वी के दूर दूर देशों को तेरी सम्पत्ति होने के लिये दे दूंगा।
9 तू उनको लोहे की छड़ से तोड़ डालेगा; तू उनको कुम्हार के बर्तन की नाईं टुकड़े टुकड़े कर देगा।
10 इसलिये अब हे राजाओ, बुद्धिमान बनो; हे पृथ्वी के न्यायियो, विद्या ग्रहण करो।
11 डरते हुए यहोवा की आराधना करो, और कांपते हुए आनन्द मनाओ।
12 पुत्र को चूमो, कहीं ऐसा न हो कि वह क्रोध करे, और उसका क्रोध थोड़ी सी भड़कने पर तुम मार्ग से नाश हो जाओ। धन्य हैं वे, जो उस पर भरोसा रखते हैं।

अध्याय 3

1 (दाऊद का एक भजन, जब वह अपने पुत्र अबशालोम से भाग रहा था।) हे यहोवा, मुझे सताने वाले कितने बढ़ गए हैं! मेरे विरुद्ध उठने वाले कितने ही हैं!
2 बहुत से लोग मेरे प्राण के विषय में कहते हैं, कि परमेश्वर की ओर से उसका कुछ उद्धार नहीं। सेला।
3 परन्तु हे यहोवा, तू मेरी ढाल है, मेरी महिमा है, और मेरे सिर को ऊंचा करनेवाला है।
4 मैं ने ऊंचे शब्द से यहोवा को पुकारा, और उसने अपने पवित्र पर्वत पर से मेरी सुन ली।
5 मैं लेट गया और सो गया, फिर जाग उठा; क्योंकि यहोवा ने मुझे सम्भाला।
6 मैं उन दस हजार मनुष्यों से न डरूंगा, जो मेरे विरुद्ध चारों ओर पांति बान्धे हुए हैं।
7 हे यहोवा, उठ; हे मेरे परमेश्वर, मुझे बचा; क्योंकि तू ने मेरे सब शत्रुओं के गालों पर मारा है; तू ने दुष्टों के दांत तोड़ डाले हैं।
8 उद्धार यहोवा ही का है; तेरी आशीष तेरे लोगों पर है। सेला।

अध्याय 4

1 (नेगिनोथ के मुख्य संगीतकार के लिए, दाऊद का एक भजन।) हे मेरे धर्ममय परमेश्वर, जब मैं पुकारूं, तब मेरी सुन ले; जब मैं संकट में था, तब तू ने मुझे बढ़ाया है; मुझ पर दया कर, और मेरी प्रार्थना सुन।
2 हे मनुष्यों, तुम कब तक मेरी महिमा को लज्जित करते रहोगे? तुम कब तक व्यर्थ वस्तुओं से प्रीति रखते और लाभ की खोज में लगे रहोगे?
3 परन्तु यह जान रखो कि यहोवा ने भक्त को अपने लिये नियुक्त किया है; जब मैं यहोवा को पुकारूंगा, तब वह सुन लेगा।
4 भय से खड़े रहो, और पाप मत करो; अपने बिछौने पर पड़े हुए अपने मन से बातें करो, और शान्त रहो। सेला।
5 धर्म के बलिदान चढ़ाओ, और यहोवा पर भरोसा रखो।
6 बहुत से लोग कहते हैं, कौन हमारा कल्याण करेगा? हे यहोवा, अपने मुख का प्रकाश हम पर चमका।
7 तूने मेरे मन में उससे भी अधिक आनन्द भर दिया है, जितना उस समय भर दिया था जब उनका अन्न और दाखमधु बढ़ता था।
8 मैं शान्ति से लेट जाऊंगा और सो जाऊंगा; क्योंकि हे यहोवा, तू ही मुझे निडर रहने देता है।

अध्याय 5

1 (दाऊद का एक भजन, नेहिलोत के मुख्य संगीतकार के लिए।) हे यहोवा, मेरे वचनों पर कान लगाओ, मेरे ध्यान पर ध्यान दो।
2 हे मेरे राजा, हे मेरे परमेश्वर, मेरी दोहाई पर ध्यान दे, क्योंकि मैं तुझी से प्रार्थना करता हूं।
3 हे यहोवा, भोर को मेरी वाणी तू सुनेगा; भोर को मैं प्रार्थना करके तेरी ओर आंखें उठाऊंगा।
4 क्योंकि तू ऐसा परमेश्वर नहीं जो दुष्टता से प्रसन्न हो; और बुराई तेरे संग वास न करेगी।
5 मूर्ख लोग तेरे सम्मुख खड़े न होंगे; तू सब अनर्थकारियों से घृणा करता है।
6 तू झूठ बोलने वालों को नाश करेगा; यहोवा खूनी और छली मनुष्य से घृणा करता है।
7 परन्तु मैं तो तेरी बड़ी करूणा के कारण तेरे भवन में आऊंगा, और तेरा भय मानकर तेरे पवित्र मन्दिर की ओर दण्डवत् करूंगा।
8 हे यहोवा, मेरे शत्रुओं के कारण मुझे अपने धर्म के मार्ग पर ले चल; मेरे साम्हने अपना मार्ग सीधा कर।
9 क्योंकि उनके मुँह में सच्चाई नहीं, उनके भीतर बहुत दुष्टता है; उनका गला खुली हुई कब्र है; वे अपनी जीभ से चापलूसी करते हैं।

10 हे परमेश्वर, तू उनको नाश कर दे; वे अपनी ही युक्तियों से गिर जाएं; उनके बहुत से अपराधों के कारण उनको निकाल दे; क्योंकि उन्होंने तेरे विरुद्ध बलवा किया है।
11 परन्तु जितने तुझ पर भरोसा रखते हैं वे सब आनन्दित हों, वे सदा ऊंचे स्वर से गाते रहें, क्योंकि तू ही उनका बचाव करता है; जो तेरे नाम के प्रेमी हैं वे भी तेरे कारण आनन्दित हों।
12 क्योंकि हे यहोवा, तू धर्मी को आशीष देगा; तू उसको अपनी कृपा दृष्टि से ढाल से घेरे रहेगा।

अध्याय 6

1 (शमिनिथ के ऊपर नेगिनोथ के मुख्य संगीतकार के लिए, दाऊद का एक भजन।) हे यहोवा, मुझे अपने क्रोध में मत डांट, न ही अपने उग्र क्रोध में मुझे दंडित कर।
2 हे यहोवा, मुझ पर दया कर, क्योंकि मैं दुर्बल हूँ; हे यहोवा, मुझे चंगा कर, क्योंकि मेरी हड्डियाँ कष्ट से भरी हैं।
3 मेरा मन भी बहुत व्याकुल है; परन्तु हे यहोवा, तू कब तक?
4 हे यहोवा, लौट आ, और मेरे प्राण बचा ले; अपनी दया के कारण मेरा उद्धार कर।
5 क्योंकि मृत्यु के बाद तेरा स्मरण नहीं होता; अधोलोक में कौन तेरा धन्यवाद करेगा?
6 मैं कराहते कराहते थक गया हूं; मैं रात भर अपना बिछौना भिगोता हूं; मैं अपने बिछौने को आँसुओं से भिगोता हूं।
7 मेरी आंखें शोक के मारे धुंधली हो गई हैं; मेरे सब शत्रुओं के कारण वे बूढ़ी हो गई हैं।
8 हे सब कुकर्म करनेवालो, मेरे पास से चले जाओ; क्योंकि यहोवा ने मेरे रोने का शब्द सुन लिया है।
9 यहोवा ने मेरी प्रार्थना सुनी है; यहोवा मेरी प्रार्थना ग्रहण करेगा।
10 मेरे सब शत्रु लज्जित हों और अत्यन्त घबरा जाएं; वे लौटकर अचानक लज्जित हों।

अध्याय 7

1 (दाऊद का शिग्गायोन, जिसे उसने बिन्यामीनी कूश के वचनों के विषय में यहोवा के लिये गाया था।) हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मैं तुझी पर भरोसा रखता हूं; मेरे सब सतानेवालों से मुझे बचा, और छुड़ा।
2 ऐसा न हो कि वह मेरे प्राण को सिंह के समान फाड़ डाले, और उसे टुकड़े टुकड़े कर डाले, और कोई बचानेवाला न रहे।
3 हे मेरे परमेश्वर यहोवा, यदि मैं ने यह काम किया हो, और मेरे हाथों से कुछ अधर्म हुआ हो,
4 यदि मैं ने अपने मेल रखनेवाले को बुराई का बदला दिया है, (हां, जो अकारण मेरा शत्रु है, उसे भी मैं ने छुड़ाया है।)
5 शत्रु मेरे प्राण को सताए और उसे ले ले; हां, वह मेरे प्राण को पृथ्वी पर रौंद डाले, और मेरी प्रतिष्ठा को धूल में मिला दे। सेला।
6 हे यहोवा, क्रोध में उठ, मेरे शत्रुओं के क्रोध के कारण उठ; और मेरे लिये उस न्याय के लिये जाग जो तू ने ठहराया है।
7 इसी प्रकार प्रजा की मण्डली तेरे चारों ओर घूमेगी; इसलिये तू उनके कारण ऊंचे स्थान पर लौट आ।
8 यहोवा प्रजा का न्याय करेगा; हे यहोवा, मेरे धर्म के अनुसार, और मुझ में जो खराई है उसके अनुसार मेरा न्याय कर।
9 दुष्टों की दुष्टता का अन्त करो; और धर्मियों को स्थिर करो; क्योंकि धर्मी परमेश्वर मन और अन्तकरण को जांचता है।
10 मेरी रक्षा परमेश्वर की ओर से है, जो सीधे मनवालों को बचाता है।
11 परमेश्वर धर्मियों का न्याय करता है, और दुष्टों पर परमेश्वर प्रतिदिन क्रोध करता है।
12 यदि वह न फिरे, तो वह अपनी तलवार पर सान चढ़ाएगा; वह अपना धनुष चढ़ाकर तैयार कर लेगा।
13 उसने उसके लिये मृत्यु के हथियार तैयार किये हैं; उसने अपने तीर सतानेवालों के विरुद्ध चलाये हैं।
14 देख, वह अधर्म से व्याकुल है, और उसने दुष्टता का गर्भ धारण किया है और झूठ को जन्म दिया है।
15 उसने गड्ढा खोदा और उस गड्ढे में गिर पड़ा।
16 उसकी बुराई उसके ही सिर पर लौट आएगी, और उसका उपद्रव उसके ही सिर पर पड़ेगा।
17 मैं यहोवा की स्तुति उसके धर्म के अनुसार करूंगा, और परमप्रधान यहोवा के नाम का भजन गाऊंगा।

अध्याय 8

1 (दाऊद का भजन, गित्तीत के प्रधान गायक के नाम) हे हमारे प्रभु यहोवा, तेरा नाम सारी पृथ्वी पर कैसा महान है! तू ने अपनी महिमा को स्वर्ग से भी ऊपर स्थापित किया है।
2 तू ने अपने शत्रुओं के कारण बालकों और दूध पीते बच्चों के मुख से सामर्थ्य उत्पन्न किया है, कि तू शत्रु और पलटा लेनेवाले को चुप करा सके।
3 जब मैं आकाश को, जो तेरे हाथों का कार्य है, और चंद्रमा और तारागण को, जो तू ने नियुक्त किए हैं, देखता हूं;
4 मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखता है? और आदमी क्या है कि तू उस पर दृष्टि रखता है?
5 क्योंकि तू ने उसे स्वर्गदूतों से कुछ ही कम बनाया है, और महिमा और आदर का मुकुट उसके सिर पर रखा है।
6 तू ने उसे अपने हाथों के कामों पर प्रभुता दी है; तू ने सब कुछ उसके पैरों तले कर दिया है।
7 सब भेड़-बकरी, बैल-बैल, और मैदान के सब पशु;
8 आकाश के पक्षी, समुद्र की मछलियाँ और समुद्र के मार्गों पर चलने वाले जितने जन्तु हैं।
9 हे हमारे प्रभु यहोवा, तेरा नाम सारी पृथ्वी पर कितना महान है!

अध्याय 9

1 (मुथलबेन के मुख्य संगीतकार के लिए, दाऊद का एक भजन।) हे यहोवा, मैं पूरे दिल से आपकी प्रशंसा करूंगा; मैं आपके सभी आश्चर्यकर्मों को दिखाऊंगा।
2 मैं तेरे कारण आनन्दित और मगन होऊंगा; हे परमप्रधान, मैं तेरे नाम का भजन गाऊंगा।
3 जब मेरे शत्रु पीछे हटेंगे, तब वे तेरे साम्हने गिरकर नाश हो जाएंगे।
4 क्योंकि तू ने मेरा न्याय और मेरा मुकद्दमा लड़ा है; तू ही सिंहासन पर विराजमान होकर धर्म से न्याय करता है।
5 तूने अन्यजातियों को डांटा है, तूने दुष्टों को नष्ट किया है, तूने उनका नाम सदा सर्वदा के लिये मिटा दिया है।
6 हे शत्रु! विनाश तो सदा के लिये समाप्त हो गया है; तूने नगरों को नष्ट कर दिया है; उनका स्मरण भी उनके साथ मिट गया है।

7 परन्तु यहोवा सर्वदा विराजमान रहेगा; उसने अपना सिंहासन न्याय के लिये सिद्ध किया है।
8 वह जगत का न्याय धर्म से करेगा, वह देश देश के लोगों का न्याय खराई से चुकाएगा।
9 यहोवा पिसे हुओं के लिये शरणस्थान ठहरेगा, संकट के समय में भी शरणस्थान ठहरेगा।
10 और तेरे नाम के जाननेवाले तुझ पर भरोसा रखेंगे, क्योंकि हे यहोवा, तू ने अपने खोजियों को त्याग नहीं दिया।
11 यहोवा जो सिय्योन में विराजमान है, उसका भजन गाओ; लोगों के बीच उसके बड़े कामों का प्रचार करो।
12 जब वह खून का न्याय करता है, तब उनको स्मरण रखता है; वह दीन लोगों की दोहाई को नहीं भूलता।
13 हे यहोवा, मुझ पर दया कर; मेरे उस संकट पर ध्यान कर जो मैं अपने बैरियों से उठाता हूं; हे यहोवा, तू जो मुझे मृत्यु के फाटकों से उठाता है।
14 मैं सिय्योन के फाटकों पर तेरी सारी स्तुति प्रगट करूंगा; मैं तेरे उद्धार से आनन्दित होऊंगा।
15 अन्यजाति लोग जो गड़हा उन्होंने खोदा था उसी में डूब गए; जो जाल उन्होंने लगाया था उसी में उनका पांव फंस गया।
16 यहोवा अपने न्याय के काम से जाना जाता है; दुष्ट अपने ही हाथ के कामों में फँस जाता है। हिग्गियोन। सेलाह।
17 दुष्ट लोग अधोलोक में चले जायेंगे, और वे सब जातियाँ भी जो परमेश्वर को भूल जाती हैं।
18 क्योंकि दरिद्र लोग सदा बिसरे न रहेंगे; और न दरिद्रों की आशा सर्वदा नाश होगी।
19 हे यहोवा, उठ! मनुष्य को प्रबल न होने दे! अन्यजातियों का न्याय तेरे सम्मुख किया जाए!
20 हे यहोवा, उन को डरा दे, तब जातियां जान लें कि वे मनुष्य ही हैं।

अध्याय 10

1 हे यहोवा, तू क्यों दूर खड़ा रहता है? संकट के समय तू क्यों छिपता है?
2 दुष्ट लोग अपने घमंड में आकर गरीबों को सताते हैं; वे अपनी ही बनाई हुई युक्तियों में फंस जाएं।
3 क्योंकि दुष्ट अपनी इच्छा पूरी करने पर घमण्ड करता है, और लोभी को आशीर्वाद देता है, जिस से यहोवा घृणा करता है।
4 दुष्ट अपने अभिमान के कारण परमेश्वर की खोज नहीं करता; उसके सारे विचार में परमेश्वर ही नहीं रहता।
5 उसके मार्ग सदैव भयंकर हैं; तेरे नियम उसकी दृष्टि से बहुत ऊंचे हैं; वह अपने सब शत्रुओं पर घमण्ड करता है।
6 वह अपने मन में कहता है, मैं न डगमगाऊंगा, क्योंकि मैं कभी विपत्ति में न पड़ूंगा।
7 उसका मुँह शाप, छल और कपट से भरा है; उसके वचन में दुष्टता और व्यर्थ बातें भरी हैं।
8 वह गांवों के गुप्त स्थानों में बैठा रहता है; वह निर्दोष लोगों की हत्या करता है; उसकी आंखें दरिद्रों पर लगी रहती हैं।
9 वह सिंह की नाईं अपनी मांद में छिपकर घात लगाता है; वह दरिद्र को पकड़ने के लिये घात लगाता है; वह दरिद्र को अपने जाल में फंसाकर उसे पकड़ लेता है।
10 वह दबकर अपने को दीन करता है, और अपने बलवानों के द्वारा निर्धनों को गिरा देता है।
11 वह मन में कहता है, परमेश्वर भूल गया है; वह अपना मुख छिपाता है; वह उसे कभी न देखेगा।
12 हे यहोवा, उठ! हे परमेश्वर! अपना हाथ बढ़ा! दीन लोगों को मत भूल!
13 दुष्ट लोग परमेश्वर को क्यों तुच्छ जानते हैं? वह अपने मन में कहता है, तू उससे कुछ न मांगेगा।
14 तू ने तो देखा ही है, तू उत्पात और द्वेष को देखता है, और अपने ही हाथ से उसका बदला चुकाता है। दरिद्र लोग तेरे हाथ में सौंपे जाते हैं; तू अनाथों का सहायक है।
15 दुष्ट और बुरे मनुष्य की भुजा तोड़ डालो; उसकी दुष्टता का पता लगाते रहो, जब तक कि वह न मिल जाए।
16 यहोवा युगानुयुग राजा है; उसके देश में से अन्यजातियाँ नाश हो गई हैं।
17 हे यहोवा, तू ने नम्र लोगों की अभिलाषा सुनी है; तू उनका मन तैयार करेगा, और उन पर कान लगाएगा।
18 कि अनाथों और उत्पीड़ितों का न्याय करूं, ताकि पृथ्वी का मनुष्य फिर उन पर अन्धेर न करे।

अध्याय 11

1 (प्रधान संगीतकार के लिए, दाऊद का एक भजन।) मैं यहोवा पर भरोसा रखता हूं: तुम मेरे प्राण से कैसे कहते हो, पक्षी की नाईं अपने पहाड़ पर उड़ जा?
2 क्योंकि देखो, दुष्ट लोग अपना धनुष चढ़ाते और अपना तीर डोरी पर चढ़ाते हैं, कि सीधे मनवालों पर छिपकर तीर चलाएं।
3 यदि नींव नष्ट हो जाए तो धर्मी क्या कर सकेगा?
4 यहोवा अपने पवित्र मन्दिर में है, यहोवा का सिंहासन स्वर्ग में है; उसकी आंखें मनुष्यों को देखती रहती हैं, और उसकी पलकें उन्हें परखती रहती हैं।
5 यहोवा धर्मी को परखता है, परन्तु वह दुष्टों और उपद्रव से प्रीति रखनेवालों से अपनी आत्मा में घृणा करता है।
6 दुष्टों पर वह फन्दे, आग और गन्धक बरसाएगा, और भयंकर आँधी चलाएगा; उनके कटोरे का भाग यही होगा।
7 क्योंकि यहोवा धर्मी से प्रीति रखता है; वह सीधे लोगों पर दृष्टि करता है।

अध्याय 12

1 (शमिनिथ के मुख्य संगीतकार के लिए, दाऊद का एक भजन।) हे यहोवा, सहायता कर, क्योंकि भक्त जन जाता रहा है; क्योंकि मनुष्यों में से विश्वासयोग्य लोग नाश हो गए हैं।
2 वे एक दूसरे से व्यर्थ बातें करते हैं; वे चिकनी चुपड़ी बातें बोलते हैं, और दो मन की बातें बोलते हैं।
3 यहोवा सब चापलूसी भरे होठों को और घमण्ड से बातें करने वाली जीभ को काट डालेगा।
4 वे कहते हैं, कि हम अपनी जीभ ही से जयवन्त होंगे, हमारे होंठ ही हमारे हैं; हमारा प्रभु कौन है?
5 यहोवा की यह वाणी है, अब मैं दरिद्रों पर अन्धेर करने और दरिद्रों के कराहने के कारण उठूंगा; मैं उसको उन से बचाऊंगा जो उस पर घमंड करते हैं।
6 यहोवा के वचन शुद्ध वचन हैं, जैसे भट्ठी में मिट्टी पर परखे हुए सात बार निर्मल किए हुए चाँदी।

7 हे यहोवा, तू उनकी रक्षा करेगा, तू उन्हें इस पीढ़ी से सदा बचाए रखेगा।
8 दुष्ट लोग चारों ओर घूमते हैं, जबकि सबसे नीच लोग ऊंचे हो जाते हैं।

अध्याय 13

1 (प्रमुख संगीतकार के लिए, दाऊद का एक भजन।) हे यहोवा, तू मुझे कब तक भूला रहेगा? सदा के लिए? तू कब तक अपना मुख मुझ से छिपाए रहेगा?
2 मैं कब तक अपने मन में युक्तियां करता रहूंगा, और प्रतिदिन अपने हृदय में शोक करता रहूंगा? मेरा शत्रु कब तक मुझ पर प्रबल रहेगा?
3 हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मेरी ओर ध्यान दे और मेरी सुन ले; मेरी आंखों में ज्योति ला, कहीं ऐसा न हो कि मैं मृत्यु की नींद सो जाऊं;
4 ऐसा न हो कि मेरा शत्रु कहे, कि मैं उस पर प्रबल हो गया; और मेरे सतानेवाले मेरे डरने से आनन्दित हों।
5 परन्तु मैं ने तेरी करूणा पर भरोसा रखा है; मेरा हृदय तेरे उद्धार से आनन्दित होगा।
6 मैं यहोवा का भजन गाऊंगा, क्योंकि उसने मुझ पर उपकार किया है।

अध्याय 14

1 (प्रमुख संगीतकार के लिए, दाऊद का एक भजन।) मूर्ख ने अपने मन में कहा है, कोई परमेश्वर नहीं है। वे भ्रष्ट हैं, उन्होंने घिनौने काम किए हैं, कोई भी ऐसा नहीं है जो अच्छा करता हो।
2 यहोवा ने स्वर्ग से मनुष्यों के ऊपर दृष्टि की, कि देखे कि कोई समझदार और परमेश्वर को खोजने वाला है या नहीं।
3 वे सब के सब भटक गए, वे सब के सब अशुद्ध हो गए; कोई भी भलाई करनेवाला नहीं, एक भी नहीं।
4 क्या सब अनर्थकारियों को कुछ भी ज्ञान नहीं? वे मेरी प्रजा को रोटी की नाईं खा जाते हैं, और यहोवा का नाम नहीं लेते?
5 और वे बहुत डर गए, क्योंकि परमेश्वर धर्मियों के बीच में रहता है।
6 तुमने दीन लोगों की युक्ति को लज्जित किया है, क्योंकि यहोवा उनका शरणस्थान है।
7 भला होता कि इस्राएल का उद्धार सिय्योन से आता! जब यहोवा अपनी प्रजा को बन्धुआई से लौटा ले आएगा, तब याकूब आनन्दित और इस्राएल आनन्दित होगा।

अध्याय 15

1 (दाऊद का एक भजन) हे यहोवा, तेरे निवास में कौन रहेगा? तेरे पवित्र पर्वत पर कौन बसेगा?
2 जो धर्म से चलता, और धर्म के काम करता, और हृदय से सच बोलता है।
3 जो अपनी जीभ से चुगली नहीं करता, न अपने पड़ोसी की बुराई करता है, न अपने पड़ोसी की निन्दा सुनता है।
4 जो मनुष्य तुच्छ जाना जाता है, वह यहोवा के डरवैयों का आदर करता है। जो शपथ खाकर अपने ही प्राण बचाता है, वह भी अपनी हानि ही उठाता है।
5 जो अपना धन ब्याज पर नहीं लगाता, और न निर्दोष पर घूस लेता है, जो ये काम करता है, वह कभी न डगमगाएगा।

अध्याय 16

1 (दाऊद का मिक्ताम) हे परमेश्वर, मेरी रक्षा कर, क्योंकि मैं तुझी पर भरोसा रखता हूं।
2 हे मेरे मन, तू ने यहोवा से कहा है, तू मेरा प्रभु है; मेरी भलाई तुझ तक नहीं पहुंची;
3 परन्तु पृथ्वी पर जो पवित्र लोग हैं, और जो उत्तम हैं, उन्हीं से मेरा पूरा मन प्रसन्न है।
4 जो दूसरे देवता के पीछे दौड़ते हैं, उनका दु:ख बढ़ जाएगा; मैं उनके लिये लोहू का तर्पण न चढ़ाऊंगा, और न उनका नाम अपने होठों से लूंगा।
5 यहोवा मेरा भाग और मेरे कटोरे का भाग है; तू ही मेरा भाग स्थिर रखता है।
6 मेरे लिये वंश मनभावने स्थानों में पड़ा है; हां, मेरा भाग उत्तम है।
7 मैं यहोवा को धन्य कहूंगा, जिसने मुझे सम्मति दी है; मेरी अंतड़ियाँ मुझे रात में शिक्षा देती हैं।
8 मैं ने यहोवा को सदैव अपने सम्मुख रखा है; इसलिये कि वह मेरे दाहिने हाथ रहता है, मैं कभी न डगमगाऊंगा।
9 इसलिये मेरा मन आनन्दित और मेरी महिमा मगन होगी; मेरा शरीर भी आशा में विश्राम करेगा।
10 क्योंकि तू मेरे प्राण को अधोलोक में न छोड़ेगा, और न अपने पवित्र जन को सड़ने देगा।
11 तू मुझे जीवन का मार्ग दिखाएगा; तेरे निकट आनन्द की भरपूरी है; तेरे दाहिने हाथ में सुख सर्वदा बना रहता है।

अध्याय 17

1 (दाऊद की प्रार्थना) हे यहोवा, सच्चाई की बात सुन, मेरी दोहाई पर ध्यान दे, मेरी प्रार्थना पर कान लगा जो झूठे होठों से नहीं निकलती।
2 मेरा निर्णय तेरे सम्मुख से प्रगट हो; तेरी आंखें बराबर बातें देखती रहें।
3 तू ने मेरे मन को जांचा है; तू ने रात को मुझ पर दृष्टि की है; तू ने मुझे जांचा है, परन्तु कुछ न पाया; मैं ने ठाना है कि मेरे मुंह से अपराध की बात न निकले।
4 मनुष्य के कामों के विषय में, तेरे मुंह के वचन के द्वारा मैं ने अपने आप को नाश करने वाले के मार्ग से बचाए रखा है।
5 अपने पथों में मेरे चलने को स्थिर रख, ऐसा न हो कि मेरे पग फिसलें।
6 हे परमेश्वर, मैं ने तुझे पुकारा है, क्योंकि तू मेरी सुनेगा; अपना कान मेरी ओर लगाकर मेरी बात सुन।
7 हे अपने दाहिने हाथ के द्वारा अपने शरणागतों को अपने विरोधियों से बचाने वाले, अपनी अद्‌भुत करूणा प्रगट कर।
8 मुझे अपनी आंख की पुतली के समान सुरक्षित रख, अपने पंखों की छाया में मुझे छिपा ले,
9 मुझे उन दुष्टों से बचाओ जो मुझे सताते हैं, मेरे प्राणघातक शत्रुओं से बचाओ जो मुझे चारों ओर से घेरे हुए हैं।
10 वे अपनी चर्बी में घिरे रहते हैं; वे अपने मुंह से घमण्ड से बोलते हैं।

11 अब वे हमारे कदमों में हमें घेर चुके हैं; वे अपनी आँखें धरती की ओर झुकाए हुए हैं;
12 वह सिंह के समान है जो अपने शिकार के लिये लालची हो, वा जवान सिंह के समान है जो छिपे हुए स्थानों में घात लगाए बैठा हो।
13 हे यहोवा, उठ, उसको निराश कर, उसको गिरा दे; मेरे प्राण को दुष्टों से बचा, वह तेरी तलवार है।
14 हे यहोवा, जो मनुष्य तेरे वश में हैं, और जो संसार के मनुष्य हैं, उनका भाग इसी जीवन में है, और जिनका पेट तू ने अपने गुप्त भण्डार से भरा है; वे तो बालकों से तृप्त हैं, परन्तु अपनी शेष सम्पत्ति अपने बालकों के लिये छोड़ जाते हैं।
15 मैं तो धर्म से तेरे मुख का दर्शन करूंगा; जब मैं जागूंगा तब तेरे स्वरूप से तृप्त हो जाऊंगा।

अध्याय 18

1 (प्रधान गायक के नाम यहोवा के दास दाऊद का एक भजन, जिस ने यहोवा से इस गीत के वचन उस दिन कहे थे, जब यहोवा ने उसको उसके सब शत्रुओं और शाऊल के हाथ से बचाया था। और उसने कहा,) हे यहोवा, हे मेरे बल, मैं तुझ से प्रेम करूंगा।
2 यहोवा मेरी चट्टान, और मेरा गढ़, और मेरा छुड़ानेवाला है; मेरा परमेश्वर, मेरा बल, मैं उस पर भरोसा रखूंगा; वह मेरा ढाल, और मेरा उद्धार करनेवाला सींग, और मेरा ऊंचा गढ़ है।
3 मैं यहोवा को जो स्तुति के योग्य है पुकारूंगा, तब मैं अपने शत्रुओं से बचाया जाऊंगा।
4 मृत्यु के शोक ने मुझे घेर लिया, और दुष्टों की बाढ़ ने मुझे डरा दिया।
5 अधोलोक के दुख्खों ने मुझे घेर लिया है, और मृत्यु के फन्दे मेरे साम्हने खड़े हैं।
6 संकट में मैं ने यहोवा को पुकारा, और अपने परमेश्वर को पुकारा; उस ने अपने मन्दिर में से मेरी वाणी सुनी, और मेरी दोहाई उसके निकट पहुंचकर उसके कानों में पहुंची।
7 तब पृथ्वी हिल गई और कांप उठी; पहाड़ों की नेवें हिल गईं और हिल गईं, क्योंकि वह क्रोधित हुआ था।
8 उसके नथनों से धुआँ निकला, और उसके मुँह से आग निकलकर भस्म करने लगी; और उससे कोयले दहक उठे।
9 और वह आकाश को झुकाकर उतर आया, और उसके पांवों तले अन्धकार था।
10 और वह करूब पर सवार होकर उड़ा, हां, वह पवन के पंखों पर चढ़कर उड़ा।
11 उसने अन्धकार को अपना छिपने का स्थान बनाया; उसके चारों ओर अन्धकारमय जल और आकाश के घने बादल थे।
12 उसके सामने जो चमक थी, उसके सामने घने बादल, ओले और आग के अंगारे गुज़र गए।
13 यहोवा ने आकाश में गरजकर कहा, और परमप्रधान ने अपनी वाणी सुनाई; ओले और अंगारे बरसने लगे।
14 उसने अपने तीर चलाकर उनको तितर-बितर कर दिया; और बिजलियाँ गिराकर उनको घबरा दिया।
15 तब जल की नालियाँ दिखाई पड़ीं, और जगत की नींव प्रगट हुई, हे यहोवा, तेरी डांट से, और तेरे नथनों की साँस की झोंक से।
16 उसने ऊपर से भेजकर मुझे पकड़ लिया, उसने मुझे बहुत जल में से खींच लिया।
17 उसने मुझे मेरे बलवन्त शत्रु से, और मेरे बैरियों से भी बचाया, क्योंकि वे मुझ से अधिक सामर्थी थे।
18 मेरी विपत्ति के दिन वे मुझे रोकते रहे, परन्तु यहोवा मेरा सहारा रहा।
19 और उसने मुझे निकाल कर चौड़े स्थान में पहुंचाया; उसने मुझे छुड़ाया, क्योंकि वह मुझ से प्रसन्न था।
20 यहोवा ने मुझे मेरे धर्म के अनुसार बदला दिया; मेरे हाथों की शुद्धता के अनुसार उसने मुझे बदला दिया है।
21 क्योंकि मैं यहोवा के मार्गों पर चलता रहा, और अपने परमेश्वर से दुष्टता करके नहीं हटा।
22 क्योंकि उसके सब नियम मेरे साम्हने बने रहे, और मैं ने उसकी विधियों को अपने से दूर न किया।
23 मैं उसके सम्मुख सीधा रहा, और अपने अधर्म से दूर रहा।
24 इसलिये यहोवा ने मुझे मेरे धर्म के अनुसार बदला दिया है, और मेरे हाथों की उस शुद्धता के अनुसार जो उसकी दृष्टि में थी।
25 दयालु के साथ तू दयालु दिखता है; सीधे मनुष्य के साथ तू सीधा दिखता है;
26 शुद्ध के साथ तू अपने को शुद्ध दिखाता है; और टेढ़े के साथ तू अपने को टेढ़ा दिखाता है।
27 क्योंकि तू दीन लोगों को बचाएगा, परन्तु घमण्ड से भरी हुई आंखों को नीचा करेगा।
28 क्योंकि तू ही मेरा दीपक जलाएगा; यहोवा मेरा परमेश्वर मेरे अन्धकार को दूर करेगा।
29 क्योंकि तेरी सहायता से मैं सेना पर से भाग गया, और अपने परमेश्वर की सहायता से मैं शहरपनाह को फांद गया।
30 परमेश्वर का मार्ग खरा है; यहोवा का वचन ताया हुआ है; वह अपने सब शरणागतों के लिये ढाल है।
31 क्योंकि यहोवा को छोड़ और कौन ईश्वर है? या हमारे परमेश्वर को छोड़ और कौन चट्टान है?
32 यह वही ईश्वर है जो सामर्थ से मेरा कटिबन्ध बान्धता है, और मेरे मार्ग को सिद्ध करता है।
33 वह मेरे पैरों को हरिणों के समान बनाता है, और मुझे मेरे ऊंचे स्थानों पर खड़ा करता है।
34 वह मेरे हाथों को युद्ध करना सिखाता है, यहां तक कि मेरी भुजाओं से इस्पात का धनुष टूट जाता है।
35 तू ने मुझे अपने उद्धार की ढाल दी है, और अपने दाहिने हाथ से मुझे सम्भाले हुए है, और तेरी नम्रता ने मुझे महान बनाया है।
36 तू ने मेरे लिये मार्ग चौड़ा किया है, कि मेरे पैर नहीं फिसले।
37 मैं अपने शत्रुओं का पीछा करके उन्हें पकड़ लूंगा; और जब तक उनका अन्त न हो जाए तब तक मैं लौटकर न आऊंगा।
38 मैं ने उन को ऐसा घायल किया कि वे उठ नहीं सकते; वे मेरे पैरों के नीचे गिर गए हैं।
39 क्योंकि तू ने युद्ध के लिये मुझे शक्ति से कमर बान्धा है; तू ने मेरे विरोधियों को मेरे वश में कर दिया है।
40 तू ने मेरे शत्रुओं की गर्दनें मेरे हाथ कर दीं, कि मैं अपने बैरियों को नाश करूं।
41 उन्होंने दोहाई तो दी परन्तु उनको बचाने वाला कोई न मिला; उन्होंने यहोवा की भी दोहाई तो दी, परन्तु उसने उनको कोई उत्तर न दिया।
42 तब मैं ने उनको पवन से उड़ाई हुई धूल के समान छोटा कर दिया; मैं ने उन्हें सड़कों की धूल के समान फेंक दिया।

43 तूने मुझे प्रजा के झगड़ों से छुड़ाया है; और मुझे अन्यजातियों का प्रधान बनाया है; एक ऐसी जाति जिसे मैं नहीं जानता था, वह मेरी सेवा करेगी।
44 ज्योंही वे मेरा समाचार सुनेंगे, त्योंही मेरी मानेंगे; परदेशी लोग भी मेरे आधीन हो जाएंगे।
45 परदेशी लोग डरकर अपने गढ़ों से दूर चले जाएंगे।
46 यहोवा जीवित है, मेरी चट्टान धन्य है, और मेरा उद्धार करनेवाला परमेश्वर महान हो!
47 यह परमेश्वर ही है जो मेरा पलटा लेता है, और देश देश के लोगों को मेरे वश में कर देता है।
48 वह मुझे मेरे शत्रुओं से बचाता है; हां, तू मुझे मेरे विरोधियों से ऊंचा करता है; तू ने मुझे उपद्रवी मनुष्य से बचाया है।
49 इस कारण, हे यहोवा, मैं जाति जाति के साम्हने तेरा धन्यवाद करूंगा, और तेरे नाम का भजन गाऊंगा।
50 वह अपने राजा को बड़ा छुटकारा देता है, और अपने अभिषिक्त दाऊद पर और उसके वंश पर सदा काल तक करूणा करता रहेगा।

अध्याय 19

1 (प्रधान संगीतकार के लिए, दाऊद का एक भजन।) आकाश परमेश्वर की महिमा वर्णन कर रहा है; और आकाशमण्डल उसकी हस्तकला को प्रगट कर रहा है।
2 दिन दिन को बातें कहता है, और रात रात को ज्ञान सिखाती है।
3 कोई वाणी या भाषा नहीं, जहाँ उनका शब्द सुनाई न देता हो।
4 उनकी वंशावली सारी पृथ्वी पर फैल गई है, और उनके वचन जगत की छोर तक पहुंच गए हैं। उन में उसने सूर्य के लिये डेरा खड़ा किया है,
5 वह दूल्हे के समान अपने शयनकक्ष से निकलता है, और वीर के समान दौड़ में दौड़ने के लिये आनन्दित होता है।
6 वह आकाश की छोर से निकलता है, और उसकी परिक्रमा आकाश की छोर तक होती है; और उसकी गर्मी से कुछ भी छिपा नहीं है।
7 यहोवा की व्यवस्था खरी है, वह प्राण को बहाल कर देती है; यहोवा की गवाही विश्वसनीय है, भोले लोगों को बुद्धिमान बना देती है।
8 यहोवा के नियम सिद्ध हैं, हृदय को आनन्दित कर देते हैं; यहोवा की आज्ञा निर्मल है, आंखों में ज्योति ले आती है।
9 यहोवा का भय पवित्र है, वह सदा तक स्थिर रहता है; यहोवा के निर्णय पूर्णतःसच्चे और धर्ममय हैं।
10 वे सोने से भी बढ़कर मनोहर हैं, वरन बहुत कुन्दन से भी बढ़कर; वे मधु और छत्ते से भी अधिक मधुर हैं।
11 और उन्हीं से तेरा दास चिताया जाता है, और उन पर चलने से बड़ा प्रतिफल मिलता है।
12 उसके अधर्म को कौन समझ सकता है? हे प्रभु, मुझे गुप्त दोषों से शुद्ध कर।
13 अपने दास को दुराग्रह से बचाए रख; वे मुझ पर प्रभुता न करें; तब मैं धर्मी रहूंगा, और बड़े अपराध से निर्दोष रहूंगा।
14 हे यहोवा, हे मेरे बल और मेरे उद्धारकर्त्ता, मेरे मुँह के वचन और मेरे हृदय का ध्यान तेरे सम्मुख ग्रहण योग्य हों।

अध्याय 20

1 संकट के दिन यहोवा तेरी सुन ले; याकूब के परमेश्वर का नाम तुझे बचाए;
2 पवित्रस्थान से तेरी सहायता भेज, और सिय्योन से तुझे दृढ़ कर;
3 अपने सब बलिदानों को स्मरण कर, और अपने होमबलि को ग्रहण कर; सेला!
4 तेरे मन के अनुसार तुझे अनुग्रह दे, और तेरी सारी युक्ति पूरी हो।
5 हम तेरे उद्धार से आनन्दित होंगे, और अपने परमेश्वर के नाम से झण्डे खड़े करेंगे; यहोवा तेरे सब निवेदन पूरे करे।
6 अब मैं जान गया हूं कि यहोवा अपने अभिषिक्त का उद्धार करता है; वह अपने दाहिने हाथ की उद्धार करने वाली शक्ति से अपने पवित्र स्वर्ग से उसकी प्रार्थना सुनेगा।
7 किसी को रथों पर, और किसी को घोड़ों पर भरोसा है; परन्तु हम तो अपने परमेश्वर यहोवा ही का नाम स्मरण रखेंगे।
8 वे तो गिराए गए और गिराए गए, परन्तु हम उठकर सीधे खड़े हैं।
9 हे यहोवा, बचा ले! जब हम पुकारें, तब राजा हमारी सुन ले!

अध्याय 21

1 (प्रधान संगीतकार के लिए, दाऊद का एक भजन।) हे यहोवा, राजा तेरी सामर्थ्य से आनन्दित होगा; और तेरे उद्धार से वह अति आनन्दित होगा!
2 तू ने उसके मन की इच्छा पूरी की है, और उसके मुंह की बिनती को तू ने अस्वीकार नहीं किया है।
3 क्योंकि तू ने उसको भलाई की आशीषों से रोका है; तू ने उसके सिर पर शुद्ध सोने का मुकुट रखा है।
4 उसने तुझ से जीवन मांगा और तू ने उसे जीवन दिया, अर्थात युगानुयुग की आयु दी।
5 तेरे उद्धार से उसकी महिमा बड़ी हुई है; तू ने उस पर आदर और वैभव रखा है।
6 क्योंकि तू ने उसको सर्वदा के लिये धन्य ठहराया है; तू ने उसको अपने मुख से अत्यन्त आनन्दित किया है।
7 क्योंकि राजा यहोवा पर भरोसा रखता है, और परमप्रधान की करुणा के कारण वह कभी नहीं टलता।
8 तेरा हाथ तेरे सब शत्रुओं को ढूंढ़ निकालेगा; तेरा दहिना हाथ तेरे बैरियों को ढूंढ़ निकालेगा।
9 तू अपने क्रोध के समय उन्हें धधकती भट्टी के समान बना देगा; यहोवा अपने क्रोध में उन्हें निगल जाएगा, और आग उन्हें भस्म कर देगी।
10 तू उनके फलों को पृथ्वी पर से, और उनके वंश को मनुष्यों में से नाश कर देगा।
11 क्योंकि उन्होंने तेरे विरुद्ध बुरी युक्ति निकाली है, और ऐसी युक्ति निकाली है, जिसे वे पूरी करने में समर्थ नहीं हैं।
12 इस कारण जब तू अपने तीरों को उनके विरुद्ध तैयार करके उनकी ओर खींचेगा, तब उनको पीठ फेरने देगा।
13 हे यहोवा, तू अपने बल से महान हो; हम तेरे पराक्रम का गुणगान गाकर उसकी स्तुति करेंगे।

अध्याय 22

1 (अय्येलेतशाहर के मुख्य संगीतकार के लिए, दाऊद का एक भजन।) हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे परमेश्वर, तूने मुझे क्यों त्याग दिया? तू मेरी सहायता करने से और मेरे गरजने के वचनों से क्यों दूर है?
2 हे मेरे परमेश्वर, मैं दिन को पुकारता हूँ परन्तु तू नहीं सुनता; और रात को भी मैं चुप नहीं रहता।
3 परन्तु हे इस्राएल के स्तुतिस्थान में विराजनेवाले, तू तो पवित्र है।
4 हमारे पूर्वजों ने तुझ पर भरोसा रखा, उन्होंने भरोसा रखा और तूने उनको छुड़ाया।
5 वे तेरी दोहाई देते और छुड़ाए जाते; वे तुझ पर भरोसा रखते और लज्जित न होते।
6 परन्तु मैं तो कीड़ा हूं, मनुष्य नहीं; मनुष्यों में तो मेरी निन्दा होती है, और लोग मुझे तुच्छ समझते हैं।
7 जो मुझे देखते हैं वे सब मेरी हंसी उड़ाते हैं; वे होंठ फुलाकर और सिर हिलाकर कहते हैं,
8 उसने यहोवा पर भरोसा रखा कि वह उसे बचाएगा; वही उसे बचाए, क्योंकि वह उससे प्रसन्न है।
9 परन्तु तू ही वह है जिसने मुझे गर्भ से निकाला; जब मैं अपनी माता की छाती पर था, तब तू ने मुझे आशा दी।
10 मैं गर्भ ही से तुझ पर डाला गया; मेरी माता के गर्भ ही से तू मेरा परमेश्वर है।
11 मुझ से दूर मत रहो, क्योंकि संकट निकट है, और कोई सहायक नहीं है।
12 बहुत से बैलों ने मुझे घेर लिया है; बाशान के बलवन्त बैलों ने मुझे चारों ओर से घेर लिया है।
13 वे मुझ पर ऐसे मुंह फैलाकर झपटते थे, जैसे कोई फाड़नेवाला और गरजनेवाला सिंह हो।
14 मैं जल के समान बह गया हूं, और मेरी सब हड्डियां उखड़ गई हैं; मेरा हृदय मोम के समान है; वह मेरी अंतड़ियों के बीच पिघल गया है।
15 मेरा बल ठीकरे के समान सूख गया है, और मेरी जीभ मेरे जबड़ों से चिपक गई है; और तू ने मुझे मृत्यु की धूल में मिला दिया है।
16 क्योंकि कुत्तों ने मुझे घेर लिया है; दुष्टों की मण्डली ने मुझे घेर लिया है; उन्होंने मेरे हाथ और मेरे पैर छेद दिए हैं।
17 मैं अपनी सब हड्डियाँ खोल सकता हूँ, वे मुझे देखती और घूरती हैं।
18 वे मेरे वस्त्र आपस में बाँट लेते हैं, और मेरे वस्त्र पर चिट्ठी डालते हैं।
19 परन्तु हे यहोवा, तू मुझ से दूर न हो; हे मेरे बल, मेरी सहायता के लिये शीघ्र आ!
20 मेरे प्राण को तलवार से बचा ले, मेरे प्रिय को कुत्ते के पंजे से बचा ले।
21 मुझे सिंह के मुंह से बचा, क्योंकि तू ने मेरी बात एक सींग वाले साँप के सींगों से सुनी है।
22 मैं तेरा नाम अपने भाइयों के साम्हने घोषित करूंगा, सभा के बीच में मैं तेरी स्तुति करूंगा।
23 हे यहोवा के डरवैयों, उसकी स्तुति करो; हे याकूब के सब वंश, उसकी महिमा करो; हे इस्राएल के सब वंश, उसका भय मानो।
24 क्योंकि उसने दुखी को तुच्छ नहीं जाना और न उससे घृणा की, और न उससे अपना मुख छिपाया; परन्तु जब उसने उसकी दोहाई दी, तब उसने उसकी सुनी।
25 मैं बड़ी सभा में तेरी स्तुति करूंगा; मैं उसके डरवैयों के साम्हने अपनी मन्नतें पूरी करूंगा।
26 नम्र लोग भोजन करके तृप्त होंगे; यहोवा के खोजी उसकी स्तुति करेंगे; तुम्हारा हृदय सर्वदा जीवित रहेगा।
27 जगत के दूर दूर देशों के लोग यहोवा को स्मरण करेंगे और उसकी ओर फिरेंगे; और जाति जाति के सब कुल तेरे साम्हने दण्डवत् करेंगे।
28 क्योंकि राज्य यहोवा का है, और वह जातियों पर प्रभुता करता है।
29 पृथ्वी पर जितने मोटे-ताजे हैं वे सब खाकर दण्डवत् करेंगे; जितने मिट्टी में मिल जाते हैं वे सब उसके साम्हने दण्डवत् करेंगे; और कोई अपने प्राण को जीवित न रख सकेगा।
30 एक वंश उसकी सेवा करेगा; वह पीढ़ी पीढ़ी तक यहोवा के लिये गिना जाएगा।
31 वे आकर एक उत्पन्न होनेवाली जाति पर उसके धर्म का समाचार देंगे, कि उस ने यह काम किया है।

अध्याय 23

1 (दाऊद का एक भजन) यहोवा मेरा चरवाहा है; मुझे कुछ घटी न होगी।
2 वह मुझे हरी हरी चराइयों में बैठाता है; वह मुझे सुखदाई जल के पास ले चलता है।
3 वह मेरे प्राण को बहाल करता है; वह अपने नाम के निमित्त मुझे धर्म के पथों में ले चलता है।
4 चाहे मैं घोर अन्धकार से भरी हुई तराई में होकर चलूं, तौभी हानि से न डरूंगा, क्योंकि तू मेरे संग रहता है; तेरी लाठी और तेरी लाठी से मुझे शान्ति मिलती है।
5 तू मेरे शत्रुओं के साम्हने मेरे लिये मेज़ तैयार करता है; तू मेरे सिर पर तेल मला है; मेरा कटोरा उमण्ड रहा है।
6 निश्चय भलाई और करूणा जीवन भर मेरे साथ साथ बनी रहेंगी, और मैं यहोवा के धाम में सर्वदा वास करूंगा।

अध्याय 24

1 (दाऊद का एक भजन) पृथ्वी और जो कुछ उस पर है, वह यहोवा का है; जगत और उस में रहनेवाले भी यहोवा के हैं।
2 क्योंकि उसने उसकी नींव समुद्र पर रखी है, और उसे बाढ़ों पर स्थिर किया है।
3 यहोवा के पर्वत पर कौन चढ़ेगा, और उसके पवित्र स्थान में कौन खड़ा होगा?
4 जिसके काम निर्दोष और हृदय शुद्ध हो, जिसने अपने मन को व्यर्थ बातों की ओर न लगाया हो, और न कपट से शपथ खाई हो।
5 वह यहोवा से आशीष पाएगा, और अपने उद्धारकर्त्ता परमेश्वर से धर्म पाएगा।
6 हे याकूब, ये उन लोगों की पीढ़ी है जो उसके खोजी हैं, हे याकूब, तेरे दर्शन के खोजी हैं।
7 हे फाटकों, अपने सिर ऊंचे करो; हे सनातन द्वारों, ऊंचे हो जाओ; तब महिमा का राजा भीतर आएगा।
8 यह महिमावान राजा कौन है? यहोवा जो सामर्थी और पराक्रमी है, यहोवा जो युद्ध में पराक्रमी है!
9 हे फाटकों, अपने सिर ऊंचे करो; हे सनातन द्वारों, अपने सिर ऊंचे करो; तब महिमा का राजा भीतर आएगा।

10 यह महिमावान राजा कौन है? सेनाओं का यहोवा, वह महिमावान राजा है। सेला।

अध्याय 25

1 (दाऊद का एक भजन) हे यहोवा, मैं अपना मन तेरी ओर लगाता हूं।
2 हे मेरे परमेश्वर, मैं तुझ पर भरोसा रखता हूं; मुझे लज्जित न होने दे, और मेरे शत्रु मुझ पर जयवन्त न होने दे।
3 जो तेरे भरोसे रहते हैं, उन में से कोई भी लज्जित न हो; जो अकारण अपराध करते हैं, वे भी लज्जित हों।
4 हे यहोवा, अपने मार्ग मुझे दिखा; अपने पथ मुझे बता दे।
5 मुझे अपने सत्य पर ले चलो, और शिक्षा दे; क्योंकि तू ही मेरा उद्धार करने वाला परमेश्वर है; मैं दिन भर तेरी ही बाट जोहता रहता हूँ।
6 हे यहोवा, अपनी दया और करूणा को स्मरण कर, क्योंकि वे तो अनादि काल से हैं।
7 हे यहोवा, मेरी जवानी के पापों और मेरे अपराधों को स्मरण न कर; अपनी भलाई के कारण अपनी करुणा के अनुसार मुझे स्मरण कर।
8 यहोवा भला और सीधा है, इसलिये वह पापियों को भी अपना मार्ग दिखलाएगा।
9 वह नम्र लोगों को न्याय में अगुवाई देगा, और नम्र लोगों को अपना मार्ग दिखलाएगा।
10 जो यहोवा की वाचा और चितौनियों को मानते हैं, उनके लिये उसके सब मार्ग करूणा और सच्चाई से भरे हुए हैं।
11 हे यहोवा, अपने नाम के निमित्त मेरे अधर्म को जो बहुत है क्षमा कर।
12 वह कौन मनुष्य है जो यहोवा का भय मानता है? उसको वह अपनी इच्छा के अनुसार मार्ग दिखाएगा।
13 उसका प्राण सुख से रहेगा, और उसका वंश पृथ्वी का अधिकारी होगा।
14 यहोवा का भेद उसके डरवैयों पर रहता है; और वह अपनी वाचा उन पर प्रगट करेगा।
15 मेरी आंखें सदैव यहोवा की ओर लगी रहती हैं, क्योंकि वही मेरे पांवों को जाल से छुड़ाएगा।
16 मेरी ओर फिरो और मुझ पर दया करो; क्योंकि मैं उजाड़ और दुर्दशा में पड़ा हूं।
17 मेरे हृदय का क्लेश बढ़ गया है; हे मेरे संकटों से मुझे निकाल ले!
18 मेरे दुख और पीड़ा पर दृष्टि कर, और मेरे सब पापों को क्षमा कर।
19 मेरे शत्रुओं पर ध्यान दो; क्योंकि वे बहुत हैं; और वे मुझ से बड़ी क्रूरता से बैर रखते हैं।
20 हे मेरे प्राण की रक्षा कर, और मुझे छुड़ा; मुझे लज्जित न होने दे, क्योंकि मैं ने तुझी पर भरोसा रखा है।
21 सच्चाई और सीधाई मेरी रक्षा करें, क्योंकि मैं तेरी ही बाट जोहता हूं।
22 हे परमेश्वर, इस्राएल को उसके सब संकटों से छुड़ा ले।

अध्याय 26

1 (दाऊद का एक भजन) हे यहोवा, मेरा न्याय कर; क्योंकि मैं खराई से चलता आया हूं; मैं ने यहोवा पर भरोसा रखा है; इसलिये मैं न डगमगाऊंगा।
2 हे यहोवा, मुझे परख और जांच; मेरे हृदय और मन को परख!
3 क्योंकि तेरी करूणा मेरी आंखों के साम्हने बनी है, और मैं तेरे सत्य मार्ग पर चलता आया हूं।
4 मैं न तो व्यर्थ लोगों की संगति में बैठा हूं, और न कपटियों की संगति में जाऊंगा।
5 मैं कुकर्मियों की संगति से घृणा करता हूं, और दुष्टों के संग न बैठूंगा।
6 मैं अपने हाथों को निर्दोषता से धोऊंगा; इसलिए मैं तेरी वेदी के चारों ओर घूमूंगा, हे यहोवा,
7 जिस से मैं ऊंचे स्वर से धन्यवाद करूं, और तेरे सब आश्चर्यकर्मों का वर्णन करूं।
8 हे यहोवा, मैं तेरे भवन से, और तेरे महिमामय निवासस्थान से प्रेम रखता हूं।
9 मेरे प्राण को पापियों के साथ, और मेरे प्राण को हत्यारों के साथ मत मिलाओ।
10 उनके हाथ दुष्टता से भरे हैं, और उनका दाहिना हाथ घूस से भरा है।
11 परन्तु मैं तो खराई से चलता रहूंगा; मुझे छुड़ा ले, और मुझ पर अनुग्रह कर।
12 मेरे पांव चौरस स्थान में स्थिर हैं; मैं सभाओं में यहोवा को धन्य कहूंगा।

अध्याय 27

1 (दाऊद का एक भजन) यहोवा मेरी ज्योति और मेरा उद्धार है; मैं किस से डरूं? यहोवा मेरे जीवन का दृढ़ गढ़ है; मैं किस से डरूं?
2 जब दुष्ट लोग जो मेरे शत्रु और मेरे बैरी हैं, मेरा मांस खाने के लिये मुझ पर चढ़ आए, तब वे ठोकर खाकर गिर पड़े।
3 चाहे सेना भी मेरे विरुद्ध छावनी डाले, तौभी मैं न डरूंगा; चाहे युद्ध भी मेरे विरुद्ध आए, तौभी मैं निडर रहूंगा।
4 एक वर मैं ने यहोवा से मांगा है, उसी के यत्न में लगा रहूंगा; कि मैं जीवन भर यहोवा के भवन में रहने पाऊं, जिस से यहोवा की मनोहरता पर दृष्टि लगाए रहूं, और उसके मन्दिर में ध्यान किया करूं।
5 क्योंकि संकट के समय वह मुझे अपने मण्डप में छिपा लेगा; अपने तम्बू के गुप्त स्थान में वह मुझे छिपा लेगा; वह मुझे चट्टान पर स्थापित करेगा।
6 और अब मेरा सिर मेरे चारों ओर के शत्रुओं से ऊंचा होगा; इस कारण मैं उसके तम्बू में जयजयकार के बलिदान चढ़ाऊंगा; मैं यहोवा का भजन गाऊंगा, हां, मैं उसका भजन गाऊंगा।
7 हे यहोवा, जब मैं चिल्लाता हूं, तब तू सुन ले; मुझ पर दया कर, और मुझे उत्तर दे।
8 जब तू ने कहा, कि मेरे दर्शन के खोजी हो, तब मेरे मन ने तुझ से कहा, कि हे यहोवा, मैं तेरे दर्शन का खोजी होऊंगा।
9 अपना मुख मुझ से दूर न कर; अपने दास को क्रोध में आकर दूर न कर; तू ही मेरा सहायक है; हे मेरे उद्धार करनेवाले परमेश्वर, मुझे न छोड़, और न त्याग।

10 जब मेरे पिता और मेरी माता मुझे छोड़ देंगे, तब यहोवा मुझे सम्भाल लेगा।
11 हे यहोवा, अपने मार्ग की शिक्षा मुझे दे, और मेरे शत्रुओं के कारण मुझ को चौरस मार्ग पर ले चल।
12 मुझे मेरे शत्रुओं की इच्छा पर न छोड़, क्योंकि झूठे साक्षी और उपद्रव की धुन में मेरे विरुद्ध उठे हैं।
13 यदि मैं जीवितों की भूमि में यहोवा की भलाई को देखने का विश्वास न करता, तो मैं बेहोश हो जाता।
14 यहोवा की बाट जोहता रह; हियाव बान्ध, वह तेरा मन दृढ़ करेगा। मैं कहता हूं, यहोवा की बाट जोहता रह।

अध्याय 28

1 (दाऊद का एक भजन।) हे यहोवा, मेरी चट्टान, मैं तेरी दोहाई देता हूं; तू मेरी ओर से चुप न रह; कहीं ऐसा न हो कि यदि तू मेरी ओर से चुप रहे, तो मैं कबर में पड़े हुओं के समान हो जाऊं।
2 जब मैं तेरी दोहाई दूं, और तेरे पवित्रास्थान की ओर हाथ फैलाकर प्रार्थना करूं, तब मेरी प्रार्थना की ध्वनि सुन।
3 मुझे दुष्टों और अनर्थकारियों के संग न ले चलो, जो अपने पड़ोसियों से तो शान्ति की बातें बोलते हैं, परन्तु उनके मन में बुराई रहती है।
4 उनके कामों के अनुसार और उनके बुरे कामों के अनुसार उनको फल दे; उनके कामों के अनुसार उनको फल दे; उनका बदला उनको दे।
5 क्योंकि वे यहोवा के कामों पर और उसके हाथों के काम पर ध्यान नहीं देते, इसलिये वह उन्हें नाश करेगा, और उनका निर्माण नहीं करेगा।
6 यहोवा धन्य है, क्योंकि उसने मेरी प्रार्थना सुनी है।
7 यहोवा मेरा बल और मेरी ढाल है; उस पर भरोसा रखने से मेरे मन को सहायता मिली है; इसलिये मेरा मन आनन्दित है, और मैं गीत गाकर उसकी स्तुति करूंगा।
8 यहोवा उनका बल है, और वह अपने अभिषिक्त का उद्धारकर्त्ता है।
9 अपनी प्रजा का उद्धार कर, और अपने निज भाग को आशीष दे; उनको चरा, और सदा सर्वदा उन को बढ़ा।

अध्याय 29

1 (दाऊद का एक भजन।) हे पराक्रमियों, यहोवा को दो, यहोवा को महिमा और सामर्थ्य दो।
2 यहोवा के नाम की महिमा करो; पवित्रता से शोभायमान होकर यहोवा को दण्डवत् करो।
3 यहोवा की वाणी जल पर है; महिमामय परमेश्वर गरजता है; यहोवा बहुत से जल के ऊपर है।
4 यहोवा की वाणी शक्तिशाली है; यहोवा की वाणी प्रताप से भरी हुई है।
5 यहोवा की वाणी देवदारों को तोड़ डालती है; यहोवा लबानोन के देवदारों को भी तोड़ डालता है।
6 वह उनको बछड़े की नाईं, और लबानोन और शिर्योन को जवान गेंडे के समान उछलने देता है।
7 यहोवा की वाणी आग की लपटों को चीरती है।
8 यहोवा की वाणी जंगल को हिला देती है; यहोवा कादेश के जंगल को भी हिला देता है।
9 यहोवा की वाणी हिरनों को ब्याने के लिये प्रेरित करती है, और वन को खोज निकालती है; और उसके मन्दिर में सब लोग उसकी महिमा का बखान करते हैं।
10 यहोवा जलप्रलय पर विराजमान है; यहोवा सदा राजा बना रहता है।
11 यहोवा अपनी प्रजा को बल देगा; यहोवा अपनी प्रजा को शान्ति की आशीष देगा।

अध्याय 30

1 (दाऊद के घराने के समर्पण पर एक भजन और गीत।) हे यहोवा, मैं तुझे सराहूंगा; क्योंकि तू ने मुझे ऊंचा किया है, और मेरे शत्रुओं को मुझ पर आनन्द करने नहीं दिया।
2 हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मैं ने तेरी दोहाई दी, और तू ने मुझे चंगा किया है।
3 हे यहोवा, तू ने मेरे प्राण को अधोलोक में से निकाला है; तू ने मुझे जिलाया है, कि मैं अधोलोक में न जाऊं।
4 हे यहोवा के भक्तों, उसका भजन गाओ, और उसकी पवित्रता का स्मरण करके धन्यवाद करो।
5 क्योंकि उसका क्रोध पल भर का होता है, परन्तु उसकी प्रसन्नता ही जीवन है। रात भर रोना पड़ता है, परन्तु सबेरे आनन्द आता है।
6 और जब मैं सुखी था, तब मैं ने कहा था, मैं कभी न डगमगाऊंगा।
7 हे यहोवा, तू ने अपनी कृपा से मेरे पर्वत को दृढ़ किया है; तू ने अपना मुख छिपा लिया, और मैं घबरा गया।
8 हे यहोवा, मैं ने तेरी दोहाई दी, और यहोवा से गिड़गिड़ाकर बिनती की है।
9 जब मैं क़ब्र में जाऊँगा, तो मेरे ख़ून से क्या फ़ायदा? क्या धूल तेरी तारीफ़ करेगी? क्या वह तेरी सच्चाई बयान करेगी?
10 हे यहोवा, सुन और मुझ पर दया कर! हे यहोवा, तू मेरा सहायक हो!
11 तू ने मेरे विलाप को नृत्य में बदल दिया है; तू ने मेरा टाट उतार कर मुझे आनन्द की कमर बान्ध दी है;
12 ताकि मेरी महिमा तेरा भजन गाए, और चुप न रहे। हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मैं सदा तेरा धन्यवाद करता रहूंगा।

अध्याय 31

1 (प्रधान संगीतकार के लिए, दाऊद का एक भजन।) हे यहोवा, मैं तुझी पर भरोसा रखता हूं; मुझे कभी लज्जित न होने दे; अपनी धार्मिकता के द्वारा मुझे छुड़ा।
2 अपना कान मेरी ओर लगा; मुझे तुरन्त छुड़ा! तू मेरा दृढ़ चट्टान बन, और मेरे बचाव के लिये गढ़ बन!
3 क्योंकि तू ही मेरी चट्टान और मेरा गढ़ है; इसलिये अपने नाम के निमित्त मेरी अगुवाई कर, और मुझे आगे ले चल।
4 जो जाल उन्होंने मेरे लिये बिछाया है, उससे मुझे छुड़ा ले, क्योंकि तू ही मेरा बल है।
5 मैं अपनी आत्मा तेरे हाथ में सौंपता हूं; हे यहोवा, हे सत्यवादी परमेश्वर, तू ने मुझे छुड़ाया है।
6 जो व्यर्थ बातों पर मन लगाते हैं, उन से मैं घृणा करता हूं; परन्तु मेरा भरोसा यहोवा पर है।

7 मैं तेरी करुणा से आनन्दित और मगन होऊंगा, क्योंकि तू ने मेरे क्लेश पर दृष्टि की है; तू ने संकट में मेरे प्राण की सुधि ली है;
8 और मुझे शत्रु के हाथ में नहीं पड़ने दिया; तू ने मेरे पांवों को बड़े स्थान में खड़ा किया है।
9 हे यहोवा, मुझ पर दया कर, क्योंकि मैं संकट में हूं; मेरी आंखें, वरन मेरा प्राण और मेरा पेट भी शोक से डूबे हुए हैं।
10 क्योंकि मेरा जीवन शोक के मारे और मेरी आयु कराहते कराहते घट गई है; मेरे अधर्म के कारण मेरा बल घट गया, और मेरी हड्डियां सड़ गई हैं।
11 मैं अपने सब शत्रुओं के बीच, और विशेष करके अपने पड़ोसियों के बीच में निन्दित था; और अपने जान-पहचानवालों के लिये भय का कारण था; जो मुझे बाहर देखते थे, वे मेरे पास से भाग जाते थे।
12 मैं मन से मुर्दे के समान भूला हुआ हूं; मैं टूटे हुए बर्तन के समान हूं।
13 क्योंकि मैं ने बहुतों से निन्दा सुनी है, चारों ओर भय है; और वे मेरे विरुद्ध सम्मति करके मेरे प्राण लेने की युक्ति करते हैं।
14 परन्तु हे यहोवा, मैं ने तुझी पर भरोसा रखा है; मैं ने कहा, तू ही मेरा परमेश्वर है।
15 मेरे दिन तेरे हाथ में हैं; तू मुझे मेरे शत्रुओं के हाथ से, और मेरे सतानेवालों से बचा।
16 अपने दास पर अपने मुख का प्रकाश चमका; अपनी दया के कारण मेरा उद्धार कर।
17 हे यहोवा, मुझे लज्जित न होने दे, क्योंकि मैं ने तुझे पुकारा है; दुष्ट लोग लज्जित हों, और अधोलोक में चुपचाप रहें।
18 जो लोग घमण्ड और अपमान से धर्मी के विरुद्ध बुरी बातें बोलते हैं, उनके झूठ बोलने वाले होठ बन्द किए जाएं।
19 आहा, तेरी भलाई कैसी बड़ी है जो तू ने अपने डरवैयों के लिये रख छोड़ी है, और अपने भरोसा रखनेवालों के लिये मनुष्यों के साम्हने प्रगट की है!
20 तू उनको मनुष्यों के घमण्ड से अपने गुप्त स्थान में छिपा रखेगा; तू उनको मण्डप में भाषा विवाद से गुप्त रखेगा।
21 यहोवा धन्य है, क्योंकि उसने मुझ पर दृढ़ नगर बनाकर अपनी अद्भुत करूणा दिखाई है।
22 क्योंकि मैं ने जल्दबाजी में कहा था, कि मैं तेरी आंखों के साम्हने से दूर हो गया हूं; तौभी जब मैं ने तेरी दोहाई दी, तब तू ने मेरी गिड़गिड़ाहट को सुन लिया।
23 हे यहोवा के सब भक्तों, उससे प्रेम रखो! क्योंकि यहोवा सच्चे लोगों की रक्षा करता है, और घमण्ड करनेवालों को बड़ा फल देता है।
24 हे यहोवा पर आशा रखनेवालो, हियाव बान्धो, वह तुम्हारा हृदय दृढ़ करेगा।

अध्याय 32

1 (दाऊद का एक भजन, मस्किल) धन्य है वह जिसका अपराध क्षमा किया गया, जिसका पाप ढँका गया है।
2 धन्य है वह मनुष्य जिसके अधर्म का यहोवा लेखा न ले, और जिसकी आत्मा में कपट न हो।
3 जब मैं चुप रहा, तो दिन भर चिल्लाते-चिल्लाते मेरी हड्डियाँ बूढ़ी हो गईं।
4 क्योंकि दिन-रात तेरा हाथ मुझ पर भारी रहा; मेरी नमी धूपकाल की सूखी हो गई है। सेला।
5 मैं ने अपना पाप तेरे साम्हने मान लिया, और अपना अधर्म न छिपाया। मैं ने कहा, मैं यहोवा के साम्हने अपने अपराधों को मान लूंगा; और तू ने मेरे अधर्म और पाप को क्षमा कर दिया। सेला।
6 क्योंकि हर एक भक्त तुझ से ऐसे समय में प्रार्थना करेगा जब तू मिल सकता है; निश्चय जब बड़ी बाढ़ आए तब भी वे उसके समीप न आएंगे।
7 तू ही मेरा शरणस्थान है; तू संकट से मेरी रक्षा करेगा; तू छुटकारे के गीतों से मुझे घेर लेगा। सेला।
8 मैं तुझे बुद्धि दूंगा, और जिस मार्ग पर तुझे चलना होगा उस में तेरी अगुवाई करूंगा; मैं अपनी कृपादृष्टि से तुझे मार्ग दिखाऊंगा।
9 तुम घोड़े और खच्चर के समान मत बनो जो समझ नहीं रखते, उनके मुंह को लगाम और बाग से बन्द करना पड़ता है, ऐसा न हो कि वे तुम्हारे पास आ सकें।
10 दुष्टों को बहुत दुख होगा, परन्तु जो यहोवा पर भरोसा रखता है, करूणा उस को घेरे रहेगी।
11 हे धर्मियो, यहोवा के कारण आनन्दित और मगन हो; हे सब सीधे मनवालो, जयजयकार करो!

अध्याय 33

1 हे धर्मियो, यहोवा के कारण आनन्दित हो, क्योंकि सीधे लोगों के लिये स्तुति सोहती है।
2 वीणा बजाकर यहोवा की स्तुति करो; सारंगी और दस तार वाले बाजे बजाकर उसका भजन गाओ।
3 उसके लिये नया गीत गाओ; ऊंचे शब्द से बजाओ।
4 क्योंकि यहोवा का वचन सीधा है, और उसके सब काम सच्चाई से होते हैं।
5 वह धर्म और न्याय से प्रेम रखता है; पृथ्वी यहोवा की भलाई से भरपूर है।
6 आकाशमण्डल यहोवा के वचन से, और उसके सारे गण उसके मुंह की फूंक से बने।
7 वह समुद्र का जल ढेर के समान इकट्ठा करता है, और गहिरे सागर को भण्डारों में इकट्ठा करता है।
8 सारी पृथ्वी के लोग यहोवा का भय मानें; जगत के सब निवासी उसका भय मानें।
9 क्योंकि जब उसने कहा, तब हो गया; जब उसने आज्ञा दी, तब वैसा ही हुआ।
10 यहोवा अन्यजातियों की युक्ति को व्यर्थ कर देता है; वह देश देश के लोगों की युक्तियों को निष्फल कर देता है।
11 यहोवा की युक्ति सदैव स्थिर रहती है, उसके मन की कल्पनाएं पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती हैं।
12 धन्य है वह जाति जिसका परमेश्वर यहोवा है, और वह प्रजा जिसे उसने अपना निज भाग होने के लिये चुन लिया है।
13 यहोवा स्वर्ग से दृष्टि करता है; वह सब मनुष्यों को देखता है।
14 वह अपने निवास स्थान से पृथ्वी के सब रहनेवालों को देखता है।
15 वह उनके हृदयों को एक समान बनाता है; वह उनके सब कामों पर विचार करता है।
16 कोई राजा सेना की बहुतायत के कारण नहीं बचता; कोई वीर बहुत बल के कारण नहीं बचता।
17 घोड़ा सुरक्षा के लिये व्यर्थ वस्तु है, वह अपने बड़े बल से किसी को नहीं बचा सकता।

18 देखो, यहोवा की दृष्टि उसके डरवैयों पर और उसकी करूणा
की आशा रखने वालों पर बनी रहती है;
19 कि उनके प्राणों को मृत्यु से बचाए, और अकाल में उन्हें
जीवित रखे।
20 हमारा प्राण यहोवा पर आशा लगाए है; वही हमारा सहायक
और हमारी ढाल है।
21 क्योंकि हमारा हृदय उसके कारण आनन्दित होगा, क्योंकि
हमने उसके पवित्र नाम पर भरोसा रखा है।
22 हे यहोवा, जैसी हमारी आशा तुझ पर है, वैसी ही तेरी करूणा
भी हम पर हो।

अध्याय 34

1 (दाऊद का एक भजन, जब उसने अबीमेलेक के सामने अपना
व्यवहार बदल दिया; जिसने उसे दूर कर दिया, और वह चला
गया।) मैं हर समय यहोवा को धन्य कहूंगा: उसकी स्तुति लगातार
मेरे मुंह से होगी।
2 मेरा मन यहोवा पर घमण्ड करेगा; नम्र लोग यह सुनकर
आनन्दित होंगे।
3 मेरे साथ यहोवा की बड़ाई करो, और आओ हम मिलकर
उसके नाम की स्तुति करें।
4 मैं यहोवा के पास गया, और उसने मेरी सुन ली, और मुझे मेरे
सारे भय से छुड़ाया।
5 उन्होंने उसकी ओर दृष्टि की और उनके मुख प्रकाशित हो गए,
और उनके मुख लज्जित न हुए।
6 उस दीन जन ने दोहाई दी, और यहोवा ने उसकी सुन ली, और
उसको उसके सब संकटों से छुड़ाया।
7 यहोवा का दूत उसके डरवैयों के चारों ओर छावनी किए हुए
उनको बचाता है।
8 परखकर देखो कि यहोवा कैसा भला है! क्या ही धन्य है वह
मनुष्य जो उस पर भरोसा रखता है!
9 हे यहोवा के भक्तों, उसका भय मानो! क्योंकि उसके डरवैयों
को किसी वस्तु की घटी नहीं होती।
10 जवान सिंह तो घटी करते और भूखे भी रहते हैं; परन्तु जो
यहोवा के खोजी हैं, उनको किसी भली वस्तु की घटी न होगी।
11 हे बालकों, आओ, मेरी सुनो; मैं तुम्हें यहोवा का भय मानना
सिखाऊंगा।
12 वह कौन मनुष्य है जो जीवन की इच्छा रखता है, और दीर्घायु
चाहता है, कि भलाई देखे?
13 अपनी जीभ को बुराई से रोक रख, और अपने होठों को छल
की बातें बोलने से रोक रख।
14 बुराई को छोड़ और भलाई कर; मेल को ढूंढ़ और उसके पीछे
चल।
15 यहोवा की आंखें धर्मियों पर लगी रहती हैं, और उसके कान
उनकी दोहाई की ओर लगे रहते हैं।
16 यहोवा बुराई करनेवालों के विमुख रहता है, ताकि उनका
स्मरण पृथ्वी पर से मिटा डाले।
17 धर्मी दोहाई देते हैं और यहोवा सुनता है, और उन्हें सब
विपत्तियों से छुड़ाता है।
18 यहोवा टूटे मनवालों के समीप रहता है, और खेदित मनवालों
का उद्धार करता है।
19 धर्मी पर बहुत सी विपत्तियाँ पड़ती हैं, परन्तु यहोवा उसको
उन सब से छुड़ाता है।
20 वह उसकी सब हड्डियों की रक्षा करता है, उन में से एक भी
टूटी नहीं।
21 दुष्टों को बुराई मार डालेगी, और धर्मी से बैर रखनेवाले नाश
हो जाएंगे।
22 यहोवा अपने दासों के प्राण को बचा लेता है, और जो उस पर
भरोसा रखते हैं उन में से कोई भी निराश न होगा।

अध्याय 35

1 (दाऊद का एक भजन।) हे यहोवा, मेरे साथ झगड़ने वालों के
साथ मेरा मुक़दमा लड़; जो मेरे विरुद्ध लड़ते हैं, उनसे युद्ध कर।
2 ढाल और फरसा लेकर मेरी सहायता के लिये खड़ा हो।
3 और भाला खींचकर मेरे सतानेवालों का मार्ग रोक दे; और मेरे
प्राण से कह, कि तेरा उद्धार मैं हूं।
4 जो मेरे प्राण के खोजी हैं वे लज्जित और निराश हों; जो मेरी
हानि की युक्ति करते हैं वे पीछे हट जाएं और लज्जित हों।
5 वे वायु से उड़ाई जाने वाली भूसी के समान हो जाएं, और
यहोवा का दूत उन्हें भगा दे।
6 उनका मार्ग अन्धकारमय और फिसलन भरा हो, और यहोवा
का दूत उनका पीछा करे।
7 क्योंकि उन्होंने अकारण मेरे लिये अपना जाल गड़हा खोदा है,
जो उन्होंने अकारण मेरे प्राण के लिये खोदा है।
8 उस पर अचानक विनाश आ पड़े, और उसका जाल जो उसने
लगाया है, उसी में फँस जाए; वह उसी विनाश में गिर जाए।
9 और मेरा प्राण यहोवा के कारण आनन्दित होगा, वह उसके
उद्धार से मगन होगा।
10 मेरी सब हड्डियां कहेंगी, हे यहोवा, तेरे तुल्य कौन है जो कंगाल
को बलवन्त से, और दरिद्र और दरिद्र को लूटनेवाले से बचाता है?
11 झूठे साक्षी खड़े हुए, और मुझ पर ऐसी बातें आरोपित कीं,
जिन्हें मैं नहीं जानता था।
12 उन्होंने भलाई के बदले मुझ से बुराई की, जिस से मेरा प्राण
नाश हो गया।
13 परन्तु जब वे रोगी थे, तब मैं टाट पहिने रहा; मैं ने उपवास कर
के अपने प्राण को दीन किया, और मेरी प्रार्थना मेरे हृदय में लौट
आई।
14 मैं ने ऐसा व्यवहार किया मानो वह मेरा मित्र या भाई हो; मैं ने
ऐसा सिर झुकाया, मानो कोई अपनी माता के लिये विलाप करता
हो।
15 परन्तु जब मैं विपत्ति में पड़ा, तब वे आनन्दित होकर इकट्ठे
हुए; और दीन लोग मेरे विरुद्ध इकट्ठे हुए, और मैं ने न जाना; और
उन्होंने मुझे फाड़ डाला, और न रोका।
16 वे भोजों में कपटपूर्ण ठट्ठा करनेवालों के साथ मुझ पर दांत
पीसते थे।
17 हे प्रभु, तू कब तक देखता रहेगा? हे मेरे प्रिय, मेरे प्राण को
उनके विनाश से बचा ले, हे सिंहों से।
18 मैं बड़ी सभा में तेरा धन्यवाद करूंगा, मैं बहुत से लोगों के
बीच में तेरी स्तुति करूंगा।
19 जो मेरे शत्रु हैं, वे मुझ पर आनन्द न करें, और जो अकारण
मुझ से बैर रखते हैं, वे मुझ पर आँख न मारें।
20 क्योंकि वे शान्ति की बातें नहीं बोलते, परन्तु देश में चैन से
रहनेवालों के विरुद्ध छल की युक्ति निकालते हैं।
21 हां, उन्होंने मेरे विरुद्ध मुंह फैलाकर कहा, अहा, अहा, हमारी
आंखों ने यह देखा है।

22 हे यहोवा, तू ने यह देखा है; चुप मत रह; हे यहोवा, मुझ से दूर मत रह।
23 हे मेरे परमेश्वर, हे मेरे प्रभु, उठ और मेरा न्याय करने के लिये और मेरा मुकद्दमा लड़ने के लिये जाग!
24 हे मेरे परमेश्वर यहोवा, अपने धर्म के अनुसार मेरा न्याय चुका; और वे मुझ पर आनन्द न करने पाएं।
25 वे अपने मन में यह न कहें, कि अहा! हम तो ऐसा ही चाहते थे; वे यह न कहें, कि हम ने उसे निगल लिया है।
26 जो मेरी हानि से आनन्दित होते हैं, वे सब लज्जित और घबरा जाएं; जो मेरे विरुद्ध बड़ाई मारते हैं, वे सब लज्जित और अनादर से वस्त्र पहिने रहें।
27 जो मेरे धर्म के काम पर प्रसन्न होते हैं, वे जयजयकार करें और आनन्दित हों; और निरन्तर कहते रहें, यहोवा की बड़ाई हो, जो अपने दास के कुशल से प्रसन्न होता है।
28 और मेरी जीभ दिन भर तेरे धर्म और तेरी स्तुति की चर्चा करेगी।

अध्याय 36

1 (प्रधान संगीतकार के लिए, यहोवा के दास दाऊद का एक भजन।) दुष्टों का अपराध मेरे हृदय के भीतर कहता है, कि उनकी आँखों के सामने परमेश्वर का कोई भय नहीं है।
2 क्योंकि वह अपनी दृष्टि में अपने आप को चापलूसी करता रहता है, यहां तक कि उसका अधर्म घृणित ठहरता है।
3 उसके मुंह की बातें अनर्थ और छल की हैं; उसने बुद्धिमान होना और भलाई करना छोड़ दिया है।
4 वह बिछौने पर पड़े पड़े बुराई की योजना बनाता है; वह बुरे मार्ग पर चलता है; वह बुराई से घृणा नहीं करता।
5 हे यहोवा, तेरी करूणा स्वर्ग में है, और तेरी सच्चाई आकाशमण्डल तक पहुंची है।
6 तेरा धर्म बड़े पहाड़ों के समान है; तेरे नियम बड़े गहिरे हैं; हे यहोवा, तू मनुष्य और पशु दोनों की रक्षा करता है।
7 हे परमेश्वर, तेरी करुणा कैसी उत्तम है! इसलिये मनुष्य तेरे पंखों के तले शरण लेते हैं।
8 वे तेरे भवन की उत्तम से उत्तम वस्तुओं से तृप्त होंगे, और तू उन्हें अपने सुख की नदी से पिलाएगा।
9 क्योंकि जीवन का सोता तेरे ही पास है; तेरे प्रकाश के द्वारा हम प्रकाश देखेंगे।
10 जो लोग तुझे जानते हैं उन पर अपनी करूणा और सीधे मनवालों पर अपना धर्म बनाए रख।
11 अभिमानी लोग मेरे विरुद्ध न आएं, और दुष्टों का हाथ मुझे दूर न ले जाए।
12 वहां अनर्थकारी गिर पड़े हैं, वे गिरा दिए गए हैं और फिर उठ नहीं सकते।

अध्याय 37

1 (दाऊद का एक भजन) कुकर्मियों के कारण मत कुढ़, और न कुटिल काम करनेवालों के विरुद्ध डाह कर।
2 क्योंकि वे घास की नाईं शीघ्र कट जाएंगे, और हरी घास की नाईं सूख जाएंगे।
3 यहोवा पर भरोसा रख, और भला कर; इस प्रकार तू उस देश में बसा रहेगा, और तृप्त रहेगा।
4 यहोवा को अपने सुख का मूल जान, और वह तेरे मनोरथों को पूरा करेगा।
5 अपने मार्ग की चिन्ता यहोवा पर छोड़; उस पर भरोसा रख, वही इसे पूरा करेगा।
6 और वह तेरा धर्म ज्योति के समान, और तेरा न्याय दोपहर के उजाले के समान प्रगट करेगा।
7 यहोवा पर भरोसा रखो, और धीरज से उसका इंतज़ार करो; जो अपने काम में सफल होता है, और जो बुरी युक्तियाँ निकालता है, उसके कारण मत कुढ़ो।
8 क्रोध से परे रहो, और जलजलाहट को त्याग दो; किसी भी प्रकार से बुराई करने की इच्छा मत करो।
9 क्योंकि कुकर्मी लोग काट डाले जाएंगे; परन्तु जो यहोवा की बाट जोहते हैं, वही पृथ्वी के अधिकारी होंगे।
10 क्योंकि थोड़े दिन के बीतने पर दुष्ट रहेगा ही नहीं; और तू उसके स्थान पर ध्यान देने पर भी उसे न पाएगा।
11 परन्तु नम्र लोग पृथ्वी के अधिकारी होंगे, और बड़ी शान्ति के कारण आनन्दित होंगे।
12 दुष्ट लोग धर्मी के विरुद्ध युक्ति करते हैं, और उस पर दांत पीसते हैं।
13 यहोवा उस पर हंसेगा, क्योंकि वह देखता है कि उसका दिन आ रहा है।
14 दुष्ट लोग तलवार खींचे और धनुष चढ़ाए हुए हैं, कि दीन दरिद्रों को गिरा दें, और सीधी चाल चलनेवालों को भी मार डालें।
15 उनकी तलवार उनके हृदय में घुस जाएगी, और उनके धनुष तोड़ दिए जाएंगे।
16 धर्मी के पास जो थोड़ा सा धन है, वह दुष्टों के बहुत से धन से उत्तम है।
17 क्योंकि दुष्टों की भुजाएं तोड़ दी जाएंगी, परन्तु यहोवा धर्मियों को सम्भालता है।
18 यहोवा धर्मी लोगों की आयु जानता है, और उनका भाग सदैव बना रहेगा।
19 बुरे समय में वे लज्जित न होंगे, और अकाल के दिनों में भी वे तृप्त रहेंगे।
20 परन्तु दुष्ट लोग नाश हो जाएंगे, और यहोवा के शत्रु मेमनों की चर्बी के समान हो जाएंगे; वे भस्म हो जाएंगे; वे धूएं में भस्म हो जाएंगे।
21 दुष्ट लोग उधार लेते हैं, और चुकाते नहीं; परन्तु धर्मी लोग दया करके दान देते हैं।
22 क्योंकि जो लोग उससे आशीर्वाद प्राप्त करते हैं वे पृथ्वी के अधिकारी होंगे, और जो लोग उससे शापित होते हैं वे नष्ट हो जायेंगे।
23 भले मनुष्य की गति यहोवा की ओर से दृढ़ होती है, और वह उसके चालचलन से प्रसन्न रहता है।
24 चाहे वह गिरे, तौभी वह पूरी रीति से गिरा न जाएगा, क्योंकि यहोवा उसे अपने हाथ से संभाले रहता है।
25 मैं लड़कपन से लेकर बुढ़ापे तक देखता आया हूँ; परन्तु न तो कभी धर्मी को त्यागा हुआ, और न उसके वंश को टुकड़े माँगते देखा है।
26 वह दयालु है और उधार देता है, और उसका वंश धन्य होता है।
27 बुराई को छोड़ो और भलाई करो; तब तुम सर्वदा जीवित रहोगे।

28 क्योंकि यहोवा न्याय से प्रीति रखता है, और अपने भक्तों को नहीं त्यागता; वे तो सर्वदा सुरक्षित रहते हैं; परन्तु दुष्टों का वंश नाश हो जाएगा।
29 धर्मी लोग देश के अधिकारी होंगे, और उस में सदा बसे रहेंगे।
30 धर्मी के मुँह से बुद्धि की बातें निकलती हैं, और उसकी जीभ से न्याय की बातें निकलती हैं।
31 उसके परमेश्वर की व्यवस्था उसके हृदय में बनी रहती है; उसके पैर कभी फिसलने नहीं पाते।
32 दुष्ट लोग धर्मी पर घात लगाकर उसे मार डालने का यत्न करते हैं।
33 यहोवा उसको उसके हाथ में न छोड़ेगा, और न न्याय के समय उसको दोषी ठहराएगा।
34 यहोवा की बाट जोहता रह, और उसके मार्ग पर बना रह, तब वह तुझे बढ़ाकर देश का अधिकारी करेगा; जब दुष्ट लोग नाश हो जाएंगे, तब तू देखेगा।
35 मैंने दुष्ट को बड़ी शक्ति से बढ़ते और हरे तेजपात के समान फैलते देखा है।
36 फिर वह चला गया, और देखो, वह वहां नहीं था; हां, मैं ने उसे ढूंढ़ा, परन्तु वह न मिला।
37 खरे मनुष्य पर ध्यान दो और धर्मी को देखो, क्योंकि उसका अन्त कल्याण है।
38 परन्तु अपराधी एक साथ नाश किए जाएंगे; दुष्टों का अन्त हो जाएगा।
39 परन्तु धर्मियों की मुक्ति यहोवा की ओर से होती है; संकट के समय वह उनका बल है।
40 और यहोवा उनकी सहायता करेगा, और उनको छुड़ाएगा; वह उन्हें दुष्टों से छुड़ाएगा, और बचाएगा, क्योंकि वे उस पर भरोसा रखते हैं।

अध्याय 38

1 (दाऊद का स्मरण दिलाने के लिए एक भजन।) हे यहोवा, क्रोध में मुझे मत डांट, और न क्रोध में आकर मुझे ताड़ना दे।
2 क्योंकि तेरे तीर मुझ में चुभ गए हैं, और तेरे हाथ ने मुझे दबा रखा है।
3 तेरे क्रोध के कारण मेरे शरीर में कुछ भी आरोग्यता नहीं, और न मेरे पाप के कारण मेरी हड्डियों में कुछ भी विश्राम है।
4 क्योंकि मेरे अधर्म के काम मेरे सिर पर भारी हो गए हैं; वे भारी बोझ के समान मेरे सहने से बाहर हो गए हैं।
5 मेरी मूर्खता के कारण मेरे घाव दुर्गन्ध से भरे हुए और सड़ गए हैं।
6 मैं व्याकुल हो गया हूं, मैं बहुत झुक गया हूं; मैं दिन भर विलाप करता रहता हूं।
7 क्योंकि मेरी कमर घृणित रोग से भरी है, और मेरे शरीर में कुछ भी आरोग्यता नहीं।
8 मैं दुर्बल और बहुत टूटा हुआ हूं; मैं अपने हृदय की बेचैनी के कारण चिल्लाता हूं।
9 हे प्रभु, मेरी सारी अभिलाषा तेरे सम्मुख है; और मेरा कराहना तुझ से छिपा नहीं है।
10 मेरा हृदय घबरा गया, मेरा बल जाता रहा; मेरी आंखों की ज्योति भी जाती रही।
11 मेरे मित्र और मित्र मेरे घाव से दूर खड़े रहते हैं; और मेरे कुटुम्बी दूर खड़े रहते हैं।
12 जो मेरे प्राण के खोजी हैं, वे मेरे लिये जाल बिछाते हैं; जो मेरी हानि के खोजी हैं, वे दुष्टता की बातें बोलते और दिन भर छल की कल्पना करते रहते हैं।
13 परन्तु मैं बहिरे के समान कुछ नहीं सुनता था; और मैं गूंगे के समान था जो अपना मुंह नहीं खोलता।
14 मैं ऐसे मनुष्य के समान था जो सुनता ही नहीं, और जिसके मुँह से कोई डांट नहीं निकलती।
15 क्योंकि हे यहोवा, मैं तुझी पर आशा रखता हूं; हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तू सुन लेगा।
16 क्योंकि मैं ने कहा, मेरी सुनो, कहीं ऐसा न हो कि वे मुझ पर आनन्द करें; जब मेरा पांव फिसलता है, तब वे मेरे विरुद्ध बड़ाई मारते हैं।
17 क्योंकि मैं तो रुकने पर हूं, और मेरा शोक निरन्तर मेरे साम्हने रहता है।
18 क्योंकि मैं अपना अधर्म प्रगट करूंगा, और अपने पाप पर पछताऊंगा।
19 परन्तु मेरे शत्रु बलवन्त और बलवन्त हो गए हैं, और जो मुझ से अधर्म से बैर रखते हैं, उनकी भी वृद्धि हो गई है।
20 जो भलाई के बदले बुराई करते हैं, वे मेरे विरोधी हैं; क्योंकि मैं भलाई का पीछा करता हूं।
21 हे यहोवा, मुझे न छोड़; हे मेरे परमेश्वर, मुझ से दूर न रह!
22 हे मेरे उद्धारकर्ता यहोवा, मेरी सहायता करने के लिये शीघ्रता कर!

अध्याय 39

1 (प्रधान गायक यदूतून से, दाऊद का एक भजन) मैंने कहा, मैं अपने चालचलन में सावधान रहूंगा, ऐसा न हो कि मैं अपनी जीभ से पाप करूं: जब तक दुष्ट मेरे साम्हने रहे, तब तक मैं अपने मुंह को लगाम लगाकर रोके रखूंगा।
2 मैं चुपचाप गूंगा हो गया, मैं ने भलाई से भी मुंह फेर लिया, और मेरा शोक बढ़ गया।
3 जब मैं सोच रहा था तो मेरा हृदय जल रहा था, और आग जल रही थी, तब मैंने अपनी जीभ से कहा,
4 हे यहोवा, मुझे मेरा अन्त मालूम करा दे, और मेरी आयु कितनी है, कि मैं जान लूं कि मैं कितना दुर्बल हूं।
5 देख, तू ने मेरे दिन एक अंगुल के बराबर कर दिए हैं; और मेरी आयु तेरे साम्हने कुछ भी नहीं है; सचमुच, हर एक मनुष्य अपनी सर्वोत्तम अवस्था में भी व्यर्थ ही है। सेला।
6 निश्चय वे सब व्यर्थ दिखावा करते हैं; निश्चय वे व्यर्थ ही व्याकुल होते हैं; वे धन इकट्ठा तो करते हैं, परन्तु नहीं जानते कि उसे कौन इकट्ठा करेगा।
7 अब हे प्रभु, मैं किस बात की बाट जोहूं? मेरी आशा तो तुझ पर है।
8 मेरे सब अपराधों से मुझे छुड़ा ले; मूर्खों की निन्दा का कारण मैं न बनूं।
9 मैं गूंगा हो गया, मैंने अपना मुंह नहीं खोला; क्योंकि यह काम तू ने किया।
10 अपना प्रहार मुझ पर से हटा ले; मैं तेरे हाथ की मार से भस्म हो गया हूं।
11 जब तू मनुष्य को अधर्म के कारण डांटता है, तब तू उसकी सुन्दरता को पतंगे की नाईं नाश कर देता है; निश्चय सब मनुष्य व्यर्थ हैं। सेला।

12 हे यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन, और मेरी दोहाई पर कान लगा; मेरे आंसू सुनकर चुप न रह; क्योंकि मैं तेरे संग परदेशी और प्रवासी हूं, जैसे मेरे सब पूर्वज थे।
13 हे मुझे छोड़ दे, कि मैं पुनःशक्ति प्राप्त कर लूं, इससे पहले कि मैं यहां से चला जाऊं और फिर न रहूं।

अध्याय 40

1 मैं धीरज से यहोवा की बाट जोहता रहा; और उसने मेरी ओर झुककर मेरी दोहाई सुनी।
2 उसने मुझे भयंकर गड़हे और दलदल में से निकाला, और मेरे पांव चट्टान पर खड़ा करके मेरे मार्ग को स्थिर किया।
3 और उसने मेरे मुंह में एक नया गीत डाला है, अर्थात हमारे परमेश्वर की स्तुति; बहुत से लोग इसे देखकर डरेंगे, और यहोवा पर भरोसा रखेंगे।
4 धन्य है वह मनुष्य जो यहोवा पर भरोसा करता है, और अभिमानियों और झूठ की ओर मुड़ने वालों पर दृष्टि नहीं करता।
5 हे मेरे परमेश्वर यहोवा! तू ने बहुत से काम किए हैं, और जो कल्पनाएं तू ने हमारे लिये की हैं, वे बहुत सी हैं; वे तेरे तुल्य नहीं हैं; यदि मैं उनका वर्णन करूं और उनकी चर्चा करूं, तो उनकी गिनती नहीं हो सकती।
6 बलिदान और भेंट की इच्छा तू ने नहीं की; तू ने मेरे कान खोले हैं; होमबलि और पापबलि की तू ने अपेक्षा नहीं की।
7 तब मैं ने कहा, देख, मैं आता हूं; पवित्र शास्त्र में मेरे विषय में लिखा है।
8 हे मेरे परमेश्वर, मैं तेरी इच्छा पूरी करने से प्रसन्न हूं; हां, तेरी व्यवस्था मेरे हृदय में बनी है।
9 मैं ने बड़ी सभा में धर्म का प्रचार किया है; देख, मैं ने अपने मुंह बंद नहीं किए, हे यहोवा, तू तो जानता है।
10 मैं ने तेरा धर्म अपने मन में नहीं छिपाया; मैं ने तेरी सच्चाई और तेरे उद्धार का वर्णन किया है; मैं ने तेरी करूणा और सच्चाई को बड़ी सभा से नहीं छिपाया।
11 हे यहोवा, अपनी दया मुझ पर से न हटा; तेरी करूणा और सच्चाई से मेरी रक्षा निरन्तर होती रहे।
12 क्योंकि मैं अनगिनत बुराइयों से घिरा हुआ हूँ; मेरे अधर्म के कामों ने मुझे ऐसा जकड़ लिया है कि मैं ऊपर नहीं देख सकता; वे मेरे सिर के बालों से भी अधिक हैं, इसलिये मेरा हृदय जवाब देता है।
13 हे यहोवा, मुझे छुड़ाने की कृपा कर! हे यहोवा, मेरी सहायता करने के लिए जल्दी कर!
14 जो मेरे प्राण को नाश करने के लिये मेरे पीछे पड़े हैं वे सब लज्जित और लज्जित हों; जो मेरा बुरा चाहते हैं वे सब पीछे हट जाएं और लज्जित हों।
15 जो मुझ से अहा, अहा कहते हैं, वे अपनी लज्जा के बदले में उजाड़ दिए जाएं।
16 जितने तुझे ढूंढ़ते हैं वे सब तेरे कारण हर्षित और आनन्दित हों; जो तेरे उद्धार की लालसा रखते हैं वे निरन्तर कहते रहें, यहोवा की बड़ाई हो!
17 मैं तो दीन और दरिद्र हूं; तौभी यहोवा मेरी सुधि रखता है; तू ही मेरा सहायक और छुड़ानेवाला है; हे मेरे परमेश्वर, विलम्ब न कर।

अध्याय 41

1 (प्रधान संगीतकार के लिए, दाऊद का एक भजन) धन्य है वह जो गरीबों पर विचार करता है: यहोवा संकट के समय में उसे बचाएगा।
2 यहोवा उसकी रक्षा करेगा, और उसको जीवित रखेगा; और वह पृथ्वी पर धन्य रहेगा; और तू उसे उसके शत्रुओं की इच्छा पर न छोड़ेगा।
3 यहोवा उसको दुर्बलता के बिछौने पर बल देगा; तू उसके रोग के समय उसके बिछौने को ठीक करेगा।
4 मैं ने कहा, हे यहोवा, मुझ पर दया कर, मेरे प्राण को चंगा कर; क्योंकि मैं ने तेरे विरुद्ध पाप किया है।
5 मेरे शत्रु मेरी बुराई करते हैं, वह कब मरेगा, और उसका नाम कब मिट जाएगा?
6 और जब वह मुझ से मिलने आता है, तब तो वह व्यर्थ बातें कहता है; उसका मन अधर्म की बातें बटोरता है; और जब वह बाहर जाता है, तब भी उसकी चर्चा करता है।
7 मेरे सब बैरी आपस में मिलकर मेरे विरुद्ध कानाफूसी करते हैं; वे मेरी हानि की युक्तियां बुनते हैं।
8 वे कहते हैं, एक बुरी बीमारी उस पर चढ़ गई है, और अब जब वह लेट गया है, तो वह फिर कभी नहीं उठ सकेगा।
9 हां, मेरा प्रिय मित्र, जिस पर मैं भरोसा रखता था, जो मेरी रोटी खाता था, उसने भी मेरे विरुद्ध लात उठाई है।
10 परन्तु हे यहोवा, तू मुझ पर दया कर और मुझे उठा ले, कि मैं उनको बदला दूं।
11 इस से मैं जान गया कि तू मुझ पर अनुग्रह करता है, क्योंकि मेरा शत्रु मुझ पर जयवन्त नहीं होता।
12 और तू मुझे खराई से सम्भालता है, और अपने सम्मुख सदैव स्थिर रखता है।
13 इस्राएल का परमेश्वर यहोवा अनादिकाल से, और अनन्तकाल तक धन्य है। आमीन, फिर आमीन।

अध्याय 42

1 (कोरह के पुत्रों के लिए मुख्य संगीतकार मस्किल को) जैसे हिरन जल की धाराओं के पीछे हांफता है, वैसे ही हे परमेश्वर, मेरा प्राण तेरे पीछे हांफता है।
2 मेरा प्राण परमेश्वर, अर्थात् जीवते परमेश्वर के लिये प्यासा है; मैं कब आकर परमेश्वर को अपना मुख दिखाऊंगा?
3 मेरे आंसू दिन रात मेरा आहार बने हैं, और लोग लगातार मुझ से कहते रहते हैं, तेरा परमेश्वर कहां है?
4 जब मैं ये बातें स्मरण करता हूं, तो अपना मन खोलकर कहता हूं, कि मैं भी भीड़ के साथ गया था, मैं भी उनके साथ परमेश्वर के भवन को गया था, और उस भीड़ के साथ जो पवित्र दिन मनाती थी, आनन्द और स्तुति का शब्द सुनती थी।
5 हे मेरे मन, तू क्यों उदास है? और मेरे कारण क्यों व्याकुल है? परमेश्वर पर भरोसा रख, क्योंकि उसके मुख के अनुग्रह के कारण मैं फिर उसका धन्यवाद करूंगा।
6 हे मेरे परमेश्वर, मेरा प्राण मेरे भीतर गिरा जाता है; इसलिये मैं यरदन के पास के देश से, और हर्मोनियों के बीच से, और मिसज़ार नाम पहाड़ी पर से तुझे स्मरण करता हूं।
7 तेरी जलधाराओं के शब्द से सागर सागर को पुकार रहा है; तेरी सारी लहरें और तेरी लहरें मेरे ऊपर बह गई हैं।

8 तौभी यहोवा दिन को अपनी करूणा प्रगट करता रहेगा, और
रात को भी उसका गीत मेरे संग रहेगा, और मैं अपने जीवनदाता
परमेश्वर से प्रार्थना करता रहूंगा।
9 मैं अपनी चट्टान परमेश्वर से कहूंगा, तू मुझे क्यों भूल गया? मैं
शत्रु के अन्धेर के कारण क्यों विलाप करता फिरूं?
10 मेरे शत्रु मेरी निन्दा करते हैं, मानो मेरी हड्डियों में तलवार चुभो
दी गई हो; और वे दिन भर मुझ से कहते हैं, तेरा परमेश्वर कहां है?
11 हे मेरे मन, तू क्यों उदास है? और मेरे भीतर क्यों व्याकुल है?
परमेश्वर पर भरोसा रख; क्योंकि मैं फिर उसी की स्तुति करूंगा,
जो मेरे मुख का नीरोग और मेरा परमेश्वर है।

अध्याय 43

1 हे परमेश्वर, मेरा न्याय चुकाओ, और दुष्ट जाति के विरुद्ध मेरा
मुक़द्दमा लड़ो; हे मुझे छली और अन्यायी मनुष्य से बचाओ।
2 क्योंकि तू ही मेरा बल देनेवाला परमेश्वर है; फिर तू ने मुझे क्यों
त्याग दिया है? मैं शत्रु के अन्धेर के कारण क्यों विलाप करता
फिरूं?
3 हे अपनी ज्योति और सच्चाई को भेज; वे मेरी अगुवाई करें; वे
मुझे तेरे पवित्र पर्वत पर और तेरे निवासों के पास पहुंचाएं।
4 तब मैं परमेश्वर की वेदी के पास जाऊंगा, उस परमेश्वर के पास
जो मेरा अति आनन्द है; हां, हे परमेश्वर, मेरे परमेश्वर, मैं वीणा
बजाकर तेरा धन्यवाद करूंगा।
5 हे मेरे मन, तू क्यों उदास है? और मेरे भीतर क्यों व्याकुल है?
परमेश्वर पर भरोसा रख; क्योंकि मैं फिर उसी की स्तुति करूंगा,
जो मेरे मुख का नीरोग और मेरा परमेश्वर है।

अध्याय 44

1 (कोरह के पुत्रों के प्रधान गायक, मस्किल को) हे परमेश्वर, हम
ने अपने कानों से सुना है, हमारे पूर्वजों ने हम से कहा है, कि तूने
उनके दिनों में, अर्थात् प्राचीनकाल में क्या क्या काम किए थे।
2 तू ने अपने हाथ से अन्यजातियों को कैसे निकाल कर बसाया; तू
ने लोगों को कैसे सताया और कैसे उन्हें देश से निकाल दिया।
3 क्योंकि उन्होंने उस देश को अपनी तलवार के बल पर न तो
जीता, और न अपने भुजबल के बल से बचाया; परन्तु तेरे दाहिने
हाथ और भुजबल और तेरे मुख के तेज के कारण बचा; क्योंकि तू
ने उन पर अनुग्रह किया था।
4 हे परमेश्वर, तू मेरा राजा है; याकूब के लिये उद्धार का आदेश
दे।
5 तेरे द्वारा हम अपने शत्रुओं को धकेल देंगे; तेरे नाम के द्वारा हम
अपने विरोधियों को कुचल देंगे।
6 क्योंकि मैं अपने धनुष पर भरोसा न रखूंगा, और न मेरी तलवार
मुझे बचाएगी।
7 परन्तु तू ने हम को हमारे शत्रुओं से बचाया है, और हमारे
बैरियों को लज्जित किया है।
8 हम दिन भर परमेश्वर पर घमण्ड करते हैं, और सदा तेरे नाम
की स्तुति करते हैं। सेला।
9 परन्तु तू ने हम को त्याग दिया और हमारा अपमान किया है,
और हमारी सेनाओं के साथ आगे नहीं जाता।
10 तू हमें शत्रुओं के सामने से लौटा ले आता है, और हमारे बैरी
लूट ले जाते हैं।
11 तू ने हमें चरने के लिये नियुक्त भेड़ों के समान कर दिया है,
और अन्यजातियों में तितर-बितर कर दिया है।
12 तू अपनी प्रजा को सेंतमेंत बेचता है, और उनका दाम देकर
अपना धन नहीं बढ़ाता।
13 तू हमें अपने पड़ोसियों के साम्हने नामधराई का, और हमारे
चारों ओर रहने वालों के साम्हने उपहास और ठट्ठा का कारण
ठहराता है।
14 तू हम को अन्य जातियों में दृष्टान्त का विषय बनाता है, और
लोगों में सिर हिलाने का कारण बनाता है।
15 मेरा कलंक निरन्तर मेरे साम्हने बना रहता है, और मेरे मुख
की लज्जा मुझ पर छा गई है,
16 शत्रु और पलटा लेनेवाले के कारण, निन्दा और निन्दा
करनेवाले की वाणी के कारण।
17 यह सब कुछ हम पर बीता है; तौभी हम तुझे नहीं भूले, और न
तेरी वाचा के विषय में विश्वासघात किया है।
18 हमारा मन पीछे नहीं हटा, न ही हमारे पग तेरे मार्ग से हटे हैं;
19 यद्यपि तूने हमें अजगरों के स्थान में बुरी तरह से तोड़ दिया है,
और हमें मृत्यु की छाया में ढक दिया है।
20 यदि हम अपने परमेश्वर का नाम भूल गए हों, वा किसी पराए
देवता की ओर हाथ फैलाए हों,
21 क्या परमेश्वर इस बात को न जानेगा? वह तो मन की गुप्त
बातें जानता है।
22 हां, तेरे कारण हम दिन भर घात किए जाते हैं; हम वध होने
वाली भेड़ों के समान गिने जाते हैं।
23 हे यहोवा, जाग! तू क्यों सो रहा है? उठ, हमें सदा के लिये न
त्याग!
24 तू क्यों अपना मुख छिपा लेता है, और हमारे क्लेश और अन्धेर
को क्यों भूल जाता है?
25 क्योंकि हमारा प्राण धूल में मिल गया है, हमारा पेट भूमि से
लग गया है।
26 हमारी सहायता के लिये उठ, और अपनी दया के निमित्त
हमारा उद्धार कर।

अध्याय 45

1 (कोरह के पुत्रों के लिए, शोशन्निम के मुख्य संगीतकार के लिए,
मस्किल, प्रेम का एक गीत।) मेरा हृदय एक अच्छी बात लिख रहा
है: मैं उन चीजों के बारे में बोलता हूं जो मैंने राजा से संबंधित की
हैं: मेरी जीभ एक कुशल लेखक की कलम है।
2 तू मनुष्यों से अधिक सुन्दर है; तेरे होठों में अनुग्रह भरा हुआ है:
इस कारण परमेश्वर ने तुझे सदा आशीष दी है।
3 हे परम पराक्रमी, अपने तेज और ऐश्वर्य के अनुसार अपनी
तलवार अपनी जांघ पर बाँध ले।
4 और तू अपनी महिमा में सच्चाई, नम्रता और धर्म के कारण
शान्ति से चलता रहेगा; और तेरा दाहिना हाथ तुझे भयानक बातें
सिखाएगा।
5 तेरे तीर राजा के शत्रुओं के हृदय में चुभते हैं; और वे तेरे अधीन
होकर प्रजा के लोग गिर जाते हैं।
6 हे परमेश्वर, तेरा सिंहासन युगानुयुग बना रहेगा; तेरे राज्य का
राजदण्ड सच्चा राजदण्ड है।
7 तू धर्म से प्रेम और दुष्टता से घृणा करता है; इस कारण परमेश्वर
तेरे परमेश्वर ने तेरे साथियों से अधिक हर्षरूपी तेल से तुझे
अभिषेक किया है।

8 तेरे सारे वस्त्र गन्धरस, अगर, और तज की सुगन्ध से भरे हुए हैं, जो हाथीदांत के महलों से निकले हैं; और इनसे तू आनन्दित हुआ है।
9 तेरी प्रतिष्ठित स्त्रियों में राजपुत्रियां भी थीं; तेरी दाहिनी ओर रानी ओपीर के कुन्दन से सजी हुई खड़ी थी।
10 हे बेटी, ध्यान दे, और ध्यान से सुन, और कान लगा; अपने लोगों और अपने पिता के घराने को भी भूल जा;
11 तब राजा तेरी सुन्दरता की बहुत अभिलाषा करेगा, क्योंकि वह तेरा प्रभु है; और तू उसी को दण्डवत करना।
12 और सोर की बेटी भी भेंट लेकर वहां आएगी; और प्रजा के धनवान लोग भी तुझ से बिनती करेंगे।
13 राजा की बेटी भीतर से बहुत शोभायमान है, उसके वस्त्र गढ़े हुए सोने के हैं।
14 वह कढ़ाई के वस्त्र पहिने हुए राजा के पास पहुंचाई जाएगी; और उसकी सहेलियां जो उसके पीछे पीछे आएंगी वे भी तेरे पास पहुंचाई जाएंगी।
15 वे आनन्द और खुशी के साथ लाए जाएंगे; वे राजा के महल में प्रवेश करेंगे।
16 तेरे पिताओं के स्थान पर तेरे पुत्र होंगे, जिनको तू सारी पृथ्वी पर हाकिम ठहरा सकेगा।
17 मैं ऐसा करूंगा कि तेरा नाम पीढ़ी पीढ़ी में स्मरण किया जाएगा; इसलिये लोग सदा सर्वदा तेरी स्तुति करते रहेंगे।

अध्याय 46

1 (कोरह के पुत्रों के प्रधान गायक के लिये अलामोत पर एक गीत।) परमेश्वर हमारा शरणस्थान और बल है, संकट में अति सहज से मिलने वाला सहायक।
2 इस कारण हम को कोई भय नहीं, चाहे पृथ्वी पलट जाए, और पहाड़ समुद्र के बीच में डाल दिए जाएं;
3 यद्यपि उसके जल गरजते और थरथराते हैं, और पहाड़ उसके उफान से कांप उठते हैं। सेला।
4 एक नदी है, जिसकी धाराएँ परमेश्वर के नगर को, अर्थात् परमप्रधान के निवासों के पवित्र स्थान को आनन्दित करेंगी।
5 परमेश्वर उसके बीच में है; वह कभी न डगमगाएगी; परमेश्वर उसकी सहायता करेगा, और वह भी शीघ्र।
6 अन्यजातियाँ भड़क उठीं, राज्य राज्य हिल गए; उसने अपनी वाणी सुनाई, पृथ्वी पिघल गई।
7 सेनाओं का यहोवा हमारे संग है; याकूब का परमेश्वर हमारा शरणस्थान है। सेला।
8 आओ, यहोवा के महाकर्म देखो! उसने पृथ्वी पर कैसा कैसा उजाड़ मचाया है!
9 वह पृथ्वी की छोर तक लड़ाइयों को बन्द करता है; वह धनुष को तोड़ता और भाले को दो टुकड़े कर डालता है; वह रथ को आग में जला देता है।
10 चुप रहो और जान लो कि मैं ही परमेश्वर हूँ; मैं अन्यजातियों में महान हूँगा, मैं पृथ्वी पर महान हूँगा।
11 सेनाओं का यहोवा हमारे संग है; याकूब का परमेश्वर हमारा शरणस्थान है। सेला।

अध्याय 47

1 (कोरह के पुत्रों के लिए मुख्य संगीतकार का भजन।) हे लोगो, सब लोग ताली बजाओ; जयजयकार के शब्द से परमेश्वर का जयजयकार करो।
2 क्योंकि यहोवा परमप्रधान भययोग्य है; वह सारी पृथ्वी के ऊपर महान राजा है।
3 वह देश देश के लोगों को हमारे वश में कर देगा, और जाति जाति के लोगों को हमारे पांवों तले कर देगा।
4 वह हमारे लिये हमारी मीरास चुन लेगा, अर्थात अपने प्रिय याकूब का प्रताप। सेला।
5 परमेश्वर जयजयकार करते हुए, यहोवा नरसिंगे की ध्वनि के साथ ऊपर गया है।
6 परमेश्वर का भजन गाओ, भजन गाओ; हमारे राजा का भजन गाओ, भजन गाओ।
7 क्योंकि परमेश्वर सारी पृथ्वी का राजा है; समझ से उसका भजन गाओ।
8 परमेश्वर अन्यजातियों पर राज्य करता है; परमेश्वर अपनी पवित्रता के सिंहासन पर विराजमान है।
9 देश देश के हाकिम अर्थात् इब्राहीम के परमेश्वर की प्रजा इकट्ठे हुए हैं; क्योंकि पृथ्वी की ढालें परमेश्वर की हैं; वह अति महान् है।

अध्याय 48

1 (कोरह के पुत्रों के लिए एक गीत और भजन।) यहोवा महान है, और हमारे परमेश्वर के नगर में, उसकी पवित्रता के पर्वत पर उसकी स्तुति अति उत्तम है।
2 सिय्योन पर्वत, जो उत्तर दिशा की ओर है, वह बहुत सुन्दर और सारी पृथ्वी के लिये हर्ष का कारण है, वह महान राजा का नगर है।
3 परमेश्वर उसके महलों में शरणस्थान के रूप में जाना जाता है।
4 क्योंकि देखो, राजा लोग इकट्ठे हुए, और एक साथ चले गए।
5 जब उन्होंने यह देखा तो अचम्भा किया, और घबराकर भाग गए।
6 वहां उन को भय और जच्चा की सी पीड़ाएं उठने लगीं।
7 तू पुरवाई चलाकर तर्शीश के जहाज़ों को तोड़ डालता है।
8 जैसा हम ने सुना था, वैसा ही सेनाओं के यहोवा के नगर अर्थात अपने परमेश्वर के नगर में देखा भी है; परमेश्वर उसको सदा स्थिर रखेगा। सेला।
9 हे परमेश्वर, हम ने तेरे मन्दिर में तेरी करूणा का स्मरण किया है।
10 हे परमेश्वर, तेरी स्तुति तेरे नाम के अनुसार पृथ्वी की छोर तक होती है; तेरा दाहिना हाथ धर्म से भरा हुआ है।
11 तेरे न्याय के कारण सिय्योन पर्वत मगन हो, यहूदा की स्त्रियाँ आनन्दित हों!
12 सिय्योन के चारों ओर चलो, और उसके चारों ओर घूमो; उसके गुम्मटों की गिनती करो।
13 उसके किलों पर ध्यान रखो, और उसके महलों पर ध्यान करो; तब तुम आनेवाली पीढ़ी से इसका वर्णन कर सकोगे।
14 क्योंकि यह परमेश्वर युगानुयुग हमारा परमेश्वर है: वह मृत्यु तक हमारी अगुवाई करेगा।

अध्याय 49

1 (कोरह के पुत्रों के लिए प्रधान संगीतकार का भजन।) हे लोगो, सब कुछ सुनो; हे जगत के सब निवासियो, कान लगाओ:
2 निम्न और उच्च, अमीर और गरीब, एक साथ।
3 मेरे मुँह से बुद्धि की बातें निकलेंगी, और मेरे हृदय का ध्यान समझ की बातें होंगी।
4 मैं दृष्टान्त की ओर कान लगाऊंगा, मैं वीणा पर अपना गुप्त वचन बोलूंगा।
5 विपत्ति के दिनों में मैं क्यों डरूं, जब मेरे अधर्म के काम मुझे घेर लेंगे?
6 जो लोग अपने धन पर भरोसा रखते और अपने धन की बहुतायत पर घमण्ड करते हैं,
7 उन में से कोई किसी रीति से अपने भाई को छुड़ा नहीं सकता, और न परमेश्वर को उसके लिये छुड़ौती दे सकता है।
8 (क्योंकि उनके प्राणों का छुटकारा बहुमूल्य है, और वह सदा तक बना रहेगा।)
9 ताकि वह सदा जीवित रहे, और कभी सड़न न देखे।
10 क्योंकि वह देखता है कि बुद्धिमान लोग मर जाते हैं, और मूर्ख और पशु भी नाश हो जाते हैं, और अपना धन औरों के लिये छोड़ जाते हैं।
11 वे यह सोचते हैं, कि उनके घर सदा बने रहेंगे, और उनके निवास स्थान पीढ़ी से पीढ़ी तक बने रहेंगे; वे अपनी भूमि का नाम अपने ही नाम पर रखते हैं।
12 तौभी मनुष्य प्रतिष्ठा पाकर भी नहीं रहता; वह पशुओं के समान नाश हो जाता है।
13 उनकी यही चाल मूढ़ता है, तौभी उनके वंशज उनकी बातें स्वीकार करते हैं। सेला।
14 वे भेड़ों की नाईं कब्र में रखे जाएंगे; मृत्यु उन पर चढ़ाई करेगी; और भोर को सीधे लोग उन पर प्रभुता करेंगे; और उनकी सुन्दरता उनके निवासस्थान से कब्र में नाश हो जाएगी।
15 परन्तु परमेश्वर मेरे प्राण को अधोलोक से छुड़ा लेगा, क्योंकि वह मुझे ग्रहण करेगा। सेला।
16 जब कोई धनी हो जाए, और उसके घर का वैभव बढ़ जाए, तब मत डर;
17 क्योंकि जब वह मरेगा तो कुछ भी अपने साथ नहीं ले जाएगा, और न उसकी महिमा उसके पीछे-पीछे जाएगी।
18 यद्यपि वह जीवित रहते हुए अपने प्राण को धन्य मानता रहा; और जब तू अपना भला करेगा, तब लोग तेरी प्रशंसा करेंगे।
19 वह अपने पूर्वजों की पीढ़ी में चला जाएगा; वे कभी प्रकाश नहीं देखेंगे।
20 जो मनुष्य प्रतिष्ठित तो है, परन्तु समझ नहीं रखता, वह नाश होने वाले पशुओं के समान है।

अध्याय 50

1 (आसाप का भजन) पराक्रमी परमेश्वर यहोवा ने कहा है, और उदयाचल से लेकर अस्ताचल तक पृथ्वी को बुलाया है।
2 सिय्योन में से, सुन्दरता की परिपूर्णता से, परमेश्वर चमका है।
3 हमारा परमेश्वर आएगा, और चुप न रहेगा; उसके आगे आगे आग भस्म करती जाएगी, और उसके चारों ओर बड़ी आंधी चलेगी।
4 वह ऊपर से आकाश को और पृथ्वी को पुकारेगा, कि वह अपने लोगों का न्याय करे।
5 मेरे भक्तों को मेरे पास इकट्ठा करो, जिन्होंने बलिदान देकर मेरे साथ वाचा बाँधी है।
6 और आकाश उसकी धार्मिकता का वर्णन करेगा, क्योंकि परमेश्वर आप ही न्यायी है। सेला।
7 हे मेरी प्रजा, सुन, मैं बोलूंगा; हे इस्राएल, मैं तेरे विरुद्ध साक्षी दूंगा; मैं परमेश्वर हूं, हां तेरा परमेश्वर हूं।
8 मैं तुझे इसलिये न डांटूंगा, कि जो मेलबलि और होमबलि नित्य मेरे सम्मुख चढ़ाते आए हैं, वे सब तुझे डांटेंगे।
9 मैं तेरे घर से न तो बैल न तेरे बाड़े से बकरा लूंगा।
10 क्योंकि जंगल के सारे पशु और हज़ारों पहाड़ों के सारे घरेलू पशु भी मेरे हैं।
11 मैं पहाड़ों के सब पक्षियों को जानता हूं, और मैदान के सब वनपशु भी मेरे हैं।
12 यदि मुझे भूख लगती तो मैं तुझ से न कहता, क्योंकि जगत और उस में जो कुछ है, वह मेरा है।
13 क्या मैं बैल का मांस खाऊँ, वा बकरों का लोहू पीऊँ?
14 परमेश्वर को धन्यवाद चढ़ाओ, और परमप्रधान के लिये अपनी मन्नतें पूरी करो।
15 और संकट के दिन मुझे पुकार; मैं तुझे छुड़ाऊंगा, और तू मेरी महिमा करने पाएगा।
16 परन्तु परमेश्वर दुष्टों से कहता है, तुझे मेरी विधियों का वर्णन करने, वा मेरी वाचा को अपने मुंह में लेने से क्या लाभ?
17 क्योंकि तू शिक्षा से घृणा करता है, और मेरे वचनों को तुच्छ जानता है।
18 जब तू ने चोर को देखा, तब तू भी उसके साथ हो गया, और व्यभिचारियों का साझी हो गया।
19 तू अपना मुंह बुराई की ओर लगाता है, और तेरी जीभ छल की बातें गढ़ती है।
20 तू बैठा हुआ अपने भाई की निन्दा करता है; तू अपनी ही माँ के बेटे की निन्दा करता है।
21 तू ने ये काम किए, और मैं चुप रहा; तू ने मुझे अपने समान समझा; परन्तु मैं तुझे डांटूंगा, और तेरे साम्हने ये बातें समझाऊंगा।
22 अब हे परमेश्वर को भूलनेवालो, इस बात पर ध्यान दो, कहीं ऐसा न हो कि मैं तुम्हें टुकड़े टुकड़े कर डालूं, और कोई छुड़ानेवाला न रहे।
23 जो स्तुति करता है, वह मेरी महिमा करता है; और जो अपना चालचलन ठीक रखता है, उसे मैं परमेश्वर का उद्धार दिखाऊंगा।

अध्याय 51

1 (दाऊद का एक भजन, जब नातान नबी उसके पास आया, जब वह बतशेबा के पास गया था।) हे परमेश्वर, अपनी करूणा के अनुसार मुझ पर दया कर; अपनी बड़ी दया के अनुसार मेरे अपराधों को मिटा दे।
2 मुझे मेरे अधर्म से भली भांति धोकर मेरा पाप छुड़ा ले।
3 क्योंकि मैं अपने अपराधों को मानता हूं, और मेरा पाप निरन्तर मेरी दृष्टि में रहता है।
4 मैं ने केवल तेरे ही विरुद्ध पाप किया, और जो काम तेरी दृष्टि में बुरा है, वही किया है, कि तू बोलते समय निर्दोष ठहरे, और न्याय करते समय निर्दोष ठहरे।

5 देख, मैं अधर्म से रचा गया, और पाप के साथ मेरी माता ने मुझे गर्भ में धारण किया।
6 देख, तू मेरे मन में सच्चाई की इच्छा करता है, और मेरे मन में बुद्धि की शिक्षा देता है।
7 मुझे जूफा से शुद्ध कर, तो मैं पवित्र हो जाऊंगा; मुझे धो, तो मैं हिम से भी अधिक श्वेत हो जाऊंगा।
8 मुझे हर्ष और आनन्द का समाचार सुना, कि जो हड्डियां तू ने तोड़ डाली हैं वे भी मगन हो जाएं।
9 अपना मुख मेरे पापों से फेर ले, और मेरे सब अधर्म के कामों को मिटा दे।
10 हे परमेश्वर, मेरे अन्दर शुद्ध मन उत्पन्न कर, और मेरे भीतर सीधा आत्मा नये सिरे से उत्पन्न कर।
11 मुझे अपने साम्हने से दूर न कर, और अपने पवित्र आत्मा को मुझ से अलग न कर।
12 अपने किये हुए उद्धार का आनन्द मुझे फेर दे, और अपने स्वतंत्र आत्मा से मुझे सम्भाल ले।
13 तब मैं अपराधियों को तेरे मार्ग सिखाऊंगा, और पापी तेरी ओर फिरेंगे।
14 हे परमेश्वर, हे मेरे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर, मुझे हत्या के अपराध से छुड़ा ले, तब मैं तेरे धर्म का जयजयकार करूंगा।
15 हे यहोवा, मेरे होठों को खोल दे, तब मैं तेरा गुणानुवाद करूंगा।
16 क्योंकि तू बलिदान नहीं चाहता, नहीं तो मैं देता; तू होमबलि से प्रसन्न नहीं होता।
17 टूटा मन परमेश्वर के योग्य बलिदान है; हे परमेश्वर, तू टूटे और पिसे हुए मन को तुच्छ नहीं जानता।
18 अपनी इच्छा के अनुसार सिय्योन का भला कर; यरूशलेम की शहरपनाह तू ही बना।
19 तब तू धर्म के बलिदानों से प्रसन्न होगा, अर्थात होमबलि और सम्पूर्ण होमबलि से; तब तेरी वेदी पर बैल चढ़ाए जाएंगे।

अध्याय 52

1 (प्रधान गायक, मस्किल, दाऊद का एक भजन, जब एदोमी दोएग ने आकर शाऊल को यह समाचार दिया, कि दाऊद अहीमेलेक के घर में आया है।) हे वीर, तू बुराई पर क्यों घमण्ड करता है? परमेश्वर की भलाई निरन्तर बनी रहती है।
2 तेरी जीभ दुष्टता की युक्तियां गढ़ती है, वह तेज छुरा के समान छल से काम करती है।
3 तू भलाई से अधिक बुराई से प्रीति रखता है, और धर्म की बातें कहने से अधिक झूठ से प्रीति रखता है।
4 हे छली जीभ, तू तो सब नाश करने वाली बातें पसंद करती है।
5 वैसे ही परमेश्वर तुझे सदा के लिये नाश करेगा, वह तुझे उठा ले जाएगा, और तेरे निवासस्थान से उखाड़ देगा, और जीवितों की भूमि में से भी तुझे जड़ से उखाड़ देगा। सेला।
6 धर्मी लोग यह देखकर डरेंगे और उस पर हंसेंगे।
7 देखो, यह वही मनुष्य है जिसने परमेश्वर को अपना आधार नहीं माना; परन्तु अपने धन की बहुतायत पर भरोसा रखता और अपनी दुष्टता में दृढ़ हो गया।
8 परन्तु मैं परमेश्वर के भवन में हरे जैतून के वृक्ष के समान हूं; मैं परमेश्वर की करूणा पर सदा सर्वदा भरोसा रखता हूं।
9 मैं सदा तेरी स्तुति करता रहूंगा, क्योंकि तू ने यह काम किया है; मैं तेरे नाम की बाट जोहता रहूंगा, क्योंकि तेरे भक्तों के निकट यह अच्छा है।

अध्याय 53

1 (महालत के मुख्य संगीतकार के लिए, मस्किल, दाऊद का एक भजन।) मूर्ख ने अपने मन में कहा है, कोई परमेश्वर नहीं है। वे भ्रष्ट हैं, और उन्होंने घृणित अधर्म किया है: कोई भी ऐसा नहीं है जो अच्छा करता हो।
2 परमेश्वर ने स्वर्ग से मनुष्यों के ऊपर दृष्टि की, कि देखे कि क्या कोई समझदार, परमेश्वर को खोजने वाला है या नहीं।
3 वे सब के सब पीछे हट गए हैं, वे सब के सब अशुद्ध हो गए हैं; कोई भी भलाई करनेवाला नहीं, एक भी नहीं।
4 क्या अनर्थकारियों को कुछ भी ज्ञान नहीं? वे मेरी प्रजा को रोटी की नाईं खा जाते हैं; वे परमेश्वर को नहीं पुकारते।
5 वहां तो बहुत भय था, परन्तु वहां कुछ भी भय नहीं था; क्योंकि परमेश्वर ने तेरे विरुद्ध छावनी डालने वालों की हड्डियां तितर-बितर कर दीं; तूने उनको लज्जित किया है, क्योंकि परमेश्वर ने उनको तुच्छ जाना है।
6 भला होता कि इस्राएल का उद्धार सिय्योन से आता! जब परमेश्वर अपनी प्रजा को बन्धुआई से लौटा ले आएगा, तब याकूब आनन्दित होगा, और इस्राएल आनन्दित होगा।

अध्याय 54

1 (नेगिनोथ के मुख्य संगीतकार के लिए, मस्किल, दाऊद का एक भजन, जब जिपिम ने आकर शाऊल से कहा, क्या दाऊद हमारे बीच नहीं छिपा है?) हे परमेश्वर, अपने नाम से मुझे बचा, और अपनी शक्ति से मेरा न्याय कर।
2 हे परमेश्वर, मेरी प्रार्थना सुन; मेरे मुँह के वचनों पर कान लगा।
3 क्योंकि परदेशी मेरे विरुद्ध उठे हैं, और अन्धेर करनेवाले मेरे प्राण के ग्राहक हैं; उन्होंने परमेश्वर को अपने सम्मुख नहीं रखा। सेला।
4 देख, परमेश्वर मेरा सहायक है; यहोवा मेरे प्राण को थामनेवालों के संग है।
5 वह मेरे शत्रुओं को बुराई का बदला देगा; अपनी सच्चाई से उनका नाश कर डाल।
6 मैं तेरे लिये स्वेच्छा से बलिदान चढ़ाऊंगा; हे यहोवा, मैं तेरे नाम की स्तुति करूंगा, क्योंकि यह उत्तम है।
7 क्योंकि उसने मुझे सब संकटों से छुड़ाया है, और मेरी आंखें मेरे शत्रुओं पर उसकी अभिलाषा पूरी करने को देख चुकी हैं।

अध्याय 55

1 (नेगिनोथ के मुख्य संगीतकार के लिए, मस्किल, दाऊद का एक भजन।) हे परमेश्वर, मेरी प्रार्थना पर कान लगा; और मेरी विनती से अपने आप को मत छिपा।
2 मेरी ओर ध्यान दो और मेरी सुनो; मैं विलाप करता हुआ चिल्लाता हूं;
3 शत्रु के कोलाहल के कारण, दुष्टों के अन्धेर के कारण; क्योंकि वे मुझ पर अधर्म का बोझ डालते हैं, और क्रोध में आकर मुझ से घृणा करते हैं।

4 मेरा हृदय भीतर ही भीतर बहुत दुखी है, और मृत्यु का भय मुझ पर छा गया है।
5 भय और थरथराहट मुझ पर छा गई है, और मैं घबरा गया हूं।
6 तब मैं ने कहा, भला होता कि मेरे पास कबूतर के समान पंख होते! तब तो मैं उड़ जाता और विश्राम पाता।
7 तब तो मैं बहुत दूर भटक जाऊंगा, और जंगल में रहूंगा।
8 मैं तूफ़ान और आँधी से बचकर शीघ्र निकल जाना चाहता हूँ।
9 हे यहोवा, उनको नाश कर दे, और उनकी बोली में फूट डाल दे; क्योंकि मैंने नगर में उपद्रव और झगड़ा देखा है।
10 दिन रात लोग उसकी शहरपनाह पर घूमते रहते हैं; उसके बीच में उत्पात और शोक रहता है।
11 दुष्टता उसके बीच में है, छल और कपट उसके मार्गों से दूर नहीं होते।
12 क्योंकि जो मेरी निन्दा करता है वह मेरा शत्रु नहीं है, नहीं तो मैं उसको सह लेता; और न वह मेरा बैरी है जो मेरे विरुद्ध बड़ाई मारता है, नहीं तो मैं उस से छिप जाता।
13 परन्तु वह तो तू ही था, जो मेरा समान मनुष्य, मेरा मार्गदर्शक और मेरा परिचित था।
14 हम आपस में मीठी-मीठी बातें करते थे, और एक संग होकर परमेश्वर के भवन को जाते थे।
15 मृत्यु उन्हें जकड़ ले, और वे तुरन्त अधोलोक में उतर जाएं; क्योंकि दुष्टता उनके निवासों में और उनके बीच में है।
16 मैं तो परमेश्वर को पुकारूंगा, और यहोवा मुझे बचाएगा।
17 सांझ को, भोर को, दोपहर को, तीनों समय मैं प्रार्थना करूंगा और ऊंचे स्वर से पुकारूंगा, और वह मेरा शब्द सुन लेगा।
18 जो लड़ाई मेरे विरुद्ध हुई थी उससे उसने मुझे शान्ति के साथ बचाया है; क्योंकि बहुत से लोग मेरे साथ थे।
19 परमेश्वर सुनकर उनको दु:ख देगा, वह तो प्राचीनकाल से रहता आया है। क्योंकि वे नहीं बदलते, इसलिये वे परमेश्वर का भय नहीं मानते।
20 जो उसके साथ मेल रखते हैं, उन पर भी उसने हाथ बढ़ाया है; उसने अपनी वाचा तोड़ दी है।
21 उसके मुँह के वचन तो मक्खन से अधिक मधुर थे, परन्तु उसके मन में युद्ध की धुन थी; उसके वचन तेल से अधिक कोमल थे, परन्तु वे नंगी तलवारें थीं।
22 अपना बोझ यहोवा पर डाल दे वह तुझे सम्भालेगा; वह धर्मी को कभी टलने न देगा।
23 परन्तु हे परमेश्वर, तू उनको विनाश के गड़हे में गिराएगा; खूनी और छली लोग अपनी आधी आयु भी जीवित न बिता सकेंगे; परन्तु मैं तुझ पर भरोसा रखूंगा।

अध्याय 56

1 (यह योनातेलमरेहोकीम के मुख्य बजानेवाले दाऊद के मिक्ताम के विषय में है, जब पलिश्तियों ने उसे गत में पकड़ लिया था।) हे परमेश्वर, मुझ पर अनुग्रह कर, क्योंकि मनुष्य मुझे निगलना चाहता है; वह प्रतिदिन लड़कर मुझे सताता है।
2 हे परमप्रधान, मेरे शत्रु प्रति दिन मुझे निगलना चाहते हैं, क्योंकि वे बहुत हैं जो मुझसे लड़ते हैं।
3 जब मैं डर जाऊँगा तब मैं तुझ पर भरोसा रखूँगा।
4 परमेश्वर पर भरोसा करके मैं उसके वचन की प्रशंसा करूंगा, परमेश्वर पर मेरा भरोसा है; मैं न डरूंगा, कि मनुष्य मेरा क्या कर सकता है।
5 वे प्रतिदिन मेरे वचनों को तोड़-मरोड़ कर पेश करते हैं; उनकी सारी कल्पनाएँ मेरे विरुद्ध बुराई की ही होती हैं।
6 वे इकट्ठे होकर छिप जाते हैं, वे मेरे कदमों की टोह लेते हैं, और मेरे प्राण की बाट जोहते हैं।
7 क्या वे अधर्म से बच निकलेंगे? हे परमेश्वर, अपने क्रोध में आकर उन लोगों को गिरा दे।
8 तू मेरे भटकने का समाचार देता है; मेरे आँसुओं को अपनी कुप्पी में रख ले; क्या वे तेरी पुस्तक में नहीं हैं?
9 जब मैं तेरी दोहाई दूंगा, तब मेरे शत्रु पीछे हट जाएंगे; यह मैं जानता हूं, क्योंकि परमेश्वर मेरी ओर है।
10 मैं परमेश्वर के द्वारा उसके वचन की प्रशंसा करूंगा; यहोवा के द्वारा मैं उसके वचन की प्रशंसा करूंगा।
11 मैं परमेश्वर पर भरोसा रखता हूं, मैं नहीं डरूंगा कि मनुष्य मेरा क्या कर सकता है।
12 हे परमेश्वर, तेरी मन्नतें मुझ पर पूरी हुई हैं; मैं तेरा धन्यवाद करूंगा।
13 क्योंकि तू ने मेरे प्राण को मृत्यु से बचाया है; क्या तू मेरे पांवों को गिरने से न बचाएगा, कि मैं परमेश्वर के साम्हने जीवतों की ज्योति में चलूं?

अध्याय 57

1 (यह गीत दाऊद के मिक्ताम के प्रधान गायक अल्ताशकीत के नाम है, जब वह गुफा में शाऊल से बचकर भाग गया था।) हे परमेश्वर, मुझ पर दया कर, मुझ पर दया कर, क्योंकि मेरा प्राण तुझ पर भरोसा रखता है; हां, जब तक ये विपत्तियां समाप्त न हो जाएं, तब तक मैं तेरे पंखों की छाया में शरण लिये रहूंगा।
2 मैं परमप्रधान परमेश्वर को पुकारूंगा, उस परमेश्वर को जो मेरे लिये सब कुछ करता है।
3 वह स्वर्ग से भेजकर मुझे उस निन्दा से बचाएगा जो मुझे निगलना चाहता है। सेला परमेश्वर अपनी दया और सच्चाई भेजेगा।
4 मेरा प्राण सिंहों के बीच में है, और मैं उन मनुष्यों के बीच में पड़ा हूं जो जले हुए हैं, अर्थात् उन मनुष्यों के बीच में जिनके दांत बर्छे और तीर हैं, और उनकी जीभ तेज तलवार है।
5 हे परमेश्वर, तू स्वर्ग से भी ऊंचा हो; तेरी महिमा सारी पृथ्वी के ऊपर हो।
6 उन्होंने मेरे कदमों के लिये जाल बिछाया है; मेरा प्राण झुक गया है; उन्होंने मेरे साम्हने गड्ढा खोदा है, और उसी में वे स्वयं गिर पड़े हैं। सेला।
7 हे परमेश्वर, मेरा हृदय स्थिर है, मेरा हृदय स्थिर है; मैं गाऊंगा और स्तुति करूंगा।
8 हे मेरी महिमा, जाग उठ! हे वीणा और सारंगी, जाग! मैं भी शीघ्र जाग उठूंगा।
9 हे यहोवा, मैं देश देश के लोगों के बीच में तेरा धन्यवाद करूंगा; मैं जाति जाति के लोगों के बीच में तेरा भजन गाऊंगा।
10 क्योंकि तेरी करूणा स्वर्ग तक, और तेरी सच्चाई बादलों तक बड़ी है।
11 हे परमेश्वर, तू स्वर्ग से भी ऊंचा हो; तेरी महिमा सारी पृथ्वी के ऊपर हो।

अध्याय 58

1 (दाऊद के मिक्ताम के प्रधान गायक अल्तास्कीत के नाम) हे मण्डली, क्या तुम सचमुच धर्म की बातें कहते हो? हे मनुष्यों, क्या तुम सीधाई से न्याय करते हो?
2 तुम मन में तो दुष्टता करते हो; और पृथ्वी पर अपने हाथों के उपद्रव का विचार करते हो।
3 दुष्ट लोग गर्भ ही से पराए हुए हैं; वे जन्मते ही झूठ बोलकर भटक जाते हैं।
4 उनका विष सर्प के समान है, वे बहरे नाग के समान हैं जो अपना कान बन्द कर लेता है;
5 जो जादूगरों की बात नहीं सुनते, और न ही बुद्धिमानी से जादू करते हैं।
6 हे परमेश्वर, उनके मुंह में से उनके दांत तोड़ दे; हे यहोवा, जवान सिंहों के बड़े बड़े दांत तोड़ दे।
7 वे बहते हुए जल की नाईं पिघल जाएं; जब वह तीर चलाने के लिये धनुष चढ़ाए, तब वे टुकड़े टुकड़े हो जाएं।
8 वे सब के सब पिघलते हुए घोंघे के समान नाश हो जाएं; वे असमय जन्मी स्त्री के समान नाश हो जाएं, और सूर्य को न देखें।
9 इससे पहले कि तुम्हारे बर्तन काँटों को छू पाएं, वह उन्हें जीवित और क्रोध में बवंडर के समान उड़ा ले जाएगा।
10 धर्मी पलटा देखकर आनन्दित होगा; वह दुष्टों के खून में अपने पैर धोएगा।
11 इसलिये मनुष्य कहेगा, निश्चय धर्मी के लिये बदला है; निश्चय वह परमेश्वर है जो पृथ्वी पर न्याय करता है।

अध्याय 59

1 (यह उस समय का प्रधान बजानेवाला अल्तास्कीत, जो दाऊद का मिक्ताम था; जब शाऊल ने उसे मार डालने के लिये घर पर घात लगाने के लिये भेजा था।) हे मेरे परमेश्वर, मुझे मेरे शत्रुओं से बचा; जो मेरे विरुद्ध उठते हैं उनसे मेरी रक्षा कर।
2 मुझे कुटिल काम करनेवालों से बचाओ, और हत्यारों से बचाओ।
3 क्योंकि देखो, वे मेरे प्राण की घात में बैठे हैं; हे यहोवा, मेरे अपराध वा पाप के कारण नहीं, परन्तु बलवन्त लोग मेरे विरुद्ध इकट्ठे हुए हैं।
4 वे मेरे बिना किसी दोष के दौड़ते और तैयारी करते हैं; मेरी सहायता करने के लिये जागें, और देखें।
5 इसलिये हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, हे इस्राएल के परमेश्वर, तू सब जातियों का दण्ड लेने के लिये जाग! किसी दुष्ट और अपराधी पर दया मत कर। सेला।
6 वे सांझ को लौटकर कुत्ते की नाईं शोर मचाते हुए नगर के चारों ओर घूमते हैं।
7 देखो, वे अपने मुंह से डकार लेते हैं, उनके होठों में तलवारें हैं; वे कहते हैं, कौन सुनता है?
8 परन्तु हे यहोवा, तू उन पर हंसेगा; तू सब जातियों को ठट्ठों में उड़ाएगा।
9 उसके बल के कारण मैं तेरी बाट जोहता रहूंगा, क्योंकि परमेश्वर मेरा गढ़ है।
10 मेरा दयालु परमेश्वर मुझे रोकेगा; परमेश्वर मेरे शत्रुओं पर मेरी इच्छा को पूरा करेगा।
11 उन्हें न मार, कहीं ऐसा न हो कि मेरी प्रजा भूल जाए; अपनी शक्ति से उन्हें तितर-बितर कर; और हे यहोवा, हमारी ढाल, उन्हें नीचे गिरा दे।
12 उनके मुँह के पाप और उनके होठों के वचनों के कारण वे अपने घमण्ड में फँसे जाएँ, और जो शाप वे बोलते हैं और झूठ बोलते हैं, उसके कारण वे फँसे जाएँ।
13 क्रोध में आकर उन्हें भस्म कर दे, भस्म कर दे, कि वे रहें ही न; और वे जानें कि परमेश्वर याकूब में पृथ्वी की छोर तक राज्य करता है। सेला।
14 और सांझ को वे लौटकर कुत्ते की नाईं शोर मचाते हुए नगर के चारों ओर घूमें।
15 वे भोजन के लिये इधर उधर भटकें, और यदि तृप्त न हों, तो कुढ़ें।
16 परन्तु मैं तेरे पराक्रम का जयजयकार करूंगा; हां, मैं प्रातकाल तेरी करूणा का जयजयकार ऊंचे स्वर से करूंगा; क्योंकि तू मेरे संकट के दिन मेरा गढ़ और शरणस्थान ठहरा है।
17 हे मेरे बल, मैं तेरा भजन गाऊंगा, क्योंकि परमेश्वर मेरा गढ़ और मेरी करुणा का परमेश्वर है।

अध्याय 60

1 (यह गीत शूशनदूत के मुख्य बजानेवाले दाऊद के मिक्ताम के पास था, जो शिक्षा देने के लिये आया था; जब वह अरम्नहरैम और अरम्जोबा से लड़ रहा था, और योआब ने लौटकर लोन की तराई में एदोमी के बारह हजार पुरूषों को मारा था।) हे परमेश्वर, तू ने हम को त्याग दिया, तू ने हम को तितर-बितर कर दिया, तू अप्रसन्न हुआ है; हे हमारे पास फिर आ।
2 तू ने पृथ्वी को कंपा दिया है; तू ने उसे तोड़ दिया है; उसकी दरारों को भर दे, क्योंकि वह थरथराती है।
3 तू ने अपनी प्रजा को कठिन बातें दिखाई हैं; तू ने हमें अचम्भे की मदिरा पिलाई है।
4 तू ने अपने डरवैयों को एक झण्डा दिया है, कि वह सत्य के कारण फहराया जाए।
5 इसलिये कि तेरा प्रिय छुड़ाया जाए; अपने दाहिने हाथ से बचा, और मेरी सुन ले।
6 परमेश्वर ने अपनी पवित्रता में कहा है, मैं आनन्दित होऊंगा, मैं शकेम को बांट लूंगा, और सुक्कोत की तराई को नापूंगा।
7 गिलाद मेरा है, और मनश्शे भी मेरा है; एप्रैम मेरा सिर का गढ़ है; यहूदा मेरा व्यवस्थापक है;
8 मोआब मेरे धोने का पात्र है; एदोम पर मैं अपना जूता फेंकूंगा; हे पलिश्तियों, मेरे कारण जयवन्त हो।
9 कौन मुझे दृढ़ नगर में पहुंचाएगा? कौन मुझे एदोम में ले चलेगा?
10 हे परमेश्वर, तू जो हम को त्याग देता है, और हे परमेश्वर, तू जो हमारी सेनाओं के साथ नहीं जाता, क्या तू हमारी ओर नहीं देखता?
11 संकट में हमारी सहायता कर, क्योंकि मनुष्य की सहायता व्यर्थ है।
12 परमेश्वर की सहायता से हम वीरता से काम करेंगे, क्योंकि वही हमारे शत्रुओं को रौंदेगा।

अध्याय 61

1 (नेगिनाह के मुख्य संगीतकार के लिए, दाऊद का एक भजन।) हे परमेश्वर, मेरी पुकार सुन; मेरी प्रार्थना पर ध्यान दे।

2 जब मेरा हृदय व्याकुल हो जाएगा, तब मैं पृथ्वी की छोर से भी तेरी दोहाई दूंगा; मुझे उस चट्टान के पास ले चल जो मुझ से ऊंची है।
3 क्योंकि तू मेरे लिये शरणस्थान और शत्रु से बचाने वाला दृढ़ गढ़ है।
4 मैं तेरे तम्बू में सदा वास करूंगा, मैं तेरे पंखों की ओट में शरण लूंगा। सेला।
5 क्योंकि हे परमेश्वर, तू ने मेरी मन्नतें सुनी हैं; तू ने मुझे अपने नाम के डरवैयों का भाग दिया है।
6 तू राजा की आयु को बढ़ाएगा, और उसकी आयु कई पीढ़ियों के बराबर होगी।
7 वह परमेश्वर के सम्मुख सर्वदा बना रहेगा; हे दया और सच्चाई को तैयार करो, जो उसकी रक्षा करें।
8 मैं सदा तेरे नाम का भजन गाता रहूंगा, जिस से मैं प्रतिदिन अपनी मन्नतें पूरी कर सकूं।

अध्याय 62

1 (प्रधान गायक यदूतून के नाम, दाऊद का एक भजन) सचमुच मेरा प्राण परमेश्वर पर आशा लगाए हुए है; उसी से मेरा उद्धार होता है।
2 वही मेरी चट्टान और मेरा उद्धार है; वही मेरा गढ़ है; मैं बहुत विचलित नहीं होऊंगा।
3 तुम कब तक किसी मनुष्य के विरुद्ध बुराई की कल्पना करते रहोगे? तुम सब के सब मारे जाओगे; झुकी हुई भीत और डगमगाती हुई बाड़ के समान हो जाओगे।
4 वे केवल उसको उसके महान् पद से गिराने की युक्ति करते हैं; वे झूठ से प्रसन्न होते हैं; वे मुंह से तो आशीर्वाद देते हैं, पर मन ही मन शाप देते हैं।
5 हे मेरे मन, परमेश्वर ही पर भरोसा रख; क्योंकि मेरी आशा उसी से है।
6 वही मेरी चट्टान और मेरा उद्धार है; वही मेरा गढ़ है; मैं न डगमगाऊंगा।
7 परमेश्वर में ही मेरा उद्धार और मेरी महिमा है; परमेश्वर ही मेरी शक्ति की चट्टान और मेरा शरणस्थान है।
8 हे लोगो, हर समय उस पर भरोसा रखो; उससे अपने मन की बातें खोलकर कहो; परमेश्वर हमारा शरणस्थान है।
9 निश्नन्देह, नीच मनुष्य व्यर्थ हैं, और ऊंचे मनुष्य झूठ हैं; तराजू में रखे जाने पर वे व्यर्थ से भी अधिक हलके हैं।
10 अन्धेर पर भरोसा मत रखो, और लूटने में व्यर्थ न सोचो; चाहे धन बढ़ जाए, तौभी उस पर मन मत लगाओ।
11 परमेश्वर ने एक बार कहा है; मैं ने यह बात दो बार सुनी है; कि सामर्थ परमेश्वर की है।
12 हे यहोवा, दया भी तेरे ही हाथ में है, क्योंकि तू हर एक को उसके काम के अनुसार फल देता है।

अध्याय 63

1 (दाऊद का एक भजन, जब वह यहूदा के जंगल में था।) हे परमेश्वर, तू मेरा परमेश्वर है; मैं तुझे सवेरे ढूँढूंगा: मेरा प्राण तेरा प्यासा है, मेरा शरीर सूखी और प्यासी भूमि पर जहां जल नहीं है, तेरे लिए तरसता है;
2 कि मैं तेरी सामर्थ्य और महिमा को देखूं, जैसा कि मैं ने तुझे पवित्रस्थान में देखा है।
3 क्योंकि तेरी करुणा जीवन से भी उत्तम है, इसलिये मैं तेरी स्तुति करूंगा।
4 इसी प्रकार मैं जीवन भर तुझे आशीर्वाद देता रहूंगा; मैं तेरे नाम पर अपने हाथ उठाऊंगा।
5 मेरा मन मांस और चिकनाई से तृप्त होगा, और मैं आनन्द से तेरी स्तुति करूंगा।
6 जब मैं बिछौने पर पड़ा तेरा स्मरण करूंगा, और रात के एक एक पहर में तुझ पर ध्यान करूंगा।
7 इसलिये कि तू मेरा सहायक बना है, मैं तेरे पंखों की छाया में आनन्दित रहूंगा।
8 मेरा प्राण तेरे पीछे पीछे चलता है; तू अपने दाहिने हाथ से मुझे सम्भालता है।
9 परन्तु जो मेरे प्राण के खोजी हैं, वे पृथ्वी की निचली जगहों में चले जाएंगे।
10 वे तलवार से मारे जाएंगे; वे लोमड़ियों का भाग ठहरेंगे।
11 परन्तु राजा परमेश्वर के कारण आनन्दित होगा; जो कोई उसकी शपथ खाए वह बड़ाई खाएगा; परन्तु जो झूठ बोलते हैं उनका मुंह बन्द रहेगा।

अध्याय 64

1 (प्रमुख संगीतकार के लिए, दाऊद का एक भजन।) हे परमेश्वर, मेरी प्रार्थना में मेरी आवाज सुनो: शत्रु के भय से मेरे जीवन की रक्षा करो।
2 मुझे दुष्टों की गुप्त युक्ति से, और अनर्थकारियों के उपद्रव से छिपा रख!
3 वे अपनी जीभ को तलवार की नाईं तीखा करते और अपने धनुष को चढ़ाकर कड़वे वचनों के बाण चलाते हैं।
4 ताकि वे गुप्त में खरे मनुष्य पर तीर चलाएं; वे अचानक उस पर तीर चलाते हैं, और उन्हें कोई डर नहीं होता।
5 वे बुरे काम करने में अपने आप को उत्साहित करते हैं; वे छिपकर जाल बिछाने की बात कहते हैं; वे कहते हैं, उन्हें कौन देखेगा?
6 वे अधर्म की खोज करते हैं; वे यत्न से जांच करते हैं; उन में से हर एक के मन का विचार और हृदय गम्भीर है।
7 परन्तु परमेश्वर उन पर तीर चलाएगा; वे अचानक घायल हो जाएंगे।
8 इस प्रकार वे अपनी जीभ को अपने ऊपर गिराएंगे; जितने उन्हें देखेंगे वे सब भाग जाएंगे।
9 और सब मनुष्य डरेंगे और परमेश्वर के कामों का वर्णन करेंगे; क्योंकि वे उसके कामों पर बुद्धि से विचार करेंगे।
10 धर्मी लोग यहोवा के कारण आनन्दित होंगे, और उस पर भरोसा रखेंगे; और सब सीधे मनवाले घमण्ड करेंगे।

अध्याय 65

1 (प्रमुख संगीतकार के लिए, दाऊद का एक भजन और गीत।) हे परमेश्वर, सिय्योन में स्तुति तेरी बाट जोह रही है, और तेरे लिये मन्नत पूरी की जाएगी।
2 हे प्रार्थना सुनने वाले, सब प्राणी तेरे पास आएंगे।

3 अधर्म मेरे विरुद्ध प्रबल हुआ है; हमारे अपराधों को तू दूर कर
देगा।
4 धन्य है वह मनुष्य, जिसे तू चुनकर अपने निकट आने देता है,
कि वह तेरे आंगनों में वास करे! हम तेरे भवन और तेरे पवित्र
मन्दिर की उत्तम वस्तुओं से तृप्त होंगे।
5 हे हमारे उद्धार करनेवाले परमेश्वर, तू तो पृथ्वी के दूर दूर देशों
और समुद्र पार के देशों के भी आधार ठहरता है, और तू धर्म के
साथ भयानक काम करके हमारी सुन लेगा।
6 जो अपनी सामर्थ्य से पहाड़ों को स्थिर रखता है, और शक्ति से
कटिबद्ध है।
7 जो समुद्र के कोलाहल, उसकी लहरों के कोलाहल और लोगों
के कोलाहल को शान्त कर देता है।
8 दूर दूर के रहने वाले तेरे चिन्हों से डरते हैं; तू सवेरे और सांझ
को आनन्दित करता है।
9 तू पृथ्वी पर भ्रमण करता है और उसे सींचता है; तू उसे परमेश्वर
की नदी के जल से भरपूर करता है; तू उसके लिये अन्न तैयार
करता है, जब तू उसके लिये अन्न तैयार करता है।
10 तू उसकी पहाड़ियों को बहुतायत से सींचता है, तू उसकी
नालियों को बसाता है, तू वर्षा करके उसे नरम बनाता है, तू
उसके फूटने को आशीर्वाद देता है।
11 तू वर्ष को अपनी उत्तमता से सुशोभित करता है, और तेरे
मार्गों से उत्तमता बरसती है।
12 वे जंगल की चराइयों पर गिरते हैं, और चारों ओर की
पहाड़ियाँ आनन्दित होती हैं।
13 चरागाहें भेड़-बकरियों से भरी हुई हैं; घाटियाँ भी अनाज से
भरी हुई हैं; वे भी खुशी से चिल्लाते हैं, वे भी गाते हैं।

अध्याय 66

1 (मुख्य संगीतकार के लिए, एक गीत या भजन।) हे सब देशों के
लोगो, परमेश्वर के लिए आनन्द से जयजयकार करो:
2 उसके नाम का गुणगान गाओ, उसकी स्तुति महिमा से करो।
3 परमेश्वर से कहो, तेरे काम कितने भयानक हैं! तेरी महान
शक्ति के कारण तेरे शत्रु तेरे अधीन हो जाएंगे।
4 सारी पृथ्वी के लोग तुझे दण्डवत् करेंगे, और तेरा भजन गाएंगे;
वे तेरे नाम का भजन गाएंगे। सेला।
5 आओ और परमेश्वर के काम देखो! वह मनुष्यों के साथ बहुत
भयानक काम करता है।
6 उसने समुद्र को सूखी भूमि बना दिया; लोग पैदल ही बाढ़ में से
गुजर गए: वहाँ हम उसके कारण आनन्दित हुए।
7 वह अपनी शक्ति से सदा प्रभुता करता है; उसकी आंखें जाति
जाति पर लगी रहती हैं; बलवा करनेवाले लोग घमण्ड न करें।
सेला।
8 हे लोगो, हमारे परमेश्वर को धन्य कहो, और उसकी स्तुति का
शब्द ऊंचा करो।
9 वह हमारे प्राण को जीवित रखता है, और हमारे पैरों को
डगमगाने नहीं देता।
10 क्योंकि हे परमेश्वर, तू ने हम को जांचा है; तू ने हम को ऐसा
परखा है, जैसा चान्दी को परखा जाता है।
11 तू ने हम को जाल में फंसाया है; तू ने हमारी कमर में क्लेश
डाल दिया है।
12 तूने लोगों को हमारे सिरों के ऊपर से चलाया; हम आग और
पानी में से होकर गए; परन्तु तू ने हमें निकालकर सुखी स्थान में
पहुंचा दिया।
13 मैं होमबलि लेकर तेरे घर में आऊंगा, मैं अपनी मन्नतें पूरी
करूंगा,
14 जो मेरे होठों ने कहा, और मेरे मुँह ने तब बोला, जब मैं संकट
में था।
15 मैं तेरे लिये मोटे पशुओं का होमबलि, और मेढ़ों का धूप
चढ़ाऊंगा; मैं बकरों समेत बैल भी चढ़ाऊंगा। (सेला)
16 हे परमेश्वर से डरने वालो, तुम सब आकर सुनो; मैं बताऊंगा
कि उसने मेरे लिये क्या क्या किया है।
17 मैं ने अपने मुंह से उसको पुकारा, और मेरी जीभ से उसकी
बड़ाई हुई।
18 यदि मैं अपने मन में अधर्म की बात सोचता रहूं, तो यहोवा
मेरी न सुनेगा,
19 परन्तु सचमुच परमेश्वर ने मेरी सुन ली है; उसने मेरी प्रार्थना
पर ध्यान दिया है।
20 धन्य है परमेश्वर, जिसने मेरी प्रार्थना और अपनी दया मुझ से
दूर नहीं की।

अध्याय 67

1 (नेगिनोथ के मुख्य संगीतकार के लिए, एक भजन या गीत।)
परमेश्वर हम पर दया करें, और हमें आशीर्वाद दें; और अपने
चेहरे को हम पर चमकाएं; सेला।
2 कि तेरा मार्ग पृथ्वी पर जाना जाए, और तेरा उद्धार सब जातियों
में प्रगट हो।
3 हे परमेश्वर, लोग तेरी स्तुति करें; सब लोग तेरी स्तुति करें।
4 हे जाति जाति के लोग आनन्दित हों और जयजयकार करें;
क्योंकि तू देश देश के लोगों का न्याय धर्म से करेगा, और पृथ्वी के
राष्ट्रों पर राज्य करेगा। सेला।
5 हे परमेश्वर, लोग तेरी स्तुति करें; सब लोग तेरी स्तुति करें।
6 तब भूमि अपनी उपज उपजाएगी, और हमारा परमेश्वर जो
हमारा निज परमेश्वर है, हमें आशीष देगा।
7 परमेश्वर हमें आशीष देगा, और पृथ्वी के दूर दूर देशों के लोग
उसका भय मानेंगे।

अध्याय 68

1 (प्रमुख संगीतकार के लिए, एक भजन या दाऊद का गीत।)
परमेश्वर उठे, उसके शत्रु तितर-बितर हो जाएं; जो उससे घृणा
करते हैं वे भी उसके सामने से भाग जाएं।
2 जैसे धुआँ उड़ा दिया जाता है, वैसे ही उनको भगा दे; जैसे मोम
आग के सामने पिघल जाता है, वैसे ही दुष्ट लोग परमेश्वर के
सामने नाश हो जाएँ।
3 परन्तु धर्मी लोग आनन्दित हों, वे परमेश्वर के सामने मगन हों, वे
बहुत ही मगन हों।
4 परमेश्वर का गीत गाओ, उसके नाम का भजन गाओ; जो यहोवा
नाम से आकाश पर सवार होकर आता है, उसकी स्तुति करो,
और उसके साम्हने आनन्दित होओ।
5 परमेश्वर अपने पवित्र धाम में अनाथों का पिता और विधवाओं
का न्यायी है।

6 परमेश्वर अनाथों को घर बसाता है, और बन्धे हुओं को निकालता है; परन्तु हठीले लोग सूखी भूमि पर रहते हैं।
7 हे परमेश्वर, जब तू अपनी प्रजा के आगे आगे चलता था, जब तू जंगल में होकर चलता था,
8 परमेश्वर के आगमन से पृथ्वी काँप उठी, आकाश भी गिर पड़ा; परमेश्वर, अर्थात् इस्राएल के परमेश्वर के आगमन से सीनै भी हिल गया।
9 हे परमेश्वर, तू ने बहुत वर्षा की, और जब तेरा निज भाग थका हुआ था, तब तू ने उसे दृढ़ किया।
10 तेरी मण्डली वहां वास करती है; हे परमेश्वर, तू ने अपनी भलाई से दीन-दुखियों के लिये तैयारी की है।
11 यहोवा ने वचन दिया: उसे सुनाने वालों का समूह बड़ा था।
12 राजा और सेनाएं भाग गईं, और जो घर पर रह गईं, उन्होंने लूट बांट ली।
13 चाहे तुम बर्तनों के बीच में लेट जाओ, तौभी तुम कबूतर के समान होगे जिसके पंख चांदी से और पर पीले सोने से मढ़े हुए हों।
14 जब सर्वशक्तिमान ने उस में राजाओं को तितर-बितर किया, तब वह सलमोन में बर्फ की नाईं उजला हो गया।
15 परमेश्वर का पहाड़ बाशान के पहाड़ के समान है; वह बाशान के पहाड़ के समान ऊंचा है।
16 हे ऊंचे पहाड़ों, तुम क्यों उछलते हो? यह वही पहाड़ है जिस पर परमेश्वर वास करना चाहता है; हां, यहोवा उस में सदा वास किए रहेगा।
17 परमेश्वर के रथ बीस हजार हैं, अर्थात् स्वर्गदूत हजारों हैं; यहोवा उनके बीच में वैसे ही है जैसे पवित्र स्थान सीनै में है।
18 तू ऊंचे स्थान पर चढ़ा, तू ने बन्दियों को बंदी बना लिया; तू ने मनुष्यों के लिये दान ग्रहण किए; हां, बलवाइयों के लिये भी, कि यहोवा परमेश्वर उनके मध्य वास करे।
19 धन्य है प्रभु, जो प्रतिदिन हमें लाभ से लदा रहता है, वह हमारा उद्धारकर्ता परमेश्वर है। सेला।
20 हमारा परमेश्वर, उद्धार करने वाला परमेश्वर है; और मृत्यु से बचने का उपाय भी प्रभु परमेश्वर ही से है।
21 परन्तु परमेश्वर अपने शत्रुओं के सिर पर, और ऐसे मनुष्य के रोएँदार सिर पर घाव करेगा जो अपने अपराधों में आगे बढ़ता रहता है।
22 यहोवा ने कहा, मैं अपनी प्रजा को बाशान से लौटा ले आऊंगा, मैं अपनी प्रजा को समुद्र की गहराइयों से लौटा ले आऊंगा।
23 ताकि तेरा पांव तेरे शत्रुओं के खून में डूब जाए, और तेरे कुत्तों की जीभ भी उसी में डूब जाए।
24 हे परमेश्वर, उन्होंने तेरे चलने को देखा है, मेरे परमेश्वर, मेरे राजा के चलने को भी पवित्रस्थान में देखा है।
25 गायक आगे-आगे चलते थे, और बाजे बजाने वाले पीछे-पीछे चलते थे; और उनके बीच में डफ बजाने वाली लड़कियाँ भी चलती थीं।
26 हे इस्राएल के सोते से यहोवा परमेश्वर को, सभाओं में धन्य कहो।
27 वहाँ छोटे बिन्यामीन और उनके शासक, यहूदा के हाकिम और उनकी परिषद, जबूलून के हाकिम और नप्ताली के हाकिम हैं।
28 तेरे परमेश्वर ने तेरी सामर्थ्य की आज्ञा दी है; हे परमेश्वर, जो कुछ तू ने हमारे लिये किया है, उसे दृढ़ कर।
29 यरूशलेम में तेरे मन्दिर के कारण राजा तेरे पास भेंट लाएंगे।
30 भालों के झुण्ड को, और बैलों की भीड़ को, और लोगों के बछड़ों को डांट, जब तक कि वे सब चान्दी के टुकड़े लेकर आत्मसमर्पण न कर दें; तू युद्ध में आनन्दित लोगों को तितर-बितर कर दे।
31 मिस्र से हाकिम निकलेंगे; कूश शीघ्र ही अपने हाथ परमेश्वर की ओर फैलाएगा।
32 हे पृथ्वी के राज्य राज्य के लोगो, परमेश्वर का भजन गाओ; हे यहोवा का भजन गाओ!
33 जो प्राचीनकाल से भी ऊंचे आकाश पर सवार होकर आता है, देखो, वह अपना शब्द सुनाता है, और वह बड़ा भारी शब्द है।
34 परमेश्वर को सामर्थ्य मानो! उसका प्रताप इस्राएल पर है, और उसकी सामर्थ्य बादलों में है।
35 हे परमेश्वर, तू अपने पवित्र स्थानों में से भी भयानक है; इस्राएल का परमेश्वर वह है जो अपने लोगों को बल और शक्ति देता है। परमेश्वर धन्य है।

अध्याय 69

1 (शोशन्निम के प्रधान संगीतकार के लिए, दाऊद का एक भजन।) हे परमेश्वर, मुझे बचा लो; क्योंकि जल मेरे प्राण में आ गया है।
2 मैं गहरी दलदल में धंस गया हूं, जहां खड़ा रहना संभव नहीं है; मैं गहरे पानी में आ गया हूं जहां धाराएं मुझे डुबा देती हैं।
3 मैं रोते-रोते थक गया हूं, मेरा गला सूख गया है, अपने परमेश्वर की बाट जोहते-जोहते मेरी आंखें नम हो गई हैं।
4 जो अकारण मुझ से बैर रखते हैं, वे मेरे सिर के बालों से भी अधिक हैं; जो मेरे शत्रु हैं, जो अन्याय से मुझे नाश करना चाहते हैं, वे बलवान हैं; तब जो मैं ने नहीं छीना था, उसे मैं ने फेर दिया।
5 हे परमेश्वर, तू मेरी मूर्खता को जानता है; और मेरे पाप तुझ से छिपे नहीं हैं।
6 हे सेनाओं के यहोवा, हे प्रभु, जो तेरे आसरे हैं, वे मेरे कारण लज्जित न हों; हे इस्राएल के परमेश्वर, जो तेरे खोजी हैं, वे मेरे कारण लज्जित न हों।
7 क्योंकि तेरे कारण मुझे निन्दा सहनी पड़ी है, और मेरा मुख लज्जा से ढका है।
8 मैं अपने भाइयों के लिये अजनबी और अपनी माँ के बच्चों के लिये पराया हो गया हूँ।
9 क्योंकि तेरे भवन की धुन ने मुझे भस्म कर दिया है, और जो लोग तेरी निन्दा करते थे, उनकी निन्दा मुझ पर पड़ी है।
10 जब मैं रोता था और उपवास करके अपने प्राण को दण्ड देता था, तब मेरी निन्दा होती थी।
11 फिर मैं ने टाट को अपना वस्त्र बना लिया, और मैं उनकी कहावत बन गई।
12 जो फाटक पर बैठते हैं वे मेरे विरुद्ध बातें करते हैं; और मतवाले मेरे विषय में गीत गाते हैं।
13 परन्तु हे यहोवा, मेरी प्रार्थना तेरे सम्मुख स्वीकार्य समय पर है; हे परमेश्वर, अपनी बड़ी करूणा से, और अपने सच्चे उद्धार से मेरी सुन ले।
14 मुझे कीचड़ से निकालो, और डूबने न दो; मुझे अपने बैरियों से और गहरे जल से बचा लो।
15 जल की धारा मुझे न डुबाए, न गहरा जल मुझे डुबाए, और न गड़हा अपना मुंह मुझ पर बन्द करे।
16 हे यहोवा, मेरी सुन ले, क्योंकि तेरी करूणा उत्तम है; अपनी बड़ी दया के अनुसार मेरी ओर फिर।

17 अपने दास से अपना मुख न छिपा; क्योंकि मैं संकट में हूं; फुर्ती करके मेरी सुन ले।
18 मेरे निकट आ और उसे छुड़ा ले; मेरे शत्रुओं से मुझे छुड़ा ले।
19 तू मेरी निन्दा, लज्जा और अनादर को जानता है; मेरे सब विरोधी तेरे साम्हने हैं।
20 मेरा हृदय निन्दा से टूट गया है, और मैं बहुत उदास हूं। मैं ने किसी तरस खाने वाले को ढूंढ़ा, परन्तु किसी को नहीं पाया; और शान्ति देने वाले को ढूंढ़ा, परन्तु किसी को नहीं पाया।
21 उन्होंने मुझे खाने के लिये पित्त दिया, और प्यास बुझाने के लिये मुझे सिरका पिलाया।
22 उनकी मेज़ उनके लिये फंदा बन जाए, और जो उनके लिये लाभदायक हो, वह जाल बन जाए।
23 उनकी आंखों पर अन्धेरा छा जाए कि वे न देख सकें; और उनकी कटि लगातार कांपती रहे।
24 उन पर अपना क्रोध उण्डेल, और अपना भड़कता हुआ कोप उन पर भड़कने दे।
25 उनके घर उजड़ जाएं, और उनके डेरों में कोई न रहे।
26 क्योंकि जिसे तू ने मारा है, वे उसके पीछे पड़े हैं; और जिन को तू ने घायल किया है, उनके दुख की चर्चा वे करते हैं।
27 उनके अधर्म पर अधर्म बढ़ा, और वे तेरे धर्म में प्रवेश न करने पाएं।
28 उनका नाम जीवितों की पुस्तक में से मिटा दिया जाए, और धर्मियों के साथ न लिखा जाए।
29 परन्तु मैं तो दीन और दुखी हूं; हे परमेश्वर, तू अपना उद्धार करके मुझे ऊंचे स्थान पर स्थापित कर।
30 मैं गीत गाकर परमेश्वर के नाम की स्तुति करूंगा, और धन्यवाद करके उसकी बड़ाई करूंगा।
31 यहोवा को यह सींग और खुर वाले बैल से अधिक प्रिय होगा।
32 नम्र लोग यह देखकर आनन्दित होंगे, और परमेश्वर के खोजियों का हृदय जीवित रहेगा।
33 क्योंकि यहोवा कंगालों की सुनता है, और अपने बन्धुओं को तुच्छ नहीं जानता।
34 आकाश और पृथ्वी, समुद्र और उनमें जितने जन्तु हैं, सब उसकी स्तुति करें।
35 क्योंकि परमेश्वर सिय्योन को बचाएगा, और यहूदा के नगरों को बसाएगा; कि लोग वहां बसकर उसका अधिकारी हो जाएं।
36 उसके दासों की सन्तान उसका अधिकारी होगी, और उसके नाम से प्रेम रखनेवाले उसमें बसे रहेंगे।

अध्याय 70

1 (प्रधान संगीतकार के लिए, दाऊद का एक भजन, स्मरण दिलाने के लिए।) हे परमेश्वर, मुझे छुड़ाने के लिए जल्दी कर; हे यहोवा, मेरी सहायता करने के लिए जल्दी कर।
2 जो मेरे प्राण के खोजी हैं वे लज्जित और लज्जित हों; जो मेरी हानि की अभिलाषा करते हैं वे पीछे हटें और लज्जित हों।
3 जो लोग अहा, अहा कहते हैं, वे अपनी लज्जा के बदले में लौट जाएं।
4 जितने तुझे ढूंढ़ते हैं वे सब तेरे कारण आनन्दित और प्रसन्न हों; और जो तेरे उद्धार की लालसा रखते हैं वे निरन्तर कहते रहें, कि परमेश्वर की बड़ाई हो!
5 परन्तु मैं तो दीन और दरिद्र हूं; हे परमेश्वर, मेरे पास फुर्ती कर; तू ही मेरा सहायक और छुड़ानेवाला है; हे यहोवा, विलम्ब न कर।

अध्याय 71

1 हे यहोवा, मैं तुझी पर भरोसा रखता हूं; मुझे कभी लज्जित न होने दे।
2 अपने धर्म के अनुसार मुझ को छुड़ा और छुड़ा; अपना कान मेरी ओर लगाकर मेरा उद्धार कर।
3 हे मेरे लिये दृढ़ निवासस्थान बन, जिस में मैं नित्य शरण ले सकूं; तू ने मुझे बचाने की आज्ञा दी है; क्योंकि तू ही मेरी चट्टान और गढ़ है।
4 हे मेरे परमेश्वर, मुझे दुष्टों, अधर्मियों और क्रूर मनुष्यों के हाथ से बचा!
5 क्योंकि हे प्रभु यहोवा, तू ही मेरी आशा है, बचपन से मेरा भरोसा तू ही है।
6 गर्भ ही से मैं तेरे द्वारा संभाला गया; तू ही वह है जिसने मुझे माता की कोख से निकाला; मैं निरन्तर तेरी ही स्तुति करता रहूंगा।
7 मैं बहुतों के लिये आश्चर्य का विषय हूं; परन्तु तू मेरा दृढ़ शरणस्थान है।
8 मेरा मुंह तेरी स्तुति से और दिन भर तेरी महिमा से भरा रहे।
9 बुढ़ापे के समय मुझे त्याग न दे; जब मेरा बल घट जाए तब मुझे न छोड़ दे।
10 क्योंकि मेरे शत्रु मेरे विरुद्ध बातें करते हैं, और मेरे प्राण की घात में बैठे हुए लोग आपस में सम्मति करते हैं,
11 कि परमेश्वर ने उसे त्याग दिया है, इसलिये उसे सताओ और पकड़ लो, क्योंकि उसका कोई छुड़ानेवाला नहीं।
12 हे परमेश्वर, मुझ से दूर न रह; हे मेरे परमेश्वर, मेरी सहायता के लिये फुर्ती कर।
13 जो मेरे प्राण के शत्रु हैं वे लज्जित हों और नाश हो जाएं; जो मेरी हानि के यत्न करते हैं वे निन्दा और अनादर से ढक जाएं।
14 परन्तु मैं निरन्तर आशा रखता रहूंगा, और तेरी स्तुति अधिक अधिक करता रहूंगा।
15 मैं अपने मुंह से तेरे धर्म और उद्धार का वर्णन दिन भर करता रहूंगा; क्योंकि मैं उनकी गिनती नहीं जानता।
16 मैं प्रभु यहोवा की शक्ति से चलूंगा; मैं केवल तेरे ही धर्म की चर्चा करूंगा।
17 हे परमेश्वर, तू मुझे बचपन ही से सिखाता आया है, और अब तक मैं तेरे आश्चर्यकर्मों का वर्णन करता आया हूँ।
18 अब जब मैं बूढ़ा हो जाऊं और मेरे बाल पक जाएं, तब भी हे परमेश्वर, तू मुझे न छोड़, जब तक मैं तेरा बल इस पीढ़ी के लोगों को और तेरा पराक्रम सब उत्पन्न होने वालों को न दिखाऊं।
19 हे परमेश्वर, तेरा धर्म अति महान है, तू ने बड़े बड़े काम किए हैं; हे परमेश्वर, तेरे तुल्य कौन है?
20 तू ने मुझे बड़े बड़े और कठिन कष्ट दिखाए हैं, अब तू मुझे जिलाएगा, और पृथ्वी की गहराइयों में से फिर ऊपर ले आएगा।
21 तू मेरी महानता को बढ़ाएगा, और हर ओर से मुझे शान्ति देगा।
22 हे मेरे परमेश्वर, मैं भी वीणा बजाकर तेरा भजन गाऊंगा, हे इस्राएल के पवित्र, मैं वीणा बजाकर तेरा भजन गाऊंगा।
23 जब मैं तेरा भजन गाऊंगा तब मेरे होंठ और मेरा प्राण भी बहुत आनन्दित होंगे, जिसे तू ने छुड़ाया है।
24 मेरी जीभ दिन भर तेरे धर्म की चर्चा करती रहेगी; क्योंकि जो मेरी हानि के खोजी हैं, वे लज्जित और लज्जित हुए हैं।

अध्याय 72

1 (सुलैमान के लिए एक भजन) हे परमेश्वर, राजा को अपने नियम बता, और राजकुमार को अपना धर्म बता।
2 वह तेरे लोगों का न्याय धर्म से, और तेरे दरिद्रों का न्याय न्याय से करेगा।
3 पहाड़ लोगों को शांति प्रदान करेंगे, और छोटी पहाड़ियाँ धर्म के द्वारा शांति प्रदान करेंगी।
4 वह प्रजा के दीन लोगों का न्याय करेगा, वह दरिद्रों की सन्तानों को बचाएगा, और अत्याचारी को टुकड़े टुकड़े करेगा।
5 जब तक सूर्य और चन्द्रमा रहेंगे, तब तक लोग पीढ़ी-पीढ़ी तक तेरा भय मानते रहेंगे।
6 वह कटी हुई घास पर वर्षा की नाईं उतरेगा, और भूमि को सींचने वाली वर्षा की नाईं उतरेगा।
7 उसके दिनों में धर्मी लोग फूले फलेंगे, और जब तक चन्द्रमा बना रहेगा तब तक बहुत शान्ति रहेगी।
8 वह समुद्र से समुद्र तक, और महानद से पृथ्वी की छोर तक प्रभुता करेगा।
9 जंगल में रहनेवाले उसके साम्हने सिर झुकाएंगे, और उसके शत्रु धूल चाटेंगे।
10 तर्शीश और द्वीपों के राजा भेंट ले आएंगे; शबा और सबा के राजा भेंट ले आएंगे।
11 सब राजा उसके साम्हने दण्डवत् करेंगे, सब जातियां उसके अधीन होंगी।
12 क्योंकि वह दरिद्र को, जब वह दोहाई दे, तब छुड़ाता है; और कंगाल को, और असहाय को भी छुड़ाता है।
13 वह दरिद्र और दरिद्र को छोड़ देगा, और दरिद्रों के प्राणों को बचाएगा।
14 वह उनके प्राणों को छल और उपद्रव से छुड़ाएगा, और उनका लोहू उसकी दृष्टि में अनमोल ठहरेगा।
15 और वह जीवित रहेगा, और उसे शबा का सोना दिया जाएगा; और उसके लिये निरन्तर प्रार्थना की जाएगी, और प्रतिदिन उसकी स्तुति की जाएगी।
16 पहाड़ों की चोटियों पर धरती पर मुट्ठी भर अनाज होगा, उसके फल लबानोन की तरह लहराएंगे, और नगर के लोग धरती की घास की तरह लहलहाएंगे।
17 उसका नाम सदा तक बना रहेगा; जब तक सूर्य रहेगा तब तक उसका नाम बना रहेगा; और मनुष्य उसके द्वारा धन्य होंगे: सभी राष्ट्र उसे धन्य कहेंगे।
18 धन्य है यहोवा परमेश्वर, इस्राएल का परमेश्वर, जो अद्‌भुत काम करता है!
19 और उसका महिमामय नाम सदा धन्य माना जाए: और सारी पृथ्वी उसकी महिमा से परिपूर्ण हो; आमीन, फिर आमीन।
20 यिशै के पुत्र दाऊद की प्रार्थना समाप्त हुई।

अध्याय 73

1 (आसाप का भजन) सचमुच परमेश्वर इस्राएल के प्रति भला है, अर्थात शुद्ध मन वालों के प्रति।
2 परन्तु मैं तो लगभग थक चुका था; मेरे तो कदम फिसलने ही वाले थे।
3 क्योंकि जब मैं ने दुष्टों का कुशल क्षेम देखा, तब मैं मूर्खों के विषय डाह करने लगा।
4 क्योंकि उनकी मृत्यु में कोई बन्धन नहीं, परन्तु उनका बल दृढ़ है।
5 वे दूसरे मनुष्यों के समान संकट में नहीं पड़ते, और न वे दूसरे मनुष्यों के समान संकट में पड़ते हैं।
6 इसलिये अहंकार उनको जंजीरों के समान घेरे रहता है, और उपद्रव उनको वस्त्र के समान ओढ़ लेता है।
7 उनकी आंखें मोटापे से भरी हुई हैं, और उनके पास दिल की इच्छा से भी अधिक है।
8 वे भ्रष्ट हो गए हैं, और अन्धेर की बातें बोलते हैं; वे घमण्ड से बातें करते हैं।
9 वे आकाश के विरुद्ध अपना मुंह खोलते हैं, और उनकी जीभ पृथ्वी पर चलती है।
10 इसलिये उसकी प्रजा यहां लौटती है, और उनके लिये पूरा कटोरा भर जल निचोड़ा जाता है।
11 और वे कहते हैं, परमेश्वर कैसे जानता है? और क्या परमप्रधान में कुछ ज्ञान है?
12 देखो, ये वे दुष्ट लोग हैं जो संसार में समृद्ध होते हैं; वे धन-संपत्ति में बढ़ते हैं।
13 सचमुच, मैंने अपना हृदय व्यर्थ ही शुद्ध किया है, और अपने हाथों को निर्दोषता से धोया है।
14 क्योंकि दिन भर मैं त्रस्त रहता हूँ, और प्रति भोर को मेरी ताड़ना होती है।
15 यदि मैं ऐसा कहूं, तो देख, मैं तेरे वंश के लोगों के विरुद्ध अपराध करूंगा।
16 जब मैंने यह जानना चाहा तो मुझे बहुत दुख हुआ;
17 जब तक मैं परमेश्वर के पवित्रस्थान में न गया, तब मुझे उनका अन्त समझ में आया।
18 निश्चय तूने उन्हें फिसलने वाले स्थानों में खड़ा किया है; तूने उन्हें विनाश में गिरा दिया है।
19 वे कैसे क्षण भर में उजाड़ दिए गए हैं! वे भय से पूरी तरह नाश हो गए हैं।
20 जैसे जागने पर स्वप्न तुच्छ जान पड़ता है, वैसे ही हे यहोवा, जब तू जागेगा, तब तू उनकी मूरत को तुच्छ जान लेगा।
21 इस प्रकार मेरा हृदय दुखी हुआ, और मेरी नसें चुभ गईं।
22 मैं तो मूर्ख और अज्ञानी था; मैं तेरे साम्हने पशु के समान था।
23 तौभी मैं निरन्तर तेरे संग ही हूं; तू ने मेरे दाहिने हाथ को पकड़ रखा है।
24 तू अपनी सम्मति से मेरा मार्गदर्शन करेगा, और तब मुझे महिमा में अपने पास ले लेगा।
25 स्वर्ग में मेरा और कौन है? और पृथ्वी पर भी तेरे सिवा मुझे और कोई नहीं चाहिये।
26 मेरा शरीर और मन दोनों हार गए हैं; परन्तु परमेश्वर मेरे हृदय का दृढ़ गढ़ और सर्वदा मेरा भाग है।
27 क्योंकि देख, जो लोग तुझ से दूर रहते हैं वे नष्ट हो जाएंगे; तूने उन सब को नष्ट कर दिया है जो तुझ से व्यभिचार करते हैं।
28 परन्तु परमेश्वर के समीप रहना मेरे लिये भला है; मैं ने प्रभु यहोवा पर भरोसा रखा है, कि मैं तेरे सब कामों का वर्णन करूं।

अध्याय 74

1 (आसाफ़ की किताब) हे परमेश्वर, तूने हमें हमेशा के लिए क्यों त्याग दिया है? तेरे चरागाह की भेड़ों पर तेरा क्रोध क्यों भड़क रहा है?

2 अपनी मण्डली को स्मरण कर जिसे तू ने प्राचीनकाल में मोल लिया था, और अपने निज भाग की छड़ी को जिसे तू ने छुड़ाया था, और इस सिय्योन पर्वत को, जिस पर तू ने वास किया था।
3 अपने पांव सदा के उजाड़ की ओर उठाओ, अर्थात उन सब कामों की ओर जो शत्रु ने पवित्रस्थान में दुष्टता से किए हैं।
4 तेरे शत्रु तेरी मण्डली के बीच में गरजते हैं; वे चिन्ह के लिये अपनी झण्डियाँ खड़ी करते हैं।
5 एक आदमी इस कारण प्रसिद्ध हुआ कि उसने घने पेड़ों पर कुल्हाड़ी चलाई थी।
6 परन्तु अब वे उसकी नक्काशी को कुल्हाड़ियों और हथौड़ों से तुरन्त तोड़ डालते हैं।
7 उन्होंने तेरे पवित्रस्थान में आग फूंक दी है, और तेरे नाम के निवासस्थान को भूमि पर गिराकर उसे अशुद्ध कर दिया है।
8 और उन्होंने मन में कहा, आओ, हम मिलकर उनको नाश करें; उन्होंने देश में परमेश्वर की सब आराधनालयों को जला दिया है।
9 हम अपने चिन्ह नहीं देखते, न कोई भविष्यद्वक्ता रहा, और न हमारे बीच कोई जानता है कि यह कब तक रहेगा।
10 हे परमेश्वर, शत्रु कब तक तेरी निन्दा करते रहेंगे? क्या शत्रु सदा तेरे नाम की निन्दा करते रहेंगे?
11 तू अपना दाहिना हाथ क्यों खींच लेता है? उसे अपनी छाती से हटा ले!
12 क्योंकि परमेश्वर मेरा प्राचीन राजा है, और पृथ्वी के बीच में उद्धार का कार्य करता है।
13 तूने अपनी शक्ति से समुद्र को दो भागों में बाँट दिया; तूने जल में अजगरों के सिर तोड़ डाले।
14 तूने लिव्यातान के सिर टुकड़े टुकड़े कर दिए, और उसे जंगल में रहने वालों का आहार बना दिया।
15 तूने सोते और बाढ़ को रोक दिया, तूने बड़ी बड़ी नदियों को सुखा दिया।
16 दिन तेरा है, रात भी तेरी है; उजियाला और सूर्य भी तू ही ने तैयार किया है।
17 तूने पृथ्वी की सारी सीमाएँ निर्धारित की हैं; तूने धूपकाल और शीतकाल बनाए हैं।
18 हे यहोवा, स्मरण रख, कि शत्रु ने तेरी निन्दा की है, और मूर्ख लोगों ने तेरे नाम की निन्दा की है।
19 अपने कबूतर के प्राण को दुष्टों की भीड़ को न सौंप; अपने दीन जनों की मण्डली को सदा के लिये न भूल।
20 वाचा का पालन करो, क्योंकि पृथ्वी के अन्धकारमय स्थान क्रूरता के घरों से भरे हुए हैं।
21 दबे-कुचले लोग लज्जित होकर न लौटें; दीन-दुखी लोग तेरे नाम की स्तुति करें।
22 हे परमेश्वर, उठ, अपना मुकद्दमा लड़; स्मरण कर कि मूर्ख मनुष्य प्रतिदिन तेरी निन्दा करता है।
23 अपने शत्रुओं का शब्द मत भूलना; तेरे विरुद्ध उठनेवालों का कोलाहल निरन्तर बढ़ता ही रहता है।

अध्याय 75

1 (मुख्य संगीतकार के लिए, अल्तास्चीथ, एक भजन या आसाप का गीत।) हे परमेश्वर, हम तेरा धन्यवाद करते हैं, हम तेरा धन्यवाद करते हैं; क्योंकि तेरा नाम निकट है, तेरे आश्चर्यकर्मों की घोषणा करते हैं।
2 जब मैं मण्डली को ग्रहण करूंगा तब मैं खराई से न्याय करूंगा।
3 पृथ्वी और उसके सब रहनेवाले नाश हो गए हैं; मैं उसके खम्भों को उठाए रहूंगा। (सेला)
4 मैं ने मूर्खों से कहा, मूर्खता मत करो; और दुष्टों से कहा, सींग मत ऊंचा करो।
5 अपना सींग ऊंचा मत करो, और न कठोर स्वर में बोलो।
6 क्योंकि उन्नति न तो पूर्व से आती है, न पश्चिम से, न दक्षिण से।
7 परन्तु परमेश्वर ही न्यायी है; वह एक को गिराता, और दूसरे को स्थापित करता है।
8 क्योंकि यहोवा के हाथ में एक कटोरा है, और उसका दाखमधु लाल है; वह मिश्रण से भरा हुआ है; और वह उस में से उंडेलता भी है; परन्तु पृथ्वी के सब दुष्ट उसका निचोड़ निकालकर पी जाते हैं।
9 परन्तु मैं सदा प्रगट करूंगा, मैं याकूब के परमेश्वर का भजन गाऊंगा।
10 दुष्टों के सब सींग मैं काट डालूंगा; परन्तु धर्मियों के सींग ऊंचे किए जाएंगे।

अध्याय 76

1 (नेगिनोथ के मुख्य संगीतकार के लिए, एक भजन या आसाप का गीत।) यहूदा में परमेश्वर जाना जाता है: उसका नाम इस्राएल में महान है।
2 शालेम में भी उसका निवासस्थान है, और सिय्योन में उसका निवासस्थान है।
3 वहाँ उसने धनुष के तीर चलाए, ढाल, तलवार और युद्ध के हथियार भी चलाए।
4 तू तो शिकार के पहाड़ों से भी अधिक महिमावान और उत्तम है।
5 साहसी लोग लूटे गए, वे गहरी नींद में सो गए; और पराक्रमी पुरूष हाथ न आए।
6 हे याकूब के परमेश्वर, तेरी डांट से रथ और घोड़े दोनों गहरी नींद में चले जाते हैं।
7 तू तो डरने योग्य है; और जब तू क्रोधित हो जाए, तब कौन तेरे साम्हने खड़ा रह सकेगा?
8 तूने स्वर्ग से न्याय की ध्वनि बुलवाई; पृथ्वी डर गई और शान्त हो गई,
9 जब परमेश्वर न्याय करने को उठा, कि पृथ्वी के सब नम्र लोगों का उद्धार करे।
10 निश्चय मनुष्य का क्रोध तेरी प्रशंसा करेगा; और शेष क्रोध को तू रोक लेगा।
11 अपने परमेश्वर यहोवा के लिये मन्नत मानो और उसे चुकाओ; उसके आस पास के सब रहनेवाले उसी भययोग्य के लिये भेंट ले आएं।
12 वह हाकिमों की हिम्मत तोड़ देगा, वह पृथ्वी के राजाओं के लिये भयानक है।

अध्याय 77

1 (प्रधान गायक यदूतून के लिये, आसाप का भजन) मैं ने ऊंचे शब्द से परमेश्वर को पुकारा, हां, ऊंचे शब्द से परमेश्वर को पुकारा; और उसने मेरी ओर कान लगाया।

2 संकट के दिन मैं यहोवा की खोज में लगा रहा; मेरा घाव रात में
भी बढ़ता रहा, और रुकता नहीं; मेरा मन शान्ति पाने से इन्कार
करता रहा।
3 मैं ने परमेश्वर को स्मरण किया, और व्याकुल हुआ; मैं ने
शिकायत की, और मेरा मन घबरा गया।
4 तू मेरी आंखों को जगाए रखता है; मैं इतना व्याकुल हूं कि बोल
नहीं सकता।
5 मैं प्राचीनकाल के दिनों को, और प्राचीनकाल के वर्षों को ध्यान
से देखता हूँ।
6 मैं रात को अपना गीत स्मरण करता हूं; मैं अपने हृदय से बातें
करता हूं; और मेरी आत्मा यत्नपूर्वक खोज करती है।
7 क्या यहोवा सदा के लिये त्याग देगा? क्या वह फिर कभी
अनुग्रह न करेगा?
8 क्या उसकी करुणा सदा के लिये जाती रही? क्या उसका वचन
सदा के लिये निष्फल हो गया है?
9 क्या परमेश्वर अनुग्रह करना भूल गया है? क्या उसने क्रोध में
आकर अपनी दया बन्द कर दी है? सेला।
10 तब मैं ने कहा, यह तो मेरी दुर्बलता है, परन्तु मैं परमप्रधान के
दाहिने हाथ के वर्षों को स्मरण करूंगा।
11 मैं यहोवा के कामों को स्मरण करूंगा; निश्चय मैं तेरे
प्राचीनकाल के आश्चर्यकर्मों को स्मरण करूंगा।
12 मैं तेरे सब कामों पर ध्यान करूंगा, और तेरे बड़े कामों की
चर्चा करूंगा।
13 हे परमेश्वर, तेरा मार्ग पवित्रस्थान में है; हमारे परमेश्वर के तुल्य
कौन बड़ा परमेश्वर है?
14 तू ही अद्‌भुत काम करनेवाला परमेश्वर है; तू ने देश देश के
लोगों में अपना पराक्रम प्रगट किया है।
15 तू ने अपने भुजबल से अपनी प्रजा, अर्थात् याकूब और यूसुफ
की सन्तान को छुड़ाया है। सेला।
16 हे परमेश्वर, जल ने तुझे देखा, जल ने तुझे देखकर डर गए;
गहिरा सागर भी व्याकुल हो गया।
17 बादलों ने जल बरसाया, आकाश से शब्द निकला, तेरे तीर
इधर उधर चले।
18 तेरे गरजने का शब्द आकाश में गूंज उठा, और बिजली से
जगत चमक उठा, और पृथ्वी थरथरा उठी।
19 तेरा मार्ग समुद्र में है, और तेरा पथ महाजल में है, परन्तु तेरे
पदचिह्न ज्ञात नहीं हैं।
20 तूने मूसा और हारून के द्वारा अपनी प्रजा की अगुवाई भेड़ों
के समान की।

अध्याय 78

1 (आसाफ़ की पुस्तक) हे मेरे लोगों, मेरी व्यवस्था पर कान
लगाओ; मेरे मुँह के वचनों की ओर कान लगाओ।
2 मैं दृष्टान्त कहने के लिए अपना मुँह खोलूँगा, मैं प्राचीन काल की
गुप्त बातें कहूँगा:
3 जो हम ने सुना और जाना है, और जिसे हमारे पूर्वजों ने हम से
कहा है।
4 हम इन्हें उनकी सन्तान से गुप्त न रखेंगे, परन्तु आनेवाली पीढ़ी
के लोगों को यहोवा का गुणानुवाद, उसकी सामर्थ्य, और उसके
किए हुए आश्चर्यकर्मों का वर्णन करते रहेंगे।
5 क्योंकि उसने याकूब में एक गवाही स्थापित की, और इस्राएल
में एक व्यवस्था नियुक्त की, जिसे उसने हमारे पूर्वजों को आज्ञा
दी, कि वे इसे अपने बच्चों को बताएं:
6 कि आनेवाली पीढ़ी के लोग, अर्थात् जो सन्तान उत्पन्न होनेवाली
है, वे उन्हें जानें; और वे उठकर अपने अपने सन्तान को इनका
वर्णन करें।
7 कि वे परमेश्वर पर आशा रखें, और परमेश्वर के कामों को न
भूलें, परन्तु उसकी आज्ञाओं को मानते रहें।
8 और अपने पुरखाओं के समान न हों, जो हठीले और बलवा
करनेवाले थे; ऐसे लोग अपना मन सीधा न रखते थे, और न
उनकी आत्मा परमेश्वर पर स्थिर रही।
9 एप्रैम के लोग हथियार और धनुष धारण करके युद्ध के दिन
पीछे हट गए।
10 उन्होंने परमेश्वर की वाचा का पालन नहीं किया, और उसकी
व्यवस्था पर चलने से इनकार कर दिया;
11 और उसके कामों को, और आश्चर्यकर्मों को जो उस ने किए थे,
भूल गए।
12 मिस्र देश के सोअन नामक मैदान में उसने उनके पूर्वजों के
देखते अद्‌भुत काम किए।
13 उसने समुद्र को दो भाग करके उन्हें पार करा दिया, और जल
को ढेर के समान खड़ा कर दिया।
14 दिन को वह बादल के द्वारा, और सारी रात अग्नि के प्रकाश
के द्वारा उनकी अगुवाई करता रहा।
15 उसने जंगल में चट्टानें चीरकर उन्हें ऐसा पिलाया मानो वह
गहरे सागर से पानी ला रहा हो।
16 उसने चट्टान से नदियाँ निकालीं, और नदियों का सा जल
बहाया।
17 और उन्होंने जंगल में परमप्रधान को क्रोधित करके उसके
विरुद्ध और भी पाप किया।
18 और उन्होंने अपनी वासना के अनुसार भोजन मांगकर मन में
परमेश्वर की परीक्षा की।
19 हां, उन्होंने परमेश्वर के विरुद्ध बातें कीं; उन्होंने कहा, क्या
परमेश्वर जंगल में मेज लगा सकता है?
20 देख, उसने चट्टान पर मारा, और जल फूट निकला, और
नदियां बहने लगीं; क्या वह अपनी प्रजा को रोटी भी दे सकता है?
क्या वह अपने लोगों को मांस भी दे सकता है?
21 यह सुनकर यहोवा क्रोधित हुआ, और याकूब के विरुद्ध आग
भड़क उठी, और इस्राएल पर भी क्रोध भड़का;
22 क्योंकि उन्होंने परमेश्वर पर विश्वास नहीं किया, और न उसके
उद्धार पर भरोसा किया।
23 यद्यपि उसने ऊपर से बादलों को आज्ञा दी थी, और स्वर्ग के
द्वार खोल दिये थे,
24 और उन पर खाने के लिये मन्ना बरसाया, और उन्हें आकाश
का अन्न दिया।
25 मनुष्य ने स्वर्गदूतों का भोजन खाया: उसने उन्हें भरपूर भोजन
भेजा।
26 उसने आकाश में पुरवाई बहाई, और अपनी शक्ति से
दक्षिणाई हवा भेजी।
27 फिर उसने उन पर मांस धूल के समान और पक्षी समुद्र की
बालू के समान बरसाए।
28 और उसने उसको उनकी छावनी के बीच, उनके घरों के
चारों ओर गिरा दिया।

29 सो उन्होंने खाया और तृप्त हुए, क्योंकि उसने उनकी इच्छा
पूरी की।
30 वे अपनी वासना से विमुख न हुए, परन्तु जब उनका भोजन
उनके मुंह में ही था,
31 परमेश्वर का क्रोध उन पर भड़का, और उसने उनके मोटे-
ताजे लोगों को मार डाला, और इस्राएल के चुने हुए लोगों को भी
मार डाला।
32 इन सब बातों पर भी वे पाप करते रहे और उसके आश्चर्यकर्मों
पर विश्वास न किया।
33 इस कारण उसने उनके दिन व्यर्थ में, और उनके वर्ष क्लेश में
बिताए।
34 जब वह उन्हें घात करता था, तब वे उसे ढूंढ़ते थे; और वे
फिरकर परमेश्वर से पूछताछ करने लगते थे।
35 और उन्होंने स्मरण किया कि परमेश्वर उनकी चट्टान है, और
महान परमेश्वर उनका छुड़ानेवाला है।
36 तौभी उन्होंने अपने मुंह से उसकी चापलूसी की, और अपनी
जीभ से उस से झूठ बोला।
37 क्योंकि उनका मन उसकी ओर सीधा न था, और न वे उसकी
वाचा में स्थिर रहे।
38 परन्तु वह दयालु होकर उनके अधर्म को क्षमा करता रहा,
और उन्हें नाश नहीं करता था; और कई बार उसने अपना क्रोध
शांत किया, और अपना पूरा क्रोध नहीं भड़काया।
39 क्योंकि उस ने स्मरण रखा कि वे तो मनुष्य हैं, और वायु हैं जो
चली जाती है और फिर नहीं आती।
40 कितनी बार उन्होंने जंगल में उसको क्रोध दिलाया, और
निर्जल देश में उसको उदास किया!
41 हां, उन्होंने फिरकर परमेश्वर की परीक्षा की, और इस्राएल के
पवित्र को बाधा पहुंचाई।
42 उन्होंने न तो उसका भुजबल स्मरण किया, और न वह दिन
जब उसने उन्हें शत्रुओं से बचाया था।
43 उसने मिस्र में अपने चिन्ह और सोअन के मैदान में अपने
चमत्कार कैसे दिखाए थे?
44 और उनकी नदियों को खून बना दिया था, और उनकी नदियों
को ऐसा गंदा कर दिया था कि वे पी नहीं सकते थे।
45 उसने उनके बीच तरह-तरह के मक्खियाँ भेजीं जो उन्हें खा
गईं और मेंढक भेजे जो उन्हें नाश कर गए।
46 और उसने उनकी उपज कीड़ों को दे दी, और उनकी मेहनत
टिड्डियों को दे दी।
47 उसने उनकी दाखलताएँ ओलों से और उनके गूलर के पेड़ों
को पाले से नष्ट कर दिया।
48 उसने उनके पशुओं को ओलों से, और उनके झुण्डों को
बिजली के गरजने से मार डाला।
49 उसने उन पर अपना प्रचण्ड क्रोध, प्रकोप, क्रोध और संकट
उंडेला, और उनके बीच दुष्ट दूत भेजे।
50 उसने अपने क्रोध का मार्ग बनाया, और उनके प्राणों को मृत्यु
से न बचाया, परन्तु उनके प्राणों को महामारी के वश में कर दिया;
51 और मिस्र के सब पहलौठों को, जो हाम के तम्बुओं में उनके
मुख्य बलवान थे, मार डाला।
52 परन्तु अपनी प्रजा को भेड़ों के समान चलाया, और जंगल में
झुण्ड के समान उनकी अगुवाई की।
53 और वह उन्हें सुरक्षित रूप से ले गया, ताकि वे डरें नहीं:
लेकिन समुद्र उनके दुश्मनों को डुबो रहा था।
54 और वह उन्हें अपने पवित्रस्थान की सीमा तक, अर्थात् इस
पहाड़ तक ले आया, जिसे उसके दाहिने हाथ ने मोल लिया था।
55 फिर उसने उनके आगे से अन्यजातियों को भी निकाल दिया,
और उनको वंश-परंपरा से भाग बांट दिया, और इस्राएल के गोत्रों
को उनके तम्बुओं में बसा दिया।
56 तौभी उन्होंने परमप्रधान परमेश्वर की परीक्षा की और उसको
क्रोध दिलाया, और उसकी चितौनियों को न माना।
57 परन्तु वे फिरकर अपने पुरखाओं के समान विश्वासघात करने
लगे; वे छल करने वाले धनुष के समान भटक गए।
58 क्योंकि उन्होंने अपने ऊँचे स्थान बनाकर परमेश्वर को क्रोध
दिलाया, और अपनी खुदी हुई मूरतों से उसके मन में जलन पैदा
की।
59 जब परमेश्वर ने यह सुना, तो वह क्रोधित हुआ, और इस्राएल
से बहुत घृणा करने लगा।
60 यहां तक कि उसने शीलो के निवास को, उस तम्बू को जो
उसने मनुष्यों के बीच खड़ा किया था, त्याग दिया;
61 और उसकी सामर्थ्य को बन्दी बना कर, और उसकी महिमा
को शत्रुओं के हाथ में कर दिया।
62 उसने अपनी प्रजा को तलवार से मरवा डाला, और अपने
निज भाग से क्रोधित हुआ।
63 उनके जवान लड़के आग में भस्म हो गए, और उनकी
कुमारियाँ विवाह के योग्य न रहीं।
64 उनके याजक तलवार से मारे गए, और उनकी विधवाओं ने
विलाप नहीं किया।
65 तब प्रभु ऐसे जागा मानो कोई नींद से जाग उठा हो, और ऐसा
वीर हो जो मदिरा पीकर जयजयकार करता हो।
66 और उसने अपने शत्रुओं को पीछे से मारा; उसने उन्हें सदा के
लिये अपमानित कर दिया।
67 फिर उसने यूसुफ के तम्बू को अस्वीकार कर दिया, और
एप्रैम के गोत्र को न चुना।
68 परन्तु यहूदा के गोत्र को चुना, अर्थात सिय्योन पर्वत को जिस
से वह प्रेम रखता है।
69 और उसने अपने पवित्रस्थान को ऊंचे महलों के समान बनाया,
और उस भूमि के समान बनाया जिसे उसने सदा के लिये स्थिर
किया है।
70 फिर उसने अपने सेवक दाऊद को चुनकर भेड़शालाओं में से
ले लिया।
71 वह उसे बड़ी-बड़ी भेड़ों के पीछे-पीछे ले आया, कि वह
उसकी प्रजा याकूब और उसके निज भाग इस्राएल का चरवाहा
हो।
72 तब उसने अपने मन की खराई के अनुसार उन्हें चराया, और
अपने हाथों की कुशलता से उनकी अगुवाई की।

अध्याय 79

1 (आसाप का भजन) हे परमेश्वर, अन्यजातियां तेरे निज भाग में
घुस आई हैं; उन्होंने तेरे पवित्र मन्दिर को अपवित्र कर दिया है;
उन्होंने यरूशलेम को खण्डहर बना दिया है।
2 तेरे दासों की लोथें आकाश के पक्षियों को, और तेरे भक्तों का
मांस पृथ्वी के पशुओं को खिला दिया गया है।
3 उन्होंने उनका लोहू यरूशलेम के चारों ओर जल की नाईं बहा
दिया; और उन्हें मिट्टी देनेवाला कोई न रहा।

4 हम अपने पड़ोसियों के लिये नामधराई, और अपने चारों ओर रहने वालों के लिये उपहास और ठट्ठा का कारण हो गये हैं।
5 हे यहोवा, तू कब तक क्रोध करता रहेगा? क्या तेरी जलन आग की नाईं जलती रहेगी?
6 अपनी जलजलाहट उन जातियों पर उंडेल जो तुझे नहीं जानतीं, और उन राज्यों पर जो तेरा नाम नहीं लेते।
7 क्योंकि उन्होंने याकूब को निगल लिया, और उसके निवासस्थान को उजाड़ दिया है।
8 हे हमारे विरुद्ध किए हुए अधर्म को स्मरण न कर; अपनी दया से हम को शीघ्र बचा ले, क्योंकि हम बहुत ही दीन हो गए हैं।
9 हे हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर, अपने नाम की महिमा के लिये हमारी सहायता कर; अपने नाम के निमित्त हमें छुड़ा और हमारे पापों को दूर कर।
10 इसलिये अन्यजाति लोग यह क्यों कहने पाएं कि उनका परमेश्वर कहां है? अपने दासों के बहाए हुए लोहू के पलटा लेने से वह अन्यजातियों में हमारे साम्हने प्रगट हो जाए।
11 बन्दी की कराह तेरे सम्मुख आए; जो मरने के लिये ठहराए गए हैं, उनको अपनी बड़ी सामर्थ के अनुसार बचा ले;
12 और हे यहोवा, हमारे पड़ोसियों ने जो तेरी निन्दा की है, उसका सातगुणा बदला उन्हें दे।
13 इस प्रकार हम तेरी प्रजा और तेरी चराइयों की भेड़ें सर्वदा तेरा धन्यवाद करेंगे; हम पीढ़ी पीढ़ी में तेरा गुणानुवाद करते रहेंगे।

अध्याय 80

1 (शोशन्नीमेदूत के प्रधान गायक के लिये, आसाप का एक भजन।) हे इस्राएल के चरवाहे, कान लगाओ, हे यूसुफ को झुण्ड के समान ले चलनेवाले; हे करूबों के बीच रहनेवाले, चमक उठो।
2 एप्रैम, बिन्यामीन और मनश्शे के साम्हने अपनी शक्ति बढ़ा, और आकर हम को बचा।
3 हे परमेश्वर, हम को फेर ले आ, और अपने मुख का प्रकाश हम पर चमका; तब हम उद्धार पाएंगे।
4 हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, तू अपनी प्रजा की प्रार्थना पर कब तक क्रोध करता रहेगा?
5 तू उन्हें आँसुओं की रोटी खिलाता है, और उन्हें भरपूर आँसू पिलाता है।
6 तू हमें हमारे पड़ोसियों के बीच झगड़ा का कारण बनाता है, और हमारे शत्रु आपस में ठट्ठा करते हैं।
7 हे सेनाओं के परमेश्वर, हम को फेर ले आ, और अपने मुख का प्रकाश हम पर चमका; तब हम उद्धार पाएंगे।
8 तू मिस्र से एक दाखलता ले आया है; तू ने अन्यजातियों को निकाल कर उसे लगाया है।
9 तूने उसके आगे जगह तैयार की, और उसकी जड़ पकड़ी, और वह देश में फैल गई।
10 उसकी छाया से पहाड़ियां ढकी हुई थीं, और उसकी शाखाएं सुन्दर देवदारों के समान थीं।
11 उसने अपनी डालियाँ समुद्र तक और अपनी डालियाँ महानद तक फैला दीं।
12 फिर तूने उसकी बाड़ें क्यों तोड़ दीं, कि मार्ग से आने वाले सब लोग उसे तोड़ डालें?
13 जंगल में सूअर उसे उजाड़ देते हैं, और मैदान के पशु उसे खा जाते हैं।
14 हे सेनाओं के परमेश्वर, हम तुझ से बिनती करते हैं, लौट आ! स्वर्ग से नीचे दृष्टि करके इस दाखलता पर दृष्टि कर;
15 और वह दाख की बारी जो तेरे दाहिने हाथ ने लगाई, और वह शाखा जो तूने अपने लिये दृढ़ की है।
16 वह आग में जला दिया गया है, वह काट डाला गया है; वे तेरे मुख की डांट से नाश हो गए हैं।
17 तेरा हाथ तेरे दाहिने हाथ के पुरुष पर रहे, अर्थात उस आदमी पर जिसे तू ने अपने लिये दृढ़ किया है।
18 इसलिये हम तेरे पास से न लौटेंगे; हम को जिला, तब हम तेरा नाम लेंगे।
19 हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, हम को फेर ले आ, अपने मुख का प्रकाश हम पर चमका, तब हम बच जाएंगे।

अध्याय 81

1 (गिटित के प्रधान बजानेवाले के लिये, आसाप का भजन।) हमारे बल परमेश्वर का जयजयकार करो: याकूब के परमेश्वर का जयजयकार करो।
2 भजन ले लो, और डफ, और मधुर वीणा और सारंगी भी ले आओ।
3 नये चाँद के दिन, हमारे पवित्र पर्व के दिन, नियत समय पर, तुरही फूँको।
4 क्योंकि यह इस्राएल के लिये विधि, और याकूब के परमेश्वर का नियम था।
5 इसे उसने यूसुफ के द्वारा गवाही के लिये ठहराया, कि जब वह मिस्र देश से होकर जाता था, तब मैं ने वहां ऐसी भाषा सुनी, जिसे मैं समझता नहीं था।
6 मैं ने उसके कन्धे पर से बोझ उतार दिया, और उसके हाथ हण्डियों से छुड़ा लिये।
7 तू ने संकट में पुकारा, और मैं ने तुझे छुड़ाया; मैं ने गरजने के गुप्त स्थान में से तुझे उत्तर दिया; मैं ने मरीबा के सोते के पास तेरी परीक्षा की। (सेला)
8 हे मेरी प्रजा, सुन, मैं तुझे साक्षी देता हूं; हे इस्राएल, यदि तू मेरी बात मानेगा,
9 तेरे बीच कोई पराया देवता न हो, और न तू किसी पराये देवता की उपासना करना।
10 मैं तेरा परमेश्वर यहोवा हूं, जो तुझे मिस्र देश से निकाल लाया है; अपना मुंह खोल, और मैं उसे भर दूंगा।
11 परन्तु मेरी प्रजा ने मेरी बात न मानी, और इस्राएल ने मेरी बात न मानी।
12 इसलिये मैं ने उन्हें उनके मन की अभिलाषा पर छोड़ दिया, और वे अपनी ही युक्तियों के अनुसार चलते रहे।
13 भला होता कि मेरी प्रजा मेरी सुनती, और इस्राएल मेरे मार्गों पर चलता!
14 मैं शीघ्र ही उनके शत्रुओं को परास्त कर देता, और उनके विरोधियों के विरुद्ध अपना हाथ बढ़ाता।
15 यहोवा के बैरियों को तो उसके आधीन हो जाना चाहिए था, परन्तु उनका अन्त सदा बना रहता।
16 और वह उन्हें उत्तम से उत्तम गेहूँ खिलाता, और चट्टान में का मधु पिलाकर तुझे तृप्त करता।

अध्याय 82

1 (आसाप का भजन) परमेश्वर वीरों की सभा में खड़ा रहता है; वह देवताओं के बीच में न्याय करता है।
2 तुम कब तक अन्याय से न्याय करते रहोगे, और दुष्टों का पक्षपात करते रहोगे?
3 दीन-हीन और अनाथों की रक्षा करो; दीन-दुखियों और दरिद्रों का न्याय चुकाओ।
4 दीन-दुखियों को छुड़ाओ, दुष्टों के हाथ से उन्हें छुड़ाओ।
5 वे न तो कुछ जानते हैं, न कुछ समझेंगे; वे अन्धकार में चलते हैं; पृथ्वी की सारी नींव बिगड़ गई है।
6 मैं ने कहा है, तुम ईश्वर हो, और तुम सब के सब परमप्रधान की सन्तान हो।
7 परन्तु तुम मनुष्यों की नाईं मरोगे, और प्रधानों के समान गिरोगे।
8 हे परमेश्वर, उठ, पृथ्वी का न्याय कर; क्योंकि तू ही सब जातियों का अधिकारी होगा।

अध्याय 83

1 (आसाफ़ का एक गीत या भजन) हे परमेश्वर, चुप मत रह; हे परमेश्वर, चुप मत रह और स्थिर मत रह।
2 क्योंकि देख, तेरे शत्रु हुल्लड़ मचा रहे हैं, और तेरे बैरी सिर उठा रहे हैं।
3 उन्होंने तेरे लोगों के विरुद्ध धूर्त युक्ति की है, और तेरे गुप्त लोगों के विरुद्ध सम्मति की है।
4 उन्होंने कहा है, आओ, हम उनको जाति रहने से नाश करें; जिस से इस्राएल का नाम फिर स्मरण में न रहे।
5 क्योंकि वे एकमत होकर सम्मति करके तेरे विरुद्ध एक संगी हुए हैं।
6 एदोम और इश्माएलियों के तम्बू, मोआब और हगरेनियों के तम्बू,
7 गेबाल, अम्मोन, अमालेक, और सोर के निवासियों समेत पलिश्तियों;
8 अश्शूर भी उनके साथ मिल गया है, उन्होंने लूत की सन्तान की सहायता की है।
9 जैसा मिद्यानियों से किया, वैसा ही उन से भी कर, जैसे कीशोन नाले के पास सीसरा और याबीन से किया था,
10 जो एन्दोर में नाश हो गए, वे भूमि के लिये खाद के समान हो गए।
11 उनके रईसों को ओरेब और जेब के समान बना दे, और उनके सब हाकिमों को जेबह और सल्मुन्ना के समान बना दे।
12 वे कहते थे, आओ, हम परमेश्वर के घरों को अपने अधिकार में कर लें।
13 हे मेरे परमेश्वर, उनको पहिये के समान बना दे, और पवन के आगे चलनेवाली भूसी के समान बना दे।
14 जैसे आग लकड़ी को जला देती है, और ज्वाला पहाड़ों को जला देती है,
15 इसलिये तू अपनी आंधी से उनको सता, और अपनी आंधी से उनको डरा दे।
16 उनके मुखों को लज्जा से भर दे, तब वे तेरे नाम के खोजी होंगे, हे यहोवा!
17 वे सदा के लिये लज्जित और घबराए रहें; वे लज्जित हों और नष्ट हो जाएं।
18 ताकि लोग जानें कि केवल तू जिसका नाम यहोवा है, सारी पृथ्वी के ऊपर परमप्रधान है।

अध्याय 84

1 (गिटित के प्रधान बजानेवाले के लिये, कोरह के पुत्रों के लिये एक भजन।) हे सेनाओं के यहोवा, तेरे निवासस्थान क्या ही मनोहर हैं!
2 मेरा मन यहोवा के आंगनों के लिये अभिलाषा करता है, हां, मेरा शरीर और हृदय जीवते परमेश्वर को पुकारते हैं।
3 हे सेनाओं के यहोवा, हे मेरे राजा, और मेरे परमेश्वर, तेरी वेदियों पर गौरेया ने अपना बसेरा और सूपाबेनी ने अपना घोंसला बना लिया है, जहां वह अपने बच्चे रखेगी।
4 धन्य हैं वे जो तेरे भवन में रहते हैं, वे फिर तेरी स्तुति करते रहेंगे।
5 धन्य है वह मनुष्य जिसका बल तुझ पर है, और जिसके मार्ग उसके हृदय में हैं।
6 जो बाका नाम तराई से होकर जाते हैं, वे उसे कुआं बना देते हैं; और वर्षा की वर्षा से तालाब भर जाते हैं।
7 वे बल से बल पर बढ़ते हैं, सिय्योन में उनमें से हर एक परमेश्वर को अपना मुख दिखाता है।
8 हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन; हे याकूब के परमेश्वर, कान लगा। सेला।
9 हे परमेश्वर, हे हमारी ढाल, अपने अभिषिक्त के मुख पर दृष्टि कर।
10 क्योंकि तेरे आंगनों में बिताया एक दिन हजार दिन से उत्तम है। मैं अपने परमेश्वर के भवन में द्वारपाल रहना अधिक चाहता हूं, और दुष्टता के तम्बुओं में वास करना अधिक चाहता हूं।
11 क्योंकि यहोवा परमेश्वर सूर्य और ढाल है; यहोवा अनुग्रह और महिमा देगा; जो लोग धर्म से चलते हैं उनसे वह कोई अच्छी वस्तु न रोकेगा।
12 हे सेनाओं के यहोवा, क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो तुझ पर भरोसा रखता है!

अध्याय 85

1 (कोरह के पुत्रों के लिए मुख्य संगीतकार के नाम एक भजन।) हे यहोवा, तू अपने देश पर अनुग्रह करता है; तू याकूब को बन्दी बनाकर लौटा ले आया है।
2 तू ने अपनी प्रजा के अधर्म को क्षमा किया है, तू ने उनके सारे पाप को ढांप दिया है।
3 तू ने अपना सारा क्रोध दूर कर दिया है, तू ने अपने क्रोध की उग्रता को दूर कर दिया है।
4 हे हमारे उद्धारकर्त्ता परमेश्वर, हम पर कृपादृष्टि कर, और अपना क्रोध हम पर से हटा ले।
5 क्या तू हम पर सदा क्रोध करता रहेगा? क्या तू अपना क्रोध पीढ़ी-पीढ़ी तक भड़काता रहेगा?
6 क्या तू हम को फिर जिलाएगा नहीं, कि तेरी प्रजा तेरे कारण आनन्दित हो?
7 हे यहोवा, हम पर अपनी दया दिखा, और हमारा उद्धार कर।
8 मैं सुनूंगा कि परमेश्वर यहोवा क्या कहता है, क्योंकि वह अपनी प्रजा और अपने पवित्र लोगों से शान्ति की बातें कहेगा, परन्तु वे फिरकर मूर्खता की ओर न फिरें।

9 निश्चय उसके डरवैयों का उद्धार निकट है; और महिमा हमारे देश में वास करेगी।
10 दया और सच्चाई एक दूसरे से मिल गए हैं; धार्मिकता और शांति ने एक दूसरे को चूमा है।
11 सत्य पृथ्वी से उगेगा, और धर्म स्वर्ग से नीचे दिखेगा।
12 हां, यहोवा उत्तम वस्तु देगा, और हमारी भूमि अपनी उपज उपजाएगी।
13 धर्म उसके आगे आगे चलेगा, और हमें उसके पदचिह्नों के मार्ग पर चलाएगा।

अध्याय 86

1 (दाऊद की प्रार्थना) हे यहोवा, कान लगाकर मेरी सुन ले, क्योंकि मैं दीन और दरिद्र हूं।
2 हे मेरे परमेश्वर, मेरे प्राण की रक्षा कर, क्योंकि मैं पवित्र हूं; अपने दास को बचा, जो तुझ पर भरोसा रखता है।
3 हे यहोवा, मुझ पर दया कर, क्योंकि मैं प्रतिदिन तेरी दोहाई देता हूं।
4 अपने दास के मन को आनन्दित कर; क्योंकि हे यहोवा, मैं अपना मन तेरी ओर लगाता हूं।
5 क्योंकि हे प्रभु, तू भला और क्षमा करनेवाला है, और जितने तुझे पुकारते हैं उन सभों के लिये तू अति दयालु है।
6 हे यहोवा, मेरी प्रार्थना पर कान लगा, और मेरी गिड़गिड़ाहट पर ध्यान दे।
7 संकट के दिन मैं तुझ को पुकारूंगा, क्योंकि तू मुझे उत्तर देगा।
8 हे यहोवा, देवताओं में तेरे तुल्य कोई नहीं है; और न तेरे कामों के समान कोई काम है।
9 हे यहोवा, जितनी जातियां तू ने बनाई हैं वे सब आकर तेरे साम्हने दण्डवत् करेंगी, और तेरे नाम की महिमा करेंगी।
10 क्योंकि तू महान है, और आश्चर्यकर्म करता है; तू ही एकमात्र परमेश्वर है।
11 हे यहोवा, अपना मार्ग मुझे दिखा दे; मैं तेरे सत्य मार्ग पर चलूंगा; मुझ को अपने नाम का भय मानने के लिये एक कर।
12 हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मैं पूरे मन से तेरा धन्यवाद करूंगा, और तेरे नाम की महिमा सदा करता रहूंगा।
13 क्योंकि तेरी करूणा मुझ पर बड़ी है, और तू ने मेरे प्राण को अधोलोक की तह से बचाया है।
14 हे परमेश्वर, अभिमानी लोग मेरे विरुद्ध उठे हैं, और उपद्रवी लोगों की मण्डली मेरे प्राण की खोज में है; परन्तु उन्होंने तुझे अपने साम्हने नहीं रखा।
15 परन्तु हे यहोवा, तू दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवन्त, और अति करूणामय और सत्य परमेश्वर है।
16 हे मेरी ओर फिरकर मुझ पर दया कर; अपने दास को अपनी शक्ति दे, और अपनी दासी के बेटे का उद्धार कर।
17 मुझे भलाई का कोई चिन्ह दिखा, कि मेरे बैरी उसे देखकर लज्जित हों; क्योंकि हे यहोवा, तू ने मेरी सहायता की है और मुझे शान्ति दी है।

अध्याय 87

1 (कोरह के पुत्रों के लिए एक भजन या गीत।) उसकी नींव पवित्र पहाड़ों पर है।
2 यहोवा को सिय्योन के फाटक, याकूब के सब निवासों से अधिक प्रिय हैं।
3 हे परमेश्वर के नगर, तेरे विषय महिमा की बातें कही गई हैं।
4 मैं अपने जानने वालों से रहब और बाबुल की चर्चा करूंगा; देखो, पलिश्त और सोर और कूश को भी देखो; यह मनुष्य वहीं उत्पन्न हुआ।
5 और सिय्योन के विषय में यह कहा जाएगा, कि फलां पुरुष उस में उत्पन्न हुआ, और परमप्रधान आप ही उसे स्थिर करेगा।
6 जब यहोवा लोगों की गिनती करेगा, तब वह यह भी गिन लेगा कि यह मनुष्य वहीं उत्पन्न हुआ था।
7 वहाँ गायक और बाजे बजाने वाले दोनों होंगे; मेरे सारे सोते तुझ में हैं।

अध्याय 88

1 (कोरह के पुत्रों के लिए, महलत लीन्नोत के मुख्य संगीतकार, एज्रेही हेमान के मस्किल के लिए एक गीत या भजन।) हे मेरे उद्धारकर्ता परमेश्वर यहोवा, मैं दिन रात तेरे सामने पुकारता आया हूं:
2 मेरी प्रार्थना तेरे पास पहुंचे; मेरी पुकार की ओर कान लगा;
3 क्योंकि मेरा प्राण क्लेश से भरा है, और मेरा जीवन अधोलोक के निकट पहुंचा है।
4 मैं कबर में पड़ने वालों के समान गिना गया हूं; मैं बलहीन मनुष्य के समान हूं।
5 वे मरे हुओं के बीच स्वतंत्र हैं, और उन घात किए हुओं के समान हैं जो कब्र में पड़े हैं, जिन को तू फिर स्मरण नहीं करता; और वे तेरे हाथ से काट डाले गए हैं।
6 तूने मुझे सबसे निचले गड्ढे में, अंधकार में, गहरे गड्ढों में डाल दिया है।
7 तेरा क्रोध मुझ पर कठोर है, और तू ने अपनी सब लहरों से मुझे पीड़ित किया है। सेला।
8 तू ने मेरे मित्रों को मुझ से दूर कर दिया है; तू ने मुझे उनके लिये घृणित बना दिया है; मैं बन्द हो गया हूं, और बाहर नहीं निकल सकता।
9 मेरी आंखें संकट के कारण विलाप करती रहती हैं। हे यहोवा, मैं प्रति दिन तुझे पुकारता आया हूं, मैं ने अपने हाथ तेरी ओर फैलाए हैं।
10 क्या तू मरे हुओं को आश्चर्यकर्म दिखाएगा? क्या मरे हुए उठकर तेरी स्तुति करेंगे? सेला।
11 क्या तेरी करूणा अधोलोक में, वा तेरी सच्चाई विनाश के समय प्रगट की जाएगी?
12 क्या तेरे अद्भुत काम अन्धकार में, और तेरा धर्म विस्मृति के देश में जाना जाएगा?
13 परन्तु हे यहोवा, मैं ने तेरी दोहाई दी है; और भोर को मेरी प्रार्थना तेरे पास आएगी।
14 हे यहोवा, तू मेरे प्राण को क्यों त्याग देता है? तू अपना मुख मुझ से क्यों छिपा लेता है?
15 मैं बचपन से ही दुखी और मरने को तत्पर रहता हूँ; तेरे भय से व्याकुल होकर मैं व्याकुल हो जाता हूँ।
16 तेरे क्रोध की आग मुझ पर भड़क उठी है; तेरे भय ने मुझे काट डाला है।
17 वे प्रतिदिन जल की नाईं मेरे चारों ओर घूमते थे; वे मुझे चारों ओर से घेरे रहते थे।

18 तू ने प्रेमी और मित्र को मुझ से दूर कर दिया है, और मेरे परिचितों को अन्धकार में डाल दिया है।

अध्याय 89

1 (एतान एज्राही की कविता) मैं यहोवा की करूणा के विषय सदा गाता रहूंगा; मैं अपने मुंह से तेरी सच्चाई पीढ़ी पीढ़ी में प्रगट करूंगा।
2 क्योंकि मैं ने कहा है, कि करूणा सदा बनी रहेगी; तू अपनी सच्चाई को स्वर्ग में भी स्थापित करेगा।
3 मैं ने अपने चुने हुए से वाचा बान्धी है, मैं ने अपने दास दाऊद से शपथ खाई है,
4 मैं तेरे वंश को सदा स्थिर रखूंगा, और तेरी राजगद्दी को पीढ़ी पीढ़ी तक बनाए रखूंगा। सेला।
5 हे यहोवा, आकाश तेरे अद्‌भुत कामों की, और पवित्र लोगों की मण्डली में तेरी सच्चाई की प्रशंसा करेगा।
6 क्योंकि स्वर्ग में यहोवा के तुल्य कौन है? और वीरों में से कौन यहोवा के तुल्य ठहरेगा?
7 परमेश्वर पवित्र लोगों की मण्डली में अत्यन्त भययोग्य और अपने सब आस पास के लोगों में भययोग्य है।
8 हे सेनाओं के परमेश्वर यहोवा, तेरे तुल्य कौन सा बलवन्त यहोवा है? और तेरे चारों ओर की सच्चाई के तुल्य कौन सा बलवन्त यहोवा है?
9 तू समुद्र की उथल-पुथल पर शासन करता है; जब उसकी लहरें उठती हैं, तो तू उन्हें शांत कर देता है।
10 तूने रहब को घात किए हुए के समान टुकड़े टुकड़े कर दिया है; तू ने अपने शत्रुओं को अपने बलवन्त भुजबल से तितर बितर कर दिया है।
11 आकाश भी तेरा है, पृथ्वी भी तेरी है; जगत और जो कुछ उसमें है, उसकी नींव तू ही ने डाली है।
12 उत्तर और दक्खिन को तू ने रचा है; ताबोर और हेर्मोन तेरे नाम से आनन्दित होंगे।
13 तेरा बाहुबल बलवन्त है; तेरा हाथ बलवन्त है, और तेरा दहिना हाथ प्रबल है।
14 न्याय और न्याय तेरे सिंहासन का निवास हैं; करुणा और सच्चाई तेरे आगे आगे चलती हैं।
15 धन्य है वह जाति जो आनन्द के शब्द को पहचानती है! हे यहोवा, वे तेरे मुख के प्रकाश में चलेंगे!
16 तेरे नाम से वे दिन भर आनन्दित रहेंगे, और तेरे धर्म के कारण महान् बनेंगे।
17 क्योंकि तू ही उनकी शक्ति की महिमा है, और तेरे अनुग्रह से हमारा सींग ऊंचा होगा।
18 क्योंकि यहोवा हमारा गढ़ है, और इस्राएल का पवित्र हमारा राजा है।
19 तब तू ने अपने पवित्र जन से दर्शन में कहा था, मैं ने वीर को सहायता दी है; मैं ने प्रजा में से एक को चुना हुआ बढ़ाया है।
20 मुझे अपना दास दाऊद मिल गया है; मैंने अपने पवित्र तेल से उसका अभिषेक किया है।
21 जिस पर मेरा हाथ दृढ़ रहेगा, उसको मेरा भुजबल दृढ़ करेगा।
22 शत्रु उस पर अत्याचार न करेगा, न दुष्ट का पुत्र उसे कष्ट देगा।
23 मैं उसके शत्रुओं को उसके साम्हने परास्त करूंगा, और उसके बैरियों को मार डालूंगा।
24 परन्तु मेरी सच्चाई और करूणा उस पर बनी रहेंगी, और मेरे नाम से उसका सींग ऊंचा किया जाएगा।
25 मैं उसका हाथ समुद्र में और उसका दाहिना हाथ नदियों में चलाऊंगा।
26 वह मुझे पुकारकर कहेगा, तू मेरा पिता, मेरा परमेश्वर, और मेरे उद्धार की चट्टान है।
27 मैं उसे अपना जेठा भी बनाऊँगा, वह पृथ्वी के राजाओं से अधिक महान होगा।
28 मैं अपनी करुणा उस पर सदा बनाए रखूंगा, और मेरी वाचा उसके साथ बनी रहेगी।
29 मैं उसके वंश को सदा सर्वदा स्थिर रखूंगा, और उसकी राजगद्दी स्वर्ग के समान सदैव बनी रहेगी।
30 यदि उसके वंश के लोग मेरी व्यवस्था को त्याग दें, और मेरे नियमों पर न चलें,
31 यदि वे मेरी विधियों को तोड़ें और मेरी आज्ञाओं को न मानें,
32 तब मैं उनके अपराध का दण्ड सोंटे से, और उनके अधर्म का दण्ड कोड़ों से दूंगा।
33 तौभी मैं उस पर से अपनी करूणा पूरी तरह न हटाऊंगा, और न अपनी सच्चाई को न टालूंगा।
34 मैं अपनी वाचा न तोडूंगा, और जो बात मेरे मुंह से निकल गई है, उसे न बदलूंगा।
35 मैं ने एक बार अपनी पवित्रता की शपथ खाकर कहा है, कि मैं दाऊद से झूठ नहीं बोलूंगा।
36 उसका वंश सदा बना रहेगा, और उसका सिंहासन सूर्य की नाईं मेरे सम्मुख रहेगा।
37 वह सदा सर्वदा चन्द्रमा के समान, और आकाश में विश्वासयोग्य साक्षी के समान स्थिर रहेगा। सेला।
38 परन्तु तू ने अपने अभिषिक्त को त्याग दिया और उस से घृणा की, तू उस पर क्रोधित हुई है।
39 तूने अपने दास की वाचा तोड़ डाली; तूने उसका मुकुट भूमि पर गिराकर अपवित्र किया है।
40 तूने उसके सब बाड़ों को तोड़ डाला है; तूने उसके गढ़ों को उजाड़ दिया है।
41 मार्ग पर चलने वाले सब उसको लूटते हैं; और उसके पड़ोसी उसकी निन्दा करते हैं।
42 तूने उसके द्रोहियों का दाहिना हाथ बढ़ाया है; तूने उसके सब शत्रुओं को आनन्दित किया है।
43 तूने उसकी तलवार की धार भी मोड़ दी है, और उसे युद्ध में खड़ा नहीं रहने दिया है।
44 तूने उसकी महिमा को मिटा दिया है, और उसके सिंहासन को भूमि पर गिरा दिया है।
45 तू ने उसकी जवानी के दिन घटा दिए हैं, तू ने उसे लज्जा से ढक दिया है।
46 हे यहोवा, तू कब तक अपने को छिपाए रहेगा? क्या तेरा क्रोध आग की नाईं भड़केगा?
47 स्मरण कर कि मेरा समय कितना थोड़ा है; तूने सब मनुष्यों को क्यों व्यर्थ बनाया है?
48 वह कौन सा मनुष्य है जो जीवित रहते हुए मृत्यु को न देखे? क्या वह अपने प्राण को अधोलोक से बचा सकेगा?
49 हे प्रभु, तेरी पहिली करूणा कहां रही, जिसके विषय में तू ने दाऊद से सच्चाई से शपथ खाई थी?
50 हे यहोवा, अपने दासों की निन्दा स्मरण कर; मैं कैसे सब सामर्थी लोगों की निन्दा अपने हृदय में सहता हूं;

51 हे यहोवा, तेरे शत्रुओं ने तेरे अभिषिक्त के पदचिन्हों की निन्दा की है।
52 यहोवा सदा धन्य है। आमीन, और आमीन।

अध्याय 90

1 (परमेश्वर के जन मूसा की प्रार्थना) हे प्रभु, तू सभी पीढ़ियों में हमारा निवास स्थान रहा है।
2 इस से पहिले कि पहाड़ उत्पन्न हुए, वा तू ने पृथ्वी और जगत की रचना की, वरन अनादिकाल से अनन्तकाल तक तू ही परमेश्वर है।
3 तू मनुष्य को विनाश की ओर ले जाता है; और कहता है, हे मनुष्यों के सन्तानों, लौट आओ।
4 क्योंकि हजार वर्ष तेरी दृष्टि में ऐसे हैं जैसे कल का दिन जो बीत गया, और रात का एक पहर।
5 तू उन्हें नदी के समान बहा ले जाता है; वे नींद के समान हैं; भोर को वे घास के समान उगते हैं।
6 भोर को वह फूलती-फलती है, और बढ़ती है; और सांझ को वह कट जाती है, और मुर्झा जाती है।
7 क्योंकि हम तेरे क्रोध से भस्म हो गए हैं, और तेरे प्रकोप से घबरा गए हैं।
8 तूने हमारे अधर्म के कामों को अपने सम्मुख रखा है, और हमारे गुप्त पापों को अपने मुख की ज्योति में प्रगट किया है।
9 क्योंकि हमारे सब दिन तेरे क्रोध में बीत गए हैं; हमारे वर्ष कहानी के समान बीत गए हैं।
10 हमारे वर्षों के दिन सत्तर वर्ष के होते हैं; और यदि बल के कारण वे अस्सी वर्ष भी हों, तो भी उनका बल परिश्रम और शोक ही है; क्योंकि वह शीघ्र ही कट जाता है, और हम उड़ जाते हैं।
11 तेरे क्रोध की शक्ति को कौन जानता है? तेरे भय के अनुसार ही तेरा क्रोध भी होता है।
12 इसलिये हम को अपने दिन गिनना सिखा दे, कि हम बुद्धि की बातें सोचें।
13 हे यहोवा, तू कब तक लौटेगा? और अपने दासों के विषय में पश्चाताप करेगा।
14 हे अपनी करूणा से हमें शीघ्र संतुष्ट कर; कि हम जीवन भर आनन्दित और प्रसन्न रहें।
15 जितने दिन तू ने हमें दु:ख दिया, और जितने वर्ष हम ने दु:ख भोगा है, उसके अनुसार हमें आनन्द दे।
16 तेरे काम तेरे दासों को, और तेरी महिमा उनकी सन्तान को प्रगट हो।
17 और हमारे परमेश्वर यहोवा की मनोहरता हम पर बनी रहे; और तू हमारे हाथ के काम को हम पर दृढ़ कर; हां, हमारे हाथ के काम को दृढ़ कर।

अध्याय 91

1 जो परमप्रधान के छाए हुए स्थान में बैठा रहे, वह सर्वशक्तिमान की छाया में ठिकाना पाएगा।
2 मैं यहोवा के विषय कहूंगा, वह मेरा शरणस्थान और गढ़ है; वह मेरा परमेश्वर है, मैं उस पर भरोसा रखूंगा।
3 वह तुझे बहेलिये के जाल से, और महामारी से बचाएगा।
4 वह तुझे अपने पंखों की आड़ में ले लेगा, और तू उसके पंखों के नीचे शरण लेगा; उसकी सच्चाई तेरी ढाल और झिलम ठहरेगी।
5 तू न तो रात के भय से डरेगा, न दिन को उड़ते हुए तीर से;
6 न उस महामारी से जो अन्धकार में फैलती है, न उस महारोग से जो दिन-दोपहर उजाड़ता है।
7 तेरे निकट हजार, और तेरी दाहिनी ओर दस हजार गिरेंगे; परन्तु वह तेरे निकट न आएगा।
8 परन्तु तू अपनी आंखों से देखेगा और दुष्टों का अन्त देखेगा।
9 क्योंकि तू ने यहोवा को जो मेरा शरणस्थान है, और परमप्रधान को अपना धाम माना है;
10 कोई विपत्ति तुझ पर न पड़ेगी, न कोई दु:ख तेरे डेरे के निकट आएगा।
11 क्योंकि वह अपने स्वर्गदूतों को तेरे निमित्त आज्ञा देगा कि वे तेरे सब कामों में तेरी रक्षा करें।
12 वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे, कहीं ऐसा न हो कि तेरे पांवों में पत्थर से ठेस लगे।
13 तू सिंह और नाग को रौंदेगा, और जवान सिंह और अजगर को पैरों तले रौंदेगा।
14 उसने जो मुझ से प्रेम किया है, इसलिये मैं उसको छुड़ाऊंगा; मैं उसको ऊंचे स्थान पर रखूंगा, क्योंकि उसने मेरे नाम को जान लिया है।
15 वह मुझे पुकारेगा और मैं उसे उत्तर दूंगा; संकट में मैं उसके संग रहूंगा; मैं उसको छुड़ाऊंगा और उसकी महिमा करूंगा।
16 मैं उसको दीर्घायु से तृप्त करूंगा, और अपना उद्धार दिखाऊंगा।

अध्याय 92

1 (सब्त के दिन के लिए एक भजन या गीत।) यहोवा का धन्यवाद करना और हे परमप्रधान, तेरे नाम का भजन गाना अच्छी बात है:
2 कि तू प्रातकाल को अपनी करूणा और प्रति रात्रि अपनी सच्चाई प्रगट करे,
3 दस तार वाले बाजे और वीणा पर, और गम्भीर स्वर से वीणा बजाओ।
4 क्योंकि हे यहोवा, तू ने मुझे अपने कामों के कारण आनन्दित किया है; मैं तेरे हाथों के कामों के कारण जयवन्त हो जाऊंगा।
5 हे यहोवा, तेरे काम क्या ही बड़े हैं! और तेरे विचार बहुत गम्भीर हैं!
6 पशुवत मनुष्य यह नहीं जानता, और मूर्ख इसे नहीं समझता।
7 जब दुष्ट लोग घास की नाईं बढ़ते हैं, और जब सब अनर्थकारी फूलते हैं, तब वे सर्वदा के लिये नाश हो जाते हैं।
8 परन्तु हे यहोवा, तू तो सर्वदा परमप्रधान है।
9 क्योंकि हे यहोवा, तेरे शत्रु, तेरे शत्रु, तेरे शत्रु, तेरे शत्रु, सब अनर्थकारी तितर-बितर हो जाएंगे।
10 परन्तु तू मेरे सींग को एक सांड़ के सींग के समान ऊंचा करेगा; मैं ताजे तेल से अभिषेक करूंगा।
11 मेरी आंखें मेरे शत्रुओं के विषय मेरी अभिलाषा को देखेंगी, और मेरे कान मेरे विरुद्ध उठने वाले दुष्टों के विषय मेरी अभिलाषा को सुनेंगे।
12 धर्मी लोग खजूर के वृक्ष के समान फूले फलेंगे, वह लबानोन के देवदार के समान बढ़ेगा।
13 जो यहोवा के भवन में रोपे गए हैं, वे हमारे परमेश्वर के आंगनों में फूले-फलेंगे।
14 वे बुढ़ापे में भी फलते रहेंगे, वे मोटे और लहलहाते रहेंगे;

15 जिससे प्रगट हो कि यहोवा धर्मी है; वह मेरी चट्टान है, और उस में कुटिलता कुछ भी नहीं।

अध्याय 93

1 यहोवा राजा है, वह महाप्रताप से सुसज्जित है; यहोवा सामर्थ्य से सुसज्जित है, उसने अपनी कमर कस ली है; संसार भी ऐसा दृढ़ है कि वह हिल नहीं सकता।
2 तेरा सिंहासन बहुत काल से स्थिर है; तू अनादि काल से है।
3 हे यहोवा, बाढ़ें बढ़ गई हैं, बाढ़ें अपनी वाणी को ऊंची कर रही हैं; बाढ़ें अपनी लहरें उठा रही हैं।
4 यहोवा जो ऊंचे स्थान पर है, वह बहुत जल के कोलाहल से, हां, समुद्र की प्रचण्ड लहरों से भी अधिक शक्तिशाली है।
5 हे यहोवा, तेरी चितौनियाँ अति विश्वासयोग्य हैं; तेरा घराना सदैव पवित्रता को शोभा देता है।

अध्याय 94

1 हे यहोवा परमेश्वर, हे पलटा लेने वाले को अपना काम बता; हे परमेश्वर, हे पलटा लेने वाले को अपना काम बता!
2 हे पृथ्वी के न्यायी, उठ खड़ा हो! अभिमानियों को दण्ड दे!
3 हे यहोवा, दुष्ट लोग कब तक जयजयकार करते रहेंगे? दुष्ट लोग कब तक जयजयकार करते रहेंगे?
4 वे कब तक कठोर बातें बोलते रहेंगे, और सब अनर्थकारी कब तक घमण्ड करते रहेंगे?
5 हे यहोवा, वे तेरी प्रजा को तोड़ते हैं, और तेरे निज भाग को दु:ख देते हैं।
6 वे विधवा और परदेशी को घात करते हैं, और अनाथों को मार डालते हैं।
7 तौभी वे कहते हैं, यहोवा न देखेगा, याकूब का परमेश्वर इस पर ध्यान न देगा।
8 हे प्रजा के बीच में पशु-पक्षियों, समझ लो; परन्तु हे मूर्खो, तुम कब बुद्धिमान होगे?
9 जिसने कान लगाया, क्या वह नहीं सुनता? जिसने आंख बनाई, क्या वह नहीं देखता?
10 जो अन्यजातियों को ताड़ना करता है, क्या वह ताड़ना न करेगा? जो मनुष्य को ज्ञान सिखाता है, क्या वह न जानेगा?
11 यहोवा मनुष्य की कल्पनाओं को जानता है कि वे व्यर्थ हैं।
12 हे यहोवा, क्या ही धन्य है वह मनुष्य जिसको तू ताड़ना करता है, और अपनी व्यवस्था सिखाता है;
13 तू उसको विपत्ति के दिनों में विश्राम दे, जब तक कि दुष्टों के लिये गड्ढा खोदा न जाए।
14 क्योंकि यहोवा अपनी प्रजा को न त्यागेगा, न अपने निज भाग को त्यागेगा।
15 परन्तु न्याय फिर धर्म के अनुसार होगा, और सब सीधे मनवाले उसके पीछे हो लेंगे।
16 कुकर्मियों के विरुद्ध मेरी ओर से कौन खड़ा होगा? और कुटिल काम करनेवालों के विरुद्ध मेरी ओर से कौन खड़ा होगा?
17 यदि यहोवा मेरा सहायक न होता, तो मेरा प्राण चुपचाप पड़ा रहता।
18 जब मैं ने कहा, मेरा पांव फिसलने लगा है, तब हे यहोवा, तेरी करूणा ने मुझे थाम लिया।
19 जब मेरे मन में बहुत सी चिन्ताएं होती हैं, तब तेरे अनुग्रह से मेरा मन प्रसन्न होता है।
20 क्या अधर्म का सिंहासन तेरे साथ संगति करेगा, जो व्यवस्था की आड़ में उत्पात मचाता है?
21 वे धर्मी के प्राण के विरुद्ध इकट्ठे होते हैं, और निर्दोष की हत्या की निंदा करते हैं।
22 परन्तु यहोवा मेरा गढ़ है, और मेरा परमेश्वर मेरी शरण की चट्टान है।
23 और वह उनका अधर्म उन पर लौटा लाएगा, और उनकी दुष्टता में उन्हें नाश करेगा; हां, हमारा परमेश्वर यहोवा उन्हें नाश करेगा।

अध्याय 95

1 आओ, हम यहोवा का भजन गाएँ; अपने उद्धार की चट्टान का जयजयकार करें।
2 आओ, हम धन्यवाद करते हुए उसके सम्मुख आएं, और भजन गाते हुए उसका जयजयकार करें।
3 क्योंकि यहोवा महान ईश्वर है, और सब देवताओं के ऊपर महान राजा है।
4 पृथ्वी के गहिरे स्थान उसी के हाथ में हैं; पहाड़ों की दृढ़ता भी उसी की है।
5 समुद्र उसका है, उसने उसे बनाया है, और उसके हाथों ने सूखी भूमि बनाई है।
6 हे आओ, हम दण्डवत करें और झुकें; आओ, हम अपने रचयिता यहोवा के साम्हने घुटने टेकें।
7 क्योंकि वही हमारा परमेश्वर है, और हम उसकी चराई की प्रजा, और उसके हाथ की भेड़ें हैं। यदि आज तुम उसका शब्द सुनो,
8 अपना मन कठोर न करो, जैसा क्रोध के समय और परीक्षा के दिन जंगल में किया था।
9 जब तुम्हारे पूर्वजों ने मुझे परखा, मुझे परखा, और मेरे काम देखे।
10 चालीस वर्ष तक मैं इस पीढ़ी से रूठा रहा, और कहता रहा, ये लोग मन से भटके हुए हैं और इन्होने मेरे मार्गों को नहीं पहिचाना।
11 मैं ने क्रोध में आकर उन से शपथ खाई थी कि वे मेरे विश्राम में प्रवेश करने न पाएंगे।

अध्याय 96

1 यहोवा के लिये एक नया गीत गाओ; हे सारी पृथ्वी के लोगो, यहोवा के लिये गाओ!
2 यहोवा का गीत गाओ, उसके नाम को धन्य कहो; दिन प्रति दिन उसके उद्धार का समाचार सुनाओ।
3 अन्यजातियों में उसकी महिमा का, और सब देशों के लोगों में उसके आश्चर्यकर्मों का वर्णन करो।
4 क्योंकि यहोवा महान और अति स्तुति के योग्य है; वह तो सब देवताओं से अधिक भययोग्य है।
5 क्योंकि अन्यजातियों के सब देवता तो मूरतें ही हैं, परन्तु यहोवा ने स्वर्ग को बनाया है।
6 उसके सामने आदर और महिमा है; उसके पवित्रस्थान में सामर्थ्य और सुन्दरता है।
7 हे देश देश के लोगो, यहोवा को महिमा और सामर्थ दो!

8 यहोवा के नाम की महिमा करो; भेंट ले आओ, और उसके आंगनों में आओ।
9 हे पवित्रता से शोभायमान होकर यहोवा को दण्डवत करो; हे सारी पृथ्वी के लोगो, उसका भय मानो!
10 अन्यजातियों में कहो कि यहोवा राज्य करता है; जगत ऐसा स्थिर रहेगा कि वह कभी न डगमगाएगा; वह देश देश के लोगों का न्याय धर्म से करेगा।
11 आकाश आनन्दित हो, और पृथ्वी मगन हो; समुद्र और उसकी सारी जलराशि गरजें!
12 मैदान और उसमें जो कुछ है वह आनन्दित हो; तब जंगल के सब वृक्ष भी आनन्दित होंगे।
13 यहोवा के साम्हने; क्योंकि वह आनेवाला है, वह पृथ्वी का न्याय करने को आनेवाला है; वह धर्म से जगत का, और सच्चाई से देश देश के लोगों का न्याय करेगा।

अध्याय 97

1 यहोवा राजा हुआ है; पृथ्वी मगन हो; बहुत से द्वीप भी उसके कारण आनन्दित हों।
2 बादल और अन्धकार उसके चारों ओर हैं; धर्म और न्याय उसके सिंहासन का निवास हैं।
3 उसके आगे आगे आग चलती है और उसके शत्रुओं को चारों ओर से भस्म कर देती है।
4 उसकी बिजली ने जगत को प्रकाशित किया; पृथ्वी देखकर कांप उठी।
5 यहोवा के सामने, सारी पृथ्वी के प्रभु के सामने पहाड़ियाँ मोम की तरह पिघल गईं।
6 आकाश उसकी धार्मिकता का वर्णन करता है, और सभी लोग उसकी महिमा देखते हैं।
7 जो लोग खुदी हुई मूरतों की सेवा करते और मूरतों पर घमण्ड करते हैं, वे सब लज्जित हों; हे सब देवताओं, उसी को दण्डवत करो!
8 हे यहोवा, सिय्योन सुनकर आनन्दित हुई; और यहूदा की स्त्रियां तेरे नियमों के कारण आनन्दित हुईं।
9 क्योंकि हे यहोवा, तू सारी पृथ्वी के ऊपर महान है; तू सब देवताओं से कहीं अधिक महान है।
10 हे यहोवा से प्रेम रखनेवालो, बुराई से घृणा करो; वह अपने भक्तों के प्राणों की रक्षा करता है; वह उन्हें दुष्टों के हाथ से छुड़ाता है।
11 धर्मियों के लिये ज्योति, और सीधे मनवालों के लिये आनन्द बोया जाता है।
12 हे धर्मियो, यहोवा के कारण आनन्दित हो, और उसकी पवित्रता का स्मरण करके धन्यवाद करो।

अध्याय 98

1 यहोवा के लिये नया गीत गाओ, क्योंकि उसने अद्भुत काम किये हैं; उसके दाहिने हाथ और पवित्र भुजा ने उसको विजय दिलाई है।
2 यहोवा ने अपना उद्धार प्रगट किया है; उसने अपनी धार्मिकता अन्यजातियों के साम्हने प्रगट की है।
3 उसने इस्राएल के घराने पर अपनी करूणा और सच्चाई को स्मरण किया है; पृथ्वी के दूर दूर देशों ने हमारे परमेश्वर का किया हुआ उद्धार देखा है।
4 हे सारी पृथ्वी के लोगो यहोवा के लिये जयजयकार करो; ऊंचे स्वर से जयजयकार करो, और आनन्द मनाओ, और भजन गाओ!
5 वीणा बजाकर यहोवा का गीत गाओ; वीणा और भजन का स्वर बजाओ।
6 यहोवा राजा के सम्मुख तुरहियां और नरसिंगे बजाकर जयजयकार करो।
7 समुद्र और उसकी सारी सृष्टि, जगत और उसके रहनेवाले गरज उठें!
8 नदियाँ ताली बजाएँ, पहाड़ियाँ मिलकर आनन्द मनाएँ
9 यहोवा के साम्हने; क्योंकि वह पृथ्वी का न्याय करने को आनेवाला है; वह जगत का न्याय धर्म से, और देश देश के लोगों का न्याय खराई से करेगा।

अध्याय 99

1 यहोवा राजा है; लोग कांप उठें; वह करूबों के बीच विराजमान है; पृथ्वी हिल जाए।
2 यहोवा सिय्योन में महान है, और वह सब लोगों के ऊपर महान है।
3 तेरे बड़े और भयानक नाम की स्तुति हो, क्योंकि वह पवित्र है।
4 राजा की शक्ति न्याय से प्रीति रखती है; तू न्याय को स्थापित करता है, तू याकूब में न्याय और धर्म के काम करता है।
5 हमारे परमेश्वर यहोवा को सराहो, और उसके पांवों की चौकी के पास दण्डवत करो; क्योंकि वह पवित्र है।
6 उसके याजकों में से मूसा और हारून, और उसके नाम से प्रार्थना करने वालों में से शमूएल; उन्होंने यहोवा को पुकारा, और उसने उनकी सुन ली।
7 उसने बादल के खम्भे में से उनसे बातें कीं; और उन्होंने उसकी चितौनियों और उसके दिए हुए नियमों को माना।
8 हे हमारे परमेश्वर यहोवा, तू ने उनको उत्तर दिया; तू उनका अपराध क्षमा करने वाला परमेश्वर है, यद्यपि तू ने उनकी युक्तियों का पलटा लिया है।
9 हमारे परमेश्वर यहोवा को सराहो, और उसके पवित्र पर्वत पर दण्डवत करो; क्योंकि हमारा परमेश्वर यहोवा पवित्र है।

अध्याय 100

1 (स्तुति का एक भजन।) हे देश के सब लोगों, यहोवा के लिये जयजयकार करो।
2 यहोवा की आराधना आनन्द से करो; उसके सम्मुख जयजयकार करते हुए आओ।
3 तुम जानो कि यहोवा ही परमेश्वर है; उसी ने हम को बनाया, और हम उसी के हैं; हम उसकी प्रजा, और उसकी चरागाह की भेड़ें हैं।
4 उसके फाटकों से धन्यवाद करते हुए, और उसके आंगनों में स्तुति करते हुए प्रवेश करो; उसका धन्यवाद करो, और उसके नाम को धन्य कहो।
5 क्योंकि यहोवा भला है, उसकी करूणा सदा की है, और उसकी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है।

अध्याय 101

1 (दाऊद का एक भजन) मैं दया और न्याय के विषय गाऊंगा; हे यहोवा, मैं तेरा ही भजन गाऊंगा।
2 मैं अपने आप को पूर्ण बुद्धि से और सिद्ध रीति से चलाऊंगा। हे तू मेरे पास कब आएगा? मैं अपने घर में सिद्ध मन से चलूंगा।
3 मैं अपनी आंखों के सामने कोई बुरी बात नहीं रखूंगा; मैं उन लोगों के काम से घृणा करता हूं जो भटक जाते हैं; वह मुझसे नहीं जुड़ेगा।
4 टेढ़ी बुद्धि मुझ से दूर हो जाएगी; मैं दुष्ट मनुष्य को न जानूंगा।
5 जो कोई छिपकर अपने पड़ोसी की निन्दा करता है, उसे मैं काट डालूंगा; जो घमण्ड से देखता और जिसका मन घमण्ड से भरा है, उसको मैं न छोड़ूंगा।
6 मेरी आंखें देश के विश्वासयोग्य लोगों पर लगी रहेंगी कि वे मेरे संग रहें; जो खरे मार्ग पर चलता है, वही मेरी सेवा करेगा।
7 जो छल करता है वह मेरे घर में रहने न पाएगा; जो झूठ बोलता है वह मेरे साम्हने न टिकेगा।
8 मैं शीघ्र ही देश के सब दुष्टों को नाश करूंगा; और यहोवा के नगर में से सब दुष्टों को नाश करूंगा।

अध्याय 102

1 (यह प्रार्थना दीन जन की है, जब वह यहोवा के सम्मुख अपना दुखड़ा रोता है।) हे यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन, और मेरी दोहाई तुझ तक पहुंचे।
2 जब मैं संकट में पड़ूं तब अपना मुख मुझ से न छिपा; अपना कान मेरी ओर लगा; जिस दिन मैं पुकारूं उसी दिन तुरन्त मुझे उत्तर दे।
3 क्योंकि मेरे दिन धुएँ के समान भस्म हो गए हैं, और मेरी हड्डियाँ आग की नाईं जल गई हैं।
4 मेरा हृदय व्याकुल हो गया है, और घास की नाईं सूख गया है; और मैं अपनी रोटी खाना भी भूल गया हूं।
5 मेरे कराहने के शब्द से मेरी हड्डियाँ मेरी त्वचा से चिपक गई हैं।
6 मैं जंगल के पेलिकन के समान हूँ, मैं रेगिस्तान के उल्लू के समान हूँ।
7 मैं जागता रहता हूँ और गौरेये के समान हो गया हूँ जो छत पर अकेला बैठता है।
8 मेरे शत्रु दिन भर मेरी निन्दा करते रहते हैं; और जो मुझ से पागल हैं, वे मेरे विरुद्ध शपथ खाते हैं।
9 क्योंकि मैं ने रोटी के समान राख खाई, और रोते हुए अपना पेय पीया,
10 तेरे क्रोध और जलजलाहट के कारण; तू ने मुझे उठाया, और फिर गिरा दिया।
11 मेरे दिन ढलती हुई छाया के समान हैं, और मैं घास के समान सूख गया हूं।
12 परन्तु हे यहोवा, तू सर्वदा विराजमान रहेगा, और तेरा स्मरण पीढ़ी पीढ़ी में बना रहेगा।
13 तू उठकर सिय्योन पर दया कर, क्योंकि उस पर अनुग्रह करने का समय, हां, नियत समय आ गया है।
14 क्योंकि तेरे दास उसके पत्थरों से प्रसन्न होते हैं, और उसकी धूल से प्रसन्न होते हैं।
15 तब जाति-जाति के लोग यहोवा के नाम का भय मानेंगे, और पृथ्वी के सब राजा तेरी महिमा का भय मानेंगे।
16 जब यहोवा सिय्योन को बसाएगा, तब वह अपनी महिमा सहित दिखाई देगा।
17 वह दरिद्र की प्रार्थना पर दृष्टि करता है, और उसकी प्रार्थना तुच्छ नहीं जानता।
18 यह बात आनेवाली पीढ़ी के लिये लिखी जाएगी, और जो जाति उत्पन्न होगी वह यहोवा की स्तुति करेगी।
19 क्योंकि यहोवा ने अपने पवित्रस्थान की ऊंचाई पर से दृष्टि की है; स्वर्ग से उसने पृथ्वी को देखा है;
20 बन्दियों का कराहना सुनना; वध के लिये ठहराए हुए को खोलना;
21 कि सिय्योन में यहोवा का नाम वर्णन करो, और यरूशलेम में उसका गुणानुवाद करो;
22 जब देश-देश और राज्य-राज्य के लोग यहोवा की सेवा करने के लिये इकट्ठे होंगे।
23 उसने मार्ग में मेरा बल घटा दिया, और मेरे दिन घटा दिए।
24 मैं ने कहा, हे मेरे परमेश्वर, मुझे बीच में न उठा ले; तेरे वर्ष पीढ़ी पीढ़ी तक बने रहेंगे।
25 तू ने पृथ्वी की नींव डाली है, और स्वर्ग तेरे हाथों का कार्य है।
26 वे तो नाश हो जाएंगे, परन्तु तू स्थिर रहेगा; वे सब के सब वस्त्र के समान पुराने हो जाएंगे; तू उनको वस्त्र के समान बदलेगा, और वे बदल जाएंगे।
27 परन्तु तू वही है, और तेरे वर्षों का अन्त न होगा।
28 तेरे दासों की सन्तान बनी रहेगी, और उनकी सन्तान तेरे साम्हने स्थिर रहेगी।

अध्याय 103

1 (दाऊद का एक भजन।) हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह; और जो कुछ मुझ में है, वह उसके पवित्र नाम को धन्य कहे।
2 हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह, और उसके किसी उपकार को न भूलना।
3 वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता है, और तेरे सब रोगों को चंगा करता है;
4 वही तो तेरे प्राण को नाश होने से छुड़ाता है; और तेरे सिर पर करूणा और दया का मुकुट बान्धता है;
5 वह तेरी लालसा को उत्तम पदार्थों से तृप्त करता है, जिस से तेरी जवानी उकाब के समान नई हो जाती है।
6 यहोवा सब पिसे हुओं के लिये धर्म और न्याय के काम करता है।
7 उसने मूसा को अपने मार्ग, और इस्राएलियों को अपने काम बताए।
8 यहोवा दयालु और अनुग्रहकारी, विलम्ब से कोप करनेवाला और अति करूणामय है।
9 वह सदैव उलाहना न देगा, न अपना क्रोध सदा बनाए रखेगा।
10 उसने हमारे पापों के अनुसार हम से व्यवहार नहीं किया, और न हमारे अधर्म के कामों के अनुसार हमें बदला दिया।
11 क्योंकि जैसे आकाश पृथ्वी के ऊपर ऊंचा है, वैसे ही उसकी करूणा भी उसके डरवैयों के ऊपर प्रबल है।
12 पूर्व पश्चिम से जितनी दूर है, उसने हमारे अपराधों को हमसे उतनी ही दूर कर दिया है।
13 जैसे पिता अपने बालकों पर दया करता है, वैसे ही यहोवा अपने डरवैयों पर दया करता है।

14 क्योंकि वह हमारी सृष्टि जानता है; उसको स्मरण रहता है कि मनुष्य मिट्टी ही हैं।
15 मनुष्य के दिन घास के समान हैं, वह मैदान के फूल के समान फलता-फूलता है।
16 क्योंकि वायु उस पर से गुजर जाती है और वह लुप्त हो जाती है; और वह स्थान फिर उसका पता नहीं लगाता।
17 परन्तु यहोवा की करूणा उसके डरवैयों पर युग युग, और उसका धर्म उनके नाती-पोतों पर भी बना रहता है;
18 जो उसकी वाचा को मानते हैं, और उसकी आज्ञाओं को स्मरण करके उन पर चलते हैं।
19 यहोवा ने अपना सिंहासन स्वर्ग में स्थापित किया है, और उसका राज्य पूरी सृष्टि पर शासन करता है।
20 हे यहोवा के दूतो, तुम जो बड़े वीर हो, और उसके वचन के मानने से उसकी आज्ञाओं को मानते हो, उसको धन्य कहो!
21 हे यहोवा की सारी सेनाओं, हे उसके टहलुओ, हे उसके इच्छा पूरी करनेवालो, उसको धन्य कहो!
22 हे यहोवा की सारी सृष्टि, उसके राज्य के सब स्थानों में उसको धन्य कहो; हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कहो!

अध्याय 104

1 हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह! हे मेरे परमेश्वर यहोवा, तू अति महान है; तू महिमा और ऐश्वर्य से विभूषित है।
2 तू अपने को वस्त्र के समान ज्योति से ओढ़ लेता है; तू आकाश को परदे के समान तानता है।
3 जो अपने कोठरियों की कड़ियाँ जल में रखता है, जो बादलों को अपना रथ बनाता है, जो पवन के पंखों पर चलता है,
4 वह अपने दूतों को आत्मा और अपने सेवकों को धधकती हुई आग बनाता है।
5 उसी ने पृथ्वी की नींव डाली, कि वह सदा के लिये हटाई न जाए।
6 तूने उसे गहरे सागर से ऐसे ढक दिया जैसे वस्त्र से; जल पहाड़ों से भी ऊंचा था।
7 तेरी डांट सुनते ही वे भाग गए; तेरे गरजने की आवाज सुनते ही वे भाग गए।
8 वे पहाड़ों पर चढ़ते हैं, और तराइयों पर होकर उस स्थान तक उतरते हैं जिसे तूने उनके लिये तैयार किया है।
9 तूने ऐसा घेरा बाँधा है कि वे उसे लांघ नहीं सकते, और न ही वे फिरकर धरती को ढक सकते हैं।
10 वह घाटियों में झरने बहाता है, जो पहाड़ियों के बीच से बहते हैं।
11 वे मैदान के सब पशुओं को पानी पिलाते हैं, और जंगली गधे उनकी प्यास बुझाते हैं।
12 उनके पास आकाश के पक्षी बसेरा करेंगे, जो डालियों के बीच गाते हैं।
13 वह अपने कक्षों से पहाड़ों को सींचता है; पृथ्वी तेरे कार्यों के फल से तृप्त होती है।
14 वह पशुओं के लिये घास और मनुष्य के काम के लिये जड़ी-बूटी उगाता है, कि वह भूमि से भोजनवस्तु उत्पन्न करे;
15 और दाखमधु से मनुष्य का मन आनन्दित होता है, और तेल से उसका मुख चमकता है, और रोटी से मनुष्य का हृदय दृढ़ होता है।
16 यहोवा के वृक्ष रस से भरे हुए हैं, अर्थात लबानोन के देवदारु जो उसने लगाए हैं,
17 जहां पक्षी अपना घोंसला बनाते हैं, वहां सारस का घर देवदारु है।
18 ऊंचे पहाड़ जंगली बकरों के लिये, और चट्टानें खरगोशों के लिये शरणस्थान हैं।
19 उसने चन्द्रमा को ऋतुओं के अनुसार नियुक्त किया है; सूर्य अपना अस्त होना जानता है।
20 तू अन्धकार करता है, और रात हो जाती है; और उस में वन के सब जन्तु रेंगते हुए निकलते हैं।
21 जवान सिंह अपने शिकार के पीछे गरजते हैं, और परमेश्वर से अपना आहार मांगते हैं।
22 सूर्य उदय होते ही वे इकट्ठे होकर अपनी मांदों में लेट जाते हैं।
23 मनुष्य शाम तक अपने काम और परिश्रम में लगा रहता है।
24 हे यहोवा, तेरे काम कितने अनगिनित हैं! तू ने उन सब को बुद्धि से बनाया है; पृथ्वी तेरी सम्पत्ति से भरपूर है।
25 ऐसा ही यह बड़ा और चौड़ा समुद्र है, जिसमें असंख्य जन्तु रेंगते रहते हैं, छोटे से लेकर बड़े जन्तु तक।
26 वहां जहाज चलते हैं; वहां लिब्यातान है, जिसे तूने वहां खेलने के लिये बनाया है।
27 ये सब तेरी ही बाट जोहते हैं, कि तू उनको समय पर आहार दे।
28 जो कुछ तू उन्हें देता है, वे बटोरते हैं; तू अपनी मुट्ठी खोलता है, वे भलाई से भर जाते हैं।
29 तू अपना मुख छिपा लेता है, वे घबरा जाते हैं; तू उनकी सांस छीन लेता है, वे मर जाते हैं, और अपनी मिट्टी में फिर मिल जाते हैं।
30 तू अपनी आत्मा भेजता है, वे निर्मित होते हैं: और तू पृथ्वी का चेहरा नया बनाता है।
31 यहोवा की महिमा सदा बनी रहेगी; यहोवा अपने कामों से आनन्दित होगा।
32 वह धरती पर दृष्टि करता है, और वह कांप उठती है; वह पहाड़ों को छूता है, और उनसे धुआं निकलता है।
33 जब तक मैं जीवित रहूंगा तब तक यहोवा का भजन गाता रहूंगा; जब तक मैं बना रहूंगा तब तक अपने परमेश्वर का भजन गाता रहूंगा।
34 उसका ध्यान करना मेरे लिये मधुर होगा; मैं यहोवा के कारण आनन्दित होऊंगा।
35 पापी पृथ्वी पर से नाश हो जाएं, और दुष्ट लोग न रहें। हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कहो। यहोवा की स्तुति करो।

अध्याय 105

1 यहोवा का धन्यवाद करो; उसके नाम से प्रार्थना करो; लोगों में उसके कामों का प्रचार करो।
2 उसके लिये गाओ, उसके लिये भजन गाओ; उसके सब आश्चर्यकर्मों का वर्णन करो।
3 उसके पवित्र नाम पर गर्व करो; यहोवा के खोजियों का हृदय आनन्दित हो!
4 यहोवा और उसकी सामर्थ्य की खोज करो; उसके दर्शन के निरन्तर खोज करते रहो।
5 उसके किए हुए आश्चर्यकर्मों को, और उसके किए हुए निर्णयों को स्मरण करो;

6 हे उसके दास इब्राहीम की सन्तान, हे उसके चुने हुए याकूब की सन्तान!
7 वह यहोवा हमारा परमेश्वर है; उसके न्याय के काम सारी पृथ्वी पर हैं।
8 उसने अपनी वाचा को सदा स्मरण रखा है, वही वचन जो उसने हजार पीढ़ियों के लिये ठहराया है।
9 यह वही वाचा है जो उसने अब्राहम से बान्धी, और जो शपथ उसने इसहाक से खाई थी;
10 और उसी को याकूब के लिये विधि करके, और इस्राएल के लिये युग युग की वाचा करके दृढ़ किया।
11 कि मैं कनान देश तुझे दूंगा, वह तेरा निज भाग होगा।
12 जब वे गिनती में थोड़े ही थे, हां, बहुत ही थोड़े, और उस देश में परदेशी थे।
13 जब वे एक जाति से दूसरी जाति में, और एक राज्य से दूसरे राज्य में जाते थे;
14 उसने किसी मनुष्य को उन पर अन्याय करने नहीं दिया; हां, उसने उनके कारण राजाओं को डांटा;
15 कि मेरे अभिषिक्त को मत छूओ, और मेरे नबियों की भी हानि न करो।
16 फिर उसने देश में अकाल भी बुलाया, और अन्न की सारी सम्पत्ति नष्ट कर दी।
17 उसने यूसुफ नाम के एक मनुष्य को उनके आगे भेजा, जो दास करके बेचा गया था।
18 जिसके पांवों में उन्होंने बेड़ियां डालकर दुख पहुंचाया, वह लोहे की जंजीरों में जकड़ा गया।
19 जब तक उसका वचन न आया, तब तक यहोवा का वचन उसको परखता रहा।
20 राजा ने, अर्थात् प्रजा के प्रधान ने, उसे भेजकर स्वतंत्र कर दिया।
21 उसने उसको अपने घर का स्वामी और अपनी सारी सम्पत्ति पर सरदार ठहराया।
22 वह अपने हाकिमों को अपनी इच्छा के अनुसार बान्धेगा, और अपने मंत्रियों को बुद्धि की शिक्षा देगा।
23 इस्राएल भी मिस्र में आया; और याकूब हाम के देश में रहने लगा।
24 और उसने अपनी प्रजा को बहुत बढ़ाया, और उन्हें उनके शत्रुओं से अधिक सामर्थी बनाया।
25 उसने उनके मन को अपनी प्रजा से घृणा करने को, और अपने सेवकों से छल करने को फेर दिया।
26 फिर उसने अपने सेवक मूसा को और अपने चुने हुए हारून को भेजा।
27 उन्होंने उनके बीच उसके चिन्ह और हाम के देश में उसके चमत्कार दिखाए।
28 उसने अंधकार भेजा और अंधकार कर दिया; और उन्होंने उसके वचन के विरुद्ध बलवा नहीं किया।
29 उसने उनके जल को खून में बदल दिया, और उनकी मछलियों को मार डाला।
30 उनके देश में, उनके राजाओं के कक्षों में बहुत से मेंढक पैदा हुए।
31 उसने ऐसा कहा, और उनके सब स्थानों पर नाना प्रकार की मक्खियाँ और कुटकियाँ आ गईं।
32 उसने वर्षा के बदले ओले बरसाए, और उनके देश में धधकती आग बरसाई।
33 उसने उनकी दाखलता और अंजीर के वृक्षों को भी मारा, और उनके देश के वृक्षों को तोड़ डाला।
34 जब उसने कहा, तो टिड्डियाँ और कीड़े अनगिनत संख्या में आ गए।
35 और उनके देश की सब घास-फूस खा गए, और उनकी भूमि की सब उपज खा गए।
36 और उसने उनके देश के सब पहलौठों को, जो उनके सब बलवानों में मुख्य थे, मार डाला।
37 और वह उन्हें सोने-चाँदी के साथ ले आया, और उनके गोत्रों में एक भी निर्बल मनुष्य न रहा।
38 उनके चले जाने से मिस्री आनन्दित हुए, क्योंकि उनका भय उन में समा गया था।
39 उसने छाया के लिये बादल फैलाया, और रात में प्रकाश देने के लिये आग फैलाई।
40 लोगों ने माँगा तो वह बटेरें ले आया और उन्हें स्वर्ग की रोटी खिलाकर तृप्त किया।
41 उसने चट्टान को खोला और पानी फूट निकला; वह सूखी जगहों में नदी की तरह बहने लगा।
42 क्योंकि उसने अपनी पवित्र प्रतिज्ञा को स्मरण किया, और अपने दास इब्राहीम को भी।
43 और उसने अपनी प्रजा को आनन्द के साथ, और अपने चुने हुओं को हर्ष के साथ निकाला।
44 और उन्हें अन्यजातियों की भूमि दे दी, और उन्होंने लोगों के परिश्रम का उत्तराधिकार प्राप्त किया;
45 कि वे उसकी विधियों को मानें, और उसके नियमों को मानते रहें। यहोवा की स्तुति करो!

अध्याय 106

1 यहोवा की स्तुति करो! यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है; उसकी करूणा सदा की है।
2 यहोवा के पराक्रम के कामों का वर्णन कौन कर सकता है? उसकी सारी स्तुति कौन बता सकता है?
3 धन्य हैं वे जो न्याय पर चलते हैं, और वे जो हर समय धर्म के काम करते हैं।
4 हे यहोवा, अपनी प्रजा पर की हुई कृपादृष्टि के अनुसार मुझे स्मरण कर; अपने उद्धार के लिये मेरी सुधि ले;
5 कि मैं तेरे चुने हुओं का कल्याण देखूं, और तेरी प्रजा के आनन्द में आनन्दित होऊं, और तेरे निज भाग के साथ बड़ाई करूं।
6 हमने अपने पूर्वजों के समान पाप किया है, हमने अधर्म किया है, हमने दुष्टता की है।
7 हमारे पुरखाओं ने मिस्र में तेरे आश्चर्यकर्मों को न समझा; और न तेरी बड़ी दया के कामों को स्मरण किया; वरन समुद्र के तीर पर, वरन लाल समुद्र के तीर पर भी उसको क्रोध दिलाया।
8 तौभी उसने अपने नाम के निमित्त उनका उद्धार किया, जिस से वह अपना बड़ा सामर्थ्य प्रगट करे।
9 फिर उसने लाल समुद्र को भी डांटा, और वह सूख गया; और वह उन्हें गहिरे जल में से ऐसे ले गया मानो जंगल में से हो।
10 और उसने उनको उनके बैरी के हाथ से बचाया, और शत्रु के हाथ से छुड़ाया।
11 और जल ने उनके शत्रुओं को डुबा दिया, और उनमें से एक भी न बचा।

12 तब उन्होंने उसके वचनों पर विश्वास किया, और उसकी स्तुति गायी।
13 वे उसके कामों को तुरन्त भूल गए; और उसकी युक्ति की ओर न रुके।
14 वरन जंगल में बहुत ही लालसा की, और निर्जल देश में परमेश्वर की परीक्षा की।
15 और उसने उनकी मुंहमांगी देन दी, परन्तु उनके मन में दुबलापन डाल दिया।
16 और वे छावनी में मूसा से और यहोवा के पवित्र हारून से भी डाह करने लगे।
17 धरती फट गई और दातान को निगल गई, और अबीराम के लोगों को भी उसमें समा गई।
18 और उनके समूह में आग भड़क उठी, और उस ज्वाला ने दुष्टों को भस्म कर दिया।
19 उन्होंने होरेब में एक बछड़ा बनाया और उसकी ढली हुई मूर्ति की पूजा की।
20 इस प्रकार उन्होंने अपनी महिमा को घास खाने वाले बैल की उपमा में बदल दिया।
21 वे अपने उद्धारकर्ता परमेश्वर को भूल गए, जिस ने मिस्र में बड़े बड़े काम किये थे।
22 हाम के देश में आश्चर्यकर्म और लाल समुद्र के तट पर भयंकर काम किए गए हैं।
23 इसलिये उसने कहा कि यदि उसका चुना हुआ मूसा उसके साम्हने खड़ा होकर उसके क्रोध को ठण्डा न कर दे, तो वह उन्हें नाश कर देगा।
24 हां, उन्होंने मनभावने देश को तुच्छ जाना, उन्होंने उसके वचन पर विश्वास नहीं किया।
25 परन्तु अपने डेरों में बड़बड़ाते रहे, और यहोवा की बात न मानी।
26 इसलिये उसने उन पर हाथ उठाया, कि उन्हें जंगल में परास्त कर दे।
27 और उनकी सन्तान को जाति-जाति में से मिटा डालूंगा, और देश-देश में तितर-बितर कर दूंगा।
28 और वे बालपोर के संग मिल गए, और मरे हुओं के बलि का मांस खाया।
29 इस प्रकार उन्होंने अपनी कल्पनाओं से उसे क्रोध दिलाया, और विपत्ति उन पर आ पड़ी।
30 तब पीनहास ने उठकर न्यायदण्ड सुनाया, और इस प्रकार मरी थम गई।
31 और यह उसके लेखे पीढ़ी से पीढ़ी तक युगानुयुग धर्म गिना गया।
32 और उन्होंने झगड़ों के सोते के पास भी उसको क्रोध दिलाया, और उनके कारण मूसा की हानि हुई।
33 क्योंकि उन्होंने उसके मन को भड़का दिया था, और वह बिना सोचे समझे बातें करने लगा था।
34 जिन जातियों के विषय यहोवा ने उन्हें आज्ञा दी थी, उनको उन्होंने नाश नहीं किया।
35 परन्तु वे अन्यजातियों में मिल गए और उनके काम सीख लिये।
36 और वे अपनी मूरतों की पूजा करने लगे, जो उनके लिये फन्दे थीं।
37 हां, उन्होंने अपने बेटे-बेटियों को शैतानों के लिये बलि चढ़ाया,
38 और उन्होंने निर्दोषों का खून बहाया, अर्थात अपने बेटे-बेटियों का खून, जिन्हें उन्होंने कनान की मूरतों के आगे बलि किया; और देश खून से अशुद्ध हो गया।
39 इस प्रकार वे अपने ही कामों से अशुद्ध हो गए, और अपनी ही युक्तियों से व्यभिचार करने लगे।
40 इस कारण यहोवा का क्रोध अपनी प्रजा पर भड़का, यहां तक कि उसे अपने निज भाग से भी घृणा हो गई।
41 और उसने उन्हें अन्यजातियों के हाथ में कर दिया, और उनके बैरी उन पर प्रभुता करने लगे।
42 उनके शत्रुओं ने भी उन पर अत्याचार किया, और वे उनके वश में हो गए।
43 उसने बार बार उनको छुड़ाया; परन्तु वे अपनी युक्ति से उसको क्रोध दिलाते रहे, और अपने अधर्म के कारण दब गए।
44 तौभी जब उसने उनकी दोहाई सुनी, तब उसने उनके क्लेश पर दृष्टि की।
45 और उसने उनके लिये अपनी वाचा को स्मरण किया, और अपनी बड़ी दया के अनुसार पश्चाताप किया।
46 और उसने उन सब को जो उन्हें बन्दी बनाकर ले गए थे, दया का पात्र बना दिया।
47 हे हमारे परमेश्वर यहोवा, हमारा उद्धार कर, और हमें अन्यजातियों के बीच से इकट्ठा कर कि हम तेरे पवित्र नाम का धन्यवाद करें, और तेरी स्तुति करते हुए जयजयकार करें।
48 इस्राएल का परमेश्वर यहोवा अनादिकाल से अनन्तकाल तक धन्य है; और सब लोग कहें, आमीन। यहोवा की स्तुति करो।

अध्याय 107

1 यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है; उसकी करूणा सदा की है।
2 यहोवा के छुड़ाए हुए लोग ऐसा ही कहें, जिन्हें उसने शत्रु के हाथ से छुड़ाया है;
3 और उन्हें पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, सभी देशों से इकट्ठा किया।
4 वे जंगल में एकाकी मार्ग से भटकते रहे; उन्हें रहने के लिये कोई नगर न मिला।
5 वे भूखे-प्यासे थे, और उनके प्राण व्याकुल हो गए।
6 तब उन्होंने संकट में यहोवा की दोहाई दी, और उसने उनको सकेती से छुड़ाया।
7 और वह उन्हें सीधे मार्ग से ले गया, कि वे बसने के लिये एक नगर में जाएं।
8 भला होता कि लोग यहोवा की भलाई के कारण, और उन आश्चर्यकर्मों के कारण जो वह मनुष्यों के लिये करता है, उसकी स्तुति करते!
9 क्योंकि वह अभिलाषा करनेवाले को तृप्त करता है, और भूखे को भलाई से तृप्त करता है।
10 जो अन्धकार और मृत्यु की छाया में बैठे हैं, और क्लेश और लोहे से जकड़े हुए हैं;
11 क्योंकि उन्होंने परमेश्वर के वचनों के विरुद्ध बलवा किया, और परमप्रधान की युक्ति को तुच्छ जाना।
12 इस कारण उसने उनके मन को कष्ट से दबा दिया; वे गिर पड़े, और कोई सहायक न था।
13 तब उन्होंने संकट में यहोवा की दोहाई दी, और उसने उनको संकट से छुड़ाया।

14 उसने उन्हें अंधकार और मृत्यु की छाया से निकाला, और
उनके बन्धन तोड़ डाले।
15 भला होता कि लोग यहोवा की भलाई के कारण, और उन
आश्चर्यकर्मों के कारण जो वह मनुष्यों के लिये करता है, उसकी
स्तुति करते!
16 क्योंकि उसने पीतल के किवाड़ों को तोड़ डाला, और लोहे के
बेण्डों को टुकड़े टुकड़े कर डाला है।
17 मूर्ख लोग अपने अपराध और अधर्म के कामों के कारण दुख
पाते हैं।
18 उनके प्राण सब प्रकार के भोजन से घृणा करते हैं, और वे
मृत्यु के फाटक के निकट पहुँचते हैं।
19 तब वे संकट में यहोवा को पुकारते हैं, और वह उनको संकट
से छुड़ाता है।
20 उसने अपना वचन भेजकर उन्हें चंगा किया और उनके
विनाश से उन्हें छुड़ाया।
21 भला होता कि लोग यहोवा की भलाई के कारण, और उन
आश्चर्यकर्मों के कारण जो वह मनुष्यों के लिये करता है, उसकी
स्तुति करते!
22 और वे धन्यवादबलि चढ़ाएं, और उसके कामों का वर्णन
आनन्द से करें।
23 जो जहाज़ों पर समुद्र में जाते हैं, जो बड़े जल में व्यापार करते
हैं;
24 वे यहोवा के कामों को, और उसके द्वारा गहरे सागर में किए
गए आश्चर्यकर्मों को देखते हैं।
25 क्योंकि वह आज्ञा देता है और प्रचण्ड पवन चलाता है, जो
उसकी लहरें उठाती है।
26 वे आकाश तक चढ़ जाते हैं, फिर अधोलोक में उतर जाते हैं;
संकट के कारण उनका मन पिघल जाता है।
27 वे मतवाले की नाईं लड़खड़ाते और लड़खड़ाते हैं, और
उनकी बुद्धि समाप्त हो गई है।
28 तब वे संकट में यहोवा को पुकारते हैं, और वह उनको सकेती
से निकालता है।
29 वह तूफान को शान्त कर देता है, और उसकी लहरें शान्त हो
जाती हैं।
30 तब वे शान्त होकर आनन्दित होते हैं; और वह उन्हें उनके
मनचाहे बन्दरगाह तक पहुंचा देता है।
31 भला होता कि लोग यहोवा की भलाई के कारण, और उन
आश्चर्यकर्मों के कारण जो वह मनुष्यों के लिये करता है, उसकी
स्तुति करते!
32 लोग सभा में भी उसकी स्तुति करें, और पुरनियों की सभा में
उसकी स्तुति करें।
33 वह नदियों को जंगल बना देता है और जल के सोतों को सूखी
भूमि कर देता है;
34 उपजाऊ भूमि उसके निवासियों की दुष्टता के कारण बंजर हो
गई है।
35 वह जंगल को स्थिर जल कर देता है, और सूखी भूमि को जल
के सोते बना देता है।
36 और वहां वह भूखों को बसाता है, कि वे बसने के लिये एक
नगर तैयार करें;
37 और खेत में बीज बोओ और दाख की बारियां लगाओ, जो
बढ़ती फलदायी होंगी।
38 और वह उनको ऐसी आशीष देता है कि वे बहुत बढ़ जाते हैं,
और उनके पशुओं को घटने नहीं देता।
39 फिर वे अत्याचार, क्लेश और दुख के द्वारा कमतर और दीन
कर दिए गए हैं।
40 वह हाकिमों को तुच्छ जानता है, और उन्हें जंगल में जहां कोई
मार्ग नहीं है भटकने देता है।
41 तौभी वह दरिद्रों को दु:ख से छुड़ाकर ऊंचे पर बिठाता है,
और उनके परिवार को भेड़-बकरियों के समान बनाता है।
42 धर्मी लोग यह देखकर आनन्दित होंगे, और सब अधर्मी अपना
मुंह बन्द कर लेंगे।
43 जो बुद्धिमान हो और इन बातों पर ध्यान दे, वह यहोवा की
करूणा को समझेगा।

अध्याय 108

1 (दाऊद का एक गीत या भजन।) हे परमेश्वर, मेरा हृदय स्थिर है;
मैं अपनी महिमा के साथ गाऊंगा और स्तुति करूंगा।
2 हे सारंगी और वीणा, जाग उठो! मैं भी शीघ्र जाग उठूंगा।
3 हे यहोवा, मैं देश देश के लोगों के बीच में तेरा धन्यवाद करूंगा,
और जाति जाति के लोगों के बीच में तेरा भजन गाऊंगा।
4 क्योंकि तेरी करूणा आकाश से भी ऊंची है, और तेरी सच्चाई
बादलों तक पहुंचती है।
5 हे परमेश्वर, तू स्वर्ग से भी ऊपर महान है, और तेरी महिमा
सारी पृथ्वी पर है;
6 इसलिये कि तेरा प्रिय छुड़ाया जाए; अपने दाहिने हाथ से बचा,
और मुझे उत्तर दे।
7 परमेश्वर ने अपनी पवित्रता में कहा है, मैं आनन्दित होऊंगा, मैं
शकेम को बांट लूंगा, और सुक्कोत की तराई को नापूंगा।
8 गिलाद मेरा है, मनश्शे मेरा है; एप्रैम मेरा सिर का गढ़ है; यहूदा
मेरा व्यवस्थापक है;
9 मोआब मेरा धोने का पात्र है; एदोम पर मैं अपना जूता फेंकूंगा;
पलिश्तियों पर मैं जयजयकार करूंगा।
10 कौन मुझे दृढ़ नगर में पहुंचाएगा? कौन मुझे एदोम में ले
चलेगा?
11 हे परमेश्वर, क्या तू हम को त्यागकर हमारे संग नहीं चलेगा? हे
परमेश्वर, क्या तू हमारी सेना के साथ नहीं चलेगा?
12 संकट में हमारी सहायता कर, क्योंकि मनुष्य की सहायता
व्यर्थ है।
13 परमेश्वर की सहायता से हम वीरता से काम करेंगे, क्योंकि
वही हमारे शत्रुओं को रौंदेगा।

अध्याय 109

1 (प्रमुख संगीतकार के लिए, दाऊद का एक भजन।) हे मेरे
स्तुति के परमेश्वर, चुप मत रहो;
2 क्योंकि दुष्टों और छल करने वालों का मुंह मेरे विरुद्ध खुला है;
वे मेरे विरुद्ध झूठ बोलते हैं।
3 उन्होंने मुझे चारों ओर से बैर की बातें कह कर घेर लिया, और
अकारण मुझ से लड़ने लगे।
4 मेरे प्रेम के कारण वे मेरे विरोधी हैं, परन्तु मैं प्रार्थना में लगा
रहता हूं।
5 और उन्होंने भलाई के बदले मुझ से बुराई की, और प्रेम के
बदले घृणा की है।
6 तू किसी दुष्ट को उस पर अधिकारी ठहरा दे, और शैतान को
उसके दाहिने हाथ खड़ा कर।

7 जब उसका न्याय हो, तो वह दोषी ठहराया जाए; और उसकी प्रार्थना पाप बन जाए।
8 उसके दिन थोड़े हों, और उसका पद कोई दूसरा ले ले।
9 उसके बच्चे अनाथ हो जाएं, और उसकी पत्नी विधवा हो जाए।
10 उसके लड़के-बाले निरन्तर भटकते रहें, और भीख मांगते रहें; और अपनी रोटी उजड़े हुए स्थानों में ढूंढ़ते रहें।
11 लुटेरा उसका सब कुछ लूट ले, और परदेशी लोग उसका परिश्रम लूट लें।
12 उस पर कोई दया करनेवाला न हो, और न उसके अनाथ बालकों पर कोई अनुग्रह करनेवाला हो।
13 उसका वंश नाश हो जाए, और आनेवाली पीढ़ी में उसका नाम मिट जाए।
14 उसके पुरखाओं का अधर्म यहोवा को स्मरण रहे, और उसकी माता का पाप न मिटाया जाए।
15 वे यहोवा के सम्मुख निरन्तर रहें, जिस से वह उनका स्मरण पृथ्वी पर से मिटा डाले।
16 क्योंकि उसने दया करना न भूला, वरन् दीन-दरिद्र को सताया ताकि टूटे मनवालों को मार डाले।
17 क्योंकि वह शाप से प्रीति रखता था, इसलिए वह शाप उस पर आ पड़े; और क्योंकि वह आशीर्वाद से प्रसन्न नहीं होता था, इसलिए वह शाप उससे दूर रहे।
18 जैसे उसने अपने वस्त्र के समान शाप बान्ध लिया था, वैसे ही वह उसके अन्तड़ियों में जल की नाईं, और तेल की नाईं उसकी हड्डियों में समा गया।
19 वह उसके लिये वस्त्र के समान हो, और वह कमरबन्द भी हो जिससे वह सर्वदा बंधा रहे।
20 यहोवा की ओर से मेरे द्रोहियों को, और मेरे विरुद्ध बुरी बातें कहने वालों को यही बदला मिलेगा।
21 परन्तु हे यहोवा परमेश्वर, अपने नाम के निमित्त तू ही मुझ से बर्ताव कर; क्योंकि तेरी करूणा उत्तम है, इसलिये तू ही मुझे छुड़ा।
22 क्योंकि मैं दीन और दरिद्र हूं, और मेरा हृदय घायल है।
23 मैं ढलती हुई छाया के समान लुप्त हो गया हूं; मैं टिड्डी के समान इधर उधर उछाला जाता हूं।
24 उपवास के कारण मेरे घुटने दुर्बल हो गए हैं, और मेरा शरीर मोटापा घटाता है।
25 मैं भी उनके लिए निन्दनीय हो गया; जब वे मेरी ओर देखते तब सिर हिलाते थे।
26 हे मेरे परमेश्वर यहोवा, मेरी सहायता कर; अपनी करूणा के अनुसार मेरा उद्धार कर।
27 जिस से वे जान लें कि यह तेरा ही हाथ है, और हे यहोवा, तू ही ने यह काम किया है।
28 वे शाप दें, परन्तु तू आशीर्वाद दे; जब वे उठें, तब वे लज्जित हों; परन्तु तेरा दास आनन्दित हो।
29 मेरे सतानेवाले लज्जा का वस्त्र पहिने रहें, और अपनी लज्जा को लबादे से ढांप लें।
30 मैं अपने मुँह से यहोवा की बहुत स्तुति करूँगा, हाँ, मैं भीड़ के बीच में उसकी स्तुति करूँगा।
31 क्योंकि वह कंगाल के दाहिने हाथ खड़ा होकर उसको उन लोगों से बचाएगा जो उसके प्राणों को दोषी ठहराते हैं।

अध्याय 110

1 (दाऊद का एक भजन) यहोवा ने मेरे प्रभु से कहा, मेरे दाहिने हाथ बैठ, जब तक मैं तेरे शत्रुओं को तेरे पांवों की चौकी न कर दूं।
2 यहोवा तेरे पराक्रम का लट्ठा सिय्योन से भेजेगा; तू अपने शत्रुओं के बीच में राज्य कर।
3 तेरे लोग तेरे पराक्रम के दिन, और भोर के गर्भ से निकलती हुई पवित्रता की शोभा पाकर प्रसन्न होंगे; तेरे पास जवानी की ओस है।
4 यहोवा ने शपथ खाई और न पछताएगा, कि तू मलिकिसिदक की रीति पर युगानुयुग याजक रहेगा।
5 तेरे दाहिने हाथ यहोवा अपने क्रोध के दिन राजाओं को मार डालेगा।
6 वह अन्यजातियों के बीच न्याय करेगा, वह स्थानों को लोथों से भर देगा; वह बहुत से देशों के लोगों के सिर काटेगा।
7 वह मार्ग में नाले का जल पीएगा, इसलिये वह अपना सिर ऊंचा करेगा।

अध्याय 111

1 यहोवा की स्तुति करो! मैं सीधे लोगों की मण्डली में और मण्डली में भी पूरे मन से यहोवा की स्तुति करूंगा।
2 यहोवा के काम बड़े हैं, जो उन से प्रसन्न होते हैं, वे उन पर ध्यान करते हैं।
3 उसका काम आदरणीय और महिमामय है, और उसका धर्म सदा तक बना रहेगा।
4 उसने अपने आश्चर्यकर्मों को स्मरण कराया है; यहोवा अनुग्रहकारी और करुणामय है।
5 वह अपने डरवैयों को भोजन देता है; वह अपनी वाचा को सदैव स्मरण रखता है।
6 उसने अपनी प्रजा को अपने कामों की शक्ति दिखाई है, कि वह उन्हें अन्यजातियों का भाग दे।
7 उसके हाथ के काम सत्य और न्याय हैं; उसकी सब आज्ञाएँ विश्वासयोग्य हैं।
8 वे सदा सर्वदा स्थिर रहेंगे, और सच्चाई और धर्म से किए गए हैं।
9 उसने अपनी प्रजा को छुटकारा दिया है; उसने अपनी वाचा सदा की ठहराई है; उसका नाम पवित्र और आदरणीय है।
10 यहोवा का भय मानना बुद्धि का आरम्भ है; जो उसकी आज्ञाओं को मानते हैं, उन में अच्छी समझ होती है; उसकी स्तुति सदा तक बनी रहती है।

अध्याय 112

1 यहोवा की स्तुति करो! क्या ही धन्य है वह मनुष्य जो यहोवा का भय मानता है, और उसकी आज्ञाओं से अति प्रसन्न रहता है!
2 उसका वंश पृथ्वी पर पराक्रमी होगा, धर्मी लोगों की पीढ़ी धन्य होगी।
3 उसके घर में धन-सम्पत्ति रहेगी, और उसका धर्म सदा बना रहेगा।
4 धर्मी लोगों के लिये अन्धकार में ज्योति उदय होती है; वह अनुग्रहकारी, करुणानिधान और धर्मी है।

5 भला मनुष्य अनुग्रह करके उधार देता है; वह अपने काम विवेक से चलाता है।
6 निश्चय वह सदा तक न डगमगाएगा; धर्मी का स्मरण सर्वदा होता रहेगा।
7 वह बुरी ख़बर से नहीं डरेगा, उसका दिल यहोवा पर भरोसा रखने से मज़बूत रहेगा।
8 उसका हृदय दृढ़ है, और वह तब तक न डरेगा, जब तक वह अपने शत्रुओं पर अपनी इच्छा पूरी न कर ले।
9 उसने गरीबों को तितर-बितर किया, उसने गरीबों को दान दिया; उसका धर्म सदा बना रहेगा; उसका सींग सम्मान के साथ ऊंचा किया जाएगा।
10 दुष्ट लोग इसे देखकर दुखी होंगे; वे दांत पीसकर पिघल जाएंगे; दुष्टों की अभिलाषा नष्ट हो जाएगी।

अध्याय 113

1 यहोवा की स्तुति करो! हे यहोवा के सेवको, स्तुति करो! यहोवा के नाम की स्तुति करो!
2 यहोवा का नाम अब से लेकर सदा तक धन्य माना जाए।
3 उदयाचल से लेकर अस्ताचल तक यहोवा का नाम स्तुति के योग्य है।
4 यहोवा सब जातियों के ऊपर महान है, और उसकी महिमा स्वर्ग से भी ऊपर है।
5 हमारे परमेश्वर यहोवा के तुल्य कौन है, जो ऊंचे पर विराजमान है?
6 जो स्वर्ग में और पृथ्वी पर की वस्तुओं को देखने के लिये अपने आप को दीन करता है!
7 वह दरिद्र को धूलि में से उठाता, और दरिद्र को घूरे में से निकालता है;
8 और वह उसको हाकिमों के संग, अर्थात अपनी प्रजा के हाकिमों के संग बैठाए।
9 वह बांझ को घर सम्भालने और बालकों की आनन्दित माता बनाता है। यहोवा की स्तुति करो।

अध्याय 114

1 जब इस्राएल ने मिस्र से, अर्थात् याकूब के घराने ने अन्य भाषा बोलनेवाले लोगों के बीच से प्रस्थान किया,
2 यहूदा उसका पवित्रस्थान और इस्राएल उसका राज्य था।
3 समुद्र यह देखकर भाग गया; और यरदन नदी पीछे हट गई।
4 पहाड़ मेढ़ों की नाईं उछलने लगे, और पहाड़ियाँ मेमनों की नाईं उछलने लगीं।
5 हे समुद्र, तुझे क्या हुआ कि तू भाग गया? हे यरदन, तुझे क्या हुआ कि तू पीछे हट गया?
6 हे पहाड़ों, तुम मेढ़ों की नाईं उछलते हो, और हे पहाड़ियों, तुम भेड़ों के बच्चों की नाईं उछलते हो?
7 हे पृथ्वी, यहोवा के साम्हने, याकूब के परमेश्वर के साम्हने थरथरा!
8 उस ने चट्टान को स्थिर जल बना दिया, और चकमक पत्थर को जल का सोता बना दिया।

अध्याय 115

1 हे यहोवा, हमारी नहीं, हमारी नहीं, परन्तु अपने ही नाम की महिमा कर, यह तेरी करूणा और सच्चाई के कारण है।
2 अन्यजाति लोग क्यों कहने पाएं, कि उनका परमेश्वर कहां है?
3 परन्तु हमारा परमेश्वर स्वर्ग में है; उस ने जो चाहा वही किया है।
4 उनकी मूरतें सोने-चाँदी की हैं, वे मनुष्यों के हाथ की बनाई हुई हैं।
5 उनके मुंह तो हैं, परन्तु वे बोल नहीं सकतीं; उनके आंखें तो हैं, परन्तु वे देख नहीं सकतीं;
6 उनके कान तो हैं, परन्तु वे सुनते नहीं; उनके नाक तो हैं, परन्तु वे सूँघते नहीं;
7 उनके हाथ तो रहते हैं, परन्तु वे छू नहीं सकतीं; उनके पांव तो रहते हैं, परन्तु वे चल नहीं सकतीं; और वे गले से कुछ नहीं बोलतीं।
8 जो उनको बनाते हैं वे उनके समान हैं; और जो कोई उन पर भरोसा रखता है वह भी उनके समान है।
9 हे इस्राएल, यहोवा पर भरोसा रख; वही उनका सहायक और ढाल है।
10 हे हारून के घराने, यहोवा पर भरोसा रखो; वही उनका सहायक और ढाल है।
11 हे यहोवा के डरवैयों, यहोवा पर भरोसा रखो; वही उनका सहायक और ढाल है।
12 यहोवा ने हम पर ध्यान दिया है; वह हम को आशीष देगा; वह इस्राएल के घराने को आशीष देगा; वह हारून के घराने को आशीष देगा।
13 वह यहोवा के डरवैयों को, चाहे छोटे हों या बड़े, आशीष देगा।
14 यहोवा तुझे और तेरे वंश को अधिक बढ़ाता जाएगा।
15 तुम यहोवा की ओर से धन्य हो, जिसने आकाश और पृथ्वी को बनाया है।
16 स्वर्ग तो यहोवा का है, परन्तु पृथ्वी उसने मनुष्यों को दी है।
17 मरे हुए लोग यहोवा की स्तुति नहीं करते, न ही वे जो चुपचाप चले जाते हैं।
18 परन्तु हम यहोवा को अब से लेकर सर्वदा तक धन्य कहते रहेंगे। यहोवा की स्तुति करो।

अध्याय 116

1 मैं यहोवा से प्रेम रखता हूं, इसलिये कि उसने मेरे गिड़गिड़ाने को सुना है।
2 क्योंकि उसने मेरी ओर कान लगाया है, इसलिये मैं जीवन भर उसको पुकारता रहूंगा।
3 मृत्यु के शोक ने मुझे घेर लिया, और नरक की पीड़ाओं ने मुझे जकड़ लिया; मैं संकट और शोक में पड़ा रहा।
4 तब मैं ने यहोवा से प्रार्थना की, हे यहोवा, मेरी बिनती सुन, मेरे प्राण बचा ले।
5 यहोवा अनुग्रहकारी और धर्मी है; हमारा परमेश्वर दयालु है।
6 यहोवा भोले लोगों की रक्षा करता है; मैं दबा हुआ था, और उसने मेरी सहायता की।
7 हे मेरे प्राण, अपने विश्राम में लौट आ; क्योंकि यहोवा ने तुझ पर कृपा की है।

8 क्योंकि तू ने मेरे प्राण को मृत्यु से, मेरी आंखों को आँसुओं से, और मेरे पाँव को ठोकर खाने से बचाया है।
9 मैं जीवितों की भूमि में यहोवा के सामने चलूँगा।
10 मैं ने विश्वास किया, इसलिये बोला; मैं बहुत व्याकुल हुआ।
11 मैं ने उतावली में कहा, सब मनुष्य झूठे हैं।
12 यहोवा ने मेरे लिये जो उपकार किए हैं, उनके बदले में मैं उसको क्या बदला दूं?
13 मैं उद्धार का कटोरा लेकर यहोवा से प्रार्थना करूंगा।
14 अब मैं यहोवा के लिये अपनी मन्नतें उसकी सारी प्रजा के साम्हने पूरी करूंगा।
15 यहोवा के भक्तों की मृत्यु उसकी दृष्टि में अनमोल है।
16 हे यहोवा, सचमुच मैं तेरा दास हूँ; मैं तेरा दास, और तेरी दासी का पुत्र हूँ; तू ने मेरे बन्धन खोल दिये हैं।
17 मैं तेरे लिये धन्यवादबलि चढ़ाऊंगा, और यहोवा से प्रार्थना करूंगा।
18 अब मैं यहोवा के लिये अपनी मन्नतें उसकी सारी प्रजा के साम्हने पूरी करूंगा,
19 हे यरूशलेम, यहोवा के भवन के आंगनों में, अपने भीतर यहोवा की स्तुति करो!

अध्याय 117

1 हे जाति जाति के सब लोगो, यहोवा की स्तुति करो; हे राज्य राज्य के सब लोगो, उसकी स्तुति करो!
2 क्योंकि उसकी करूणा हम पर बड़ी है, और यहोवा की सच्चाई सदा तक बनी रहेगी। यहोवा की स्तुति करो।

अध्याय 118

1 यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है; उसकी करूणा सदा की है।
2 अब इस्राएल कहे, कि उसकी करूणा सदा की है।
3 हारून का घराना कहे, कि उसकी करूणा सदा की है।
4 यहोवा के डरवैये कहें, उसकी करूणा सदा की है।
5 संकट में मैं ने यहोवा को पुकारा; यहोवा ने मेरी सुन ली, और मुझे चौड़े स्थान में बसाया।
6 यहोवा मेरी ओर है; मैं न डरूंगा; मनुष्य मेरा क्या कर सकता है?
7 यहोवा मेरा भाग मेरे सहायकों के साथ करता है; इसलिये मैं अपने बैरियों पर अपनी इच्छा पूरी करूंगा।
8 यहोवा पर भरोसा रखना, मनुष्य पर भरोसा रखने से उत्तम है।
9 यहोवा पर भरोसा रखना, हाकिमों पर भरोसा रखने से उत्तम है।
10 सब जातियों ने मुझे घेर लिया है, परन्तु यहोवा के नाम से मैं उनको नाश करूंगा।
11 उन्होंने मुझे घेर लिया है; हां, उन्होंने मुझे घेर लिया है; परन्तु यहोवा के नाम से मैं उन्हें नष्ट कर दूंगा।
12 वे मधुमक्खियों की नाईं मुझे घेर लेते हैं; वे कांटों की आग की नाईं बुझ जाते हैं; क्योंकि यहोवा के नाम से मैं उन्हें नाश कर डालूंगा।
13 तू ने मुझे बहुत मारा है कि मैं गिर पड़ूं; परन्तु यहोवा ने मेरी सहायता की है।
14 यहोवा मेरा बल और भजन का विषय है, और वह मेरा उद्धार हो गया है।
15 धर्मियों के तम्बूओं में आनन्द और उद्धार का शब्द सुनाई देता है; यहोवा का दाहिना हाथ पराक्रम करता है।
16 यहोवा का दहिना हाथ महान् है; यहोवा का दहिना हाथ पराक्रम से काम करता है।
17 मैं न मरूंगा, परन्तु जीवित रहूंगा, और यहोवा के कामों का वर्णन करता रहूंगा।
18 यहोवा ने मुझे बड़ी ताड़ना तो की है, परन्तु मुझे मृत्यु के वश में नहीं किया है।
19 मेरे लिये धर्म के द्वार खोलो, मैं उनके भीतर प्रवेश करके यहोवा की स्तुति करूंगा।
20 यह यहोवा का फाटक है, जिस से धर्मी लोग प्रवेश करेंगे।
21 मैं तेरी स्तुति करूंगा, क्योंकि तू ने मेरी सुन ली है, और मेरा उद्धार हो गया है।
22 जिस पत्थर को राजमिस्त्रियों ने अस्वीकार किया था, वही कोने का सिरा बन गया है।
23 यह यहोवा का कार्य है; यह हमारी दृष्टि में अद्भुत है।
24 आज वह दिन है जो यहोवा ने बनाया है; हम इस में आनन्दित और मगन होंगे।
25 हे यहोवा, अब बचा ले! हे यहोवा, अब बचा ले! हे यहोवा, अब बचा ले!
26 धन्य है वह जो यहोवा के नाम से आता है; हमने तुम्हें यहोवा के घर से आशीर्वाद दिया है।
27 परमेश्वर यहोवा है, जिसने हमें प्रकाश दिखाया है: बलि को रस्सियों से वेदी के सींगों तक बांधो।
28 तू मेरा परमेश्वर है, मैं तेरी स्तुति करूंगा; तू मेरा परमेश्वर है, मैं तुझे सराहूंगा।
29 यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है; उसकी करूणा सदा की है।

अध्याय 119

1 अलेफि. धन्य हैं वे जो अपने मार्ग के निर्दोष हैं, और यहोवा की व्यवस्था पर चलते हैं।
2 धन्य हैं वे जो उसकी चितौनियों को मानते हैं, और पूर्ण मन से उसके पास आते हैं।
3 वे कोई कुटिल काम नहीं करते, वे उसके मार्गों पर चलते हैं।
4 तूने हमें अपने उपदेशों को यत्न से मानने की आज्ञा दी है।
5 भला होता कि मैं तेरे नियमों के अनुसार चलता!
6 तब मैं तेरी सब आज्ञाओं पर ध्यान करूंगा, और लज्जित न होऊंगा।
7 जब मैं तेरे धर्ममय नियमों को सीखूंगा, तब मन की सीधाई से तेरी स्तुति करूंगा।
8 मैं तेरे नियमों को मानूंगा; मुझे पूरी तरह न त्याग!
9 बेतहाशा: जवान अपनी चाल किस उपाय से शुद्ध रखे? तेरे वचन के अनुसार सावधान रहने से।
10 मैं पूरे दिल से तेरी खोज में लगा हूँ; मुझे तेरी आज्ञाओं की राह से भटकने न दे।
11 मैं ने तेरे वचन को अपने हृदय में रख छोड़ा है, कि तेरे विरुद्ध पाप न करूं।
12 हे यहोवा, तू धन्य है; मुझे अपनी विधियां सिखा!
13 मैं ने तेरे सब नियमों को अपने होठों से बताया है।
14 मैं तेरे उपदेशों के मार्ग से उतना ही आनन्दित हुआ हूँ, जितना सब प्रकार के धन से।

15 मैं तेरे उपदेशों पर ध्यान करूंगा, और तेरे मार्गों पर दृष्टि रखूंगा।
16 मैं तेरे नियमों से सुखी रहूंगा, और तेरे वचन को न भूलूंगा।
17 हे गीमेल, अपने दास पर दया कर, कि मैं जीवित रहूं, और तेरे वचन को मानता रहूं।
18 मेरी आंखें खोल दे कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्भुत बातें देख सकूं।
19 मैं पृथ्वी पर परदेशी हूं; अपनी आज्ञाएं मुझ से न छिपा।
20 मेरा मन तेरे नियमों की अभिलाषा से हर समय टूटता रहता है।
21 तू ने अभिमानियों को डांटा है, जो शापित हैं, और तेरी आज्ञाओं से भटक जाते हैं।
22 मुझ से नामधराई और अपमान दूर कर; क्योंकि मैं तेरे चितौनियों को मानता आया हूं।
23 हाकिम भी बैठ कर मेरे विरुद्ध बातें करते थे; परन्तु तेरा दास तेरी विधियों पर ध्यान करता रहा।
24 तेरी चितौनियाँ मेरे सुख का कारण और मेरे सलाहकार हैं।
25 हे मेरे प्राण धूल में मिल गए हैं; तू अपने वचन के अनुसार मुझे जिला।
26 मैं ने अपने मार्ग बताए हैं, और तू ने मेरी सुनी है; मुझे अपनी विधियां सिखा।
27 अपने उपदेशों का मार्ग मुझे समझा दे, तब मैं तेरे आश्चर्यकर्मों का वर्णन करूंगा।
28 मेरा प्राण दुख के मारे पिघल रहा है; अपने वचन के अनुसार मुझे दृढ़ कर।
29 झूठ का मार्ग मुझ से दूर कर, और अपनी व्यवस्था मुझे अनुग्रह से दे।
30 मैं ने सत्य का मार्ग चुन लिया है; मैं ने तेरे नियमों को अपने साम्हने रखा है।
31 मैं तेरी चितौनियों पर चलता रहा हूं; हे यहोवा, मुझे लज्जित न कर।
32 जब तू मेरा हृदय विस्तृत करेगा, तब मैं तेरी आज्ञाओं के मार्ग पर चलूंगा।
33 हे यहोवा, मुझे अपनी विधियों का मार्ग दिखा, तब मैं अन्त तक उस पर चलता रहूंगा।
34 मुझे समझ दे, तब मैं तेरी व्यवस्था को मानूंगा, और पूरे मन से उस पर चलूंगा।
35 मुझे अपनी आज्ञाओं के मार्ग पर चला, क्योंकि मैं उसी से प्रसन्न हूं।
36 मेरे मन को लोभ की ओर नहीं, परन्तु अपनी चितौनियों की ओर फेर।
37 मेरी आंखों को व्यर्थ वस्तुओं से फेर दे, और अपने मार्ग में मुझे जिला!
38 अपने दास को अपना वचन दृढ़ कर, जो तेरा भय मानता है।
39 मेरी उस नामधराई को दूर कर, जिससे मैं डरता हूं; क्योंकि तेरे नियम अच्छे हैं।
40 देख, मैं तेरे उपदेशों का अभिलाषी हूं; तू मुझे अपने धर्म के अनुसार जिला।
41 हे यहोवा, तेरी दया और तेरा उद्धार, तेरे वचन के अनुसार मुझ पर भी हो।
42 तब मैं अपने निन्दा करनेवाले को उत्तर दे सकूंगा, क्योंकि मैं ने तेरे वचन पर भरोसा रखा है।
43 और सत्य वचन को मेरे मुंह से न छीन, क्योंकि मैं तेरे नियमों पर आशा रखता हूं।
44 इस रीति से मैं तेरी व्यवस्था पर सदा सर्वदा चलता रहूंगा।
45 और मैं स्वतन्त्रता से चलूंगा, क्योंकि मैं तेरे उपदेशों का ध्यान रखता हूं।
46 मैं तेरी चितौनियों की चर्चा राजाओं के साम्हने भी करूंगा, और लज्जित न होऊंगा।
47 और मैं तेरी आज्ञाओं से प्रसन्न रहूंगा, जिन से मैं प्रेम रखता हूं।
48 मैं अपने हाथ तेरी आज्ञाओं की ओर जो मुझे प्रिय हैं, फैलाऊंगा, और तेरी विधियों पर ध्यान करूंगा।
49 ज़ैन: अपने दास से कहे हुए वचन को स्मरण कर, जिस पर तूने मुझे आशा दी है।
50 मेरे संकट में मुझे उसी से शान्ति मिलती है, क्योंकि तेरे वचन ने मुझे जिलाया है।
51 अभिमानियों ने मुझे बहुत ठट्ठों में उड़ाया है, तौभी मैं तेरी व्यवस्था से नहीं हटा।
52 हे यहोवा, मैं तेरे प्राचीन नियमों को स्मरण करके शान्ति पाया हूं।
53 उन दुष्टों के कारण जो तेरी व्यवस्था को त्याग देते हैं, मैं घबरा गया हूँ।
54 मेरे परदेशी घर में तेरे नियम मेरे गीत ठहरे हैं।
55 हे यहोवा, मैं ने रात को तेरा नाम स्मरण किया है, और तेरी व्यवस्था को माना है।
56 यह मुझे इसलिये मिला, कि मैं तेरे उपदेशों को मानता रहा।
57 हे यहोवा, तू ही मेरा भाग है; मैं ने कहा है कि मैं तेरे वचनों को मानूंगा।
58 मैं ने पूरे मन से तुझ से बिनती की है; अपने वचन के अनुसार मुझ पर अनुग्रह कर।
59 मैं अपने चालचलन पर विचार करने लगा, और तेरी चितौनियों की ओर अपने पांव फेरने लगा।
60 मैं ने तेरी आज्ञाओं को मानने में विलम्ब नहीं किया, वरन फुर्ती की है।
61 दुष्टों के दल ने मुझे लूट लिया है, परन्तु मैं तेरी व्यवस्था को नहीं भूला।
62 आधी रात को मैं तेरे धर्ममय निर्णयों के कारण तेरा धन्यवाद करने को उठूंगा।
63 मैं उन सब का संगी हूं जो तेरा भय मानते और तेरे उपदेशों को मानते हैं।
64 हे यहोवा, पृथ्वी तेरी करूणा से भरपूर है; मुझे अपनी विधियां सिखा।
65 हे यहोवा, तू ने अपने वचन के अनुसार अपने दास के साथ भलाई की है।
66 मुझे भली विवेक शक्ति और ज्ञान दे, क्योंकि मैं तेरे आदेशों पर विश्वास करता हूँ।
67 इससे पहले कि मैं दु:ख में पड़ा, मैं भटक गया था; परन्तु अब मैं ने तेरे वचन को मान लिया है।
68 तू भला है, और भलाई ही करता है; मुझे अपनी विधियां सिखा।
69 अभिमानियों ने मेरे विरुद्ध झूठ गढ़ा है; परन्तु मैं तेरे उपदेशों को पूरे मन से मानूंगा।
70 उनका मन तो चिकना है, परन्तु मैं तेरी व्यवस्था से प्रसन्न हूं।
71 मेरे लिये यह भला ही हुआ कि मैं दु:ख उठा, और तेरे नियमों को सीखूं।

72 तेरे मुँह की व्यवस्था मेरे लिये हज़ारों चाँदी और सोने से भी उत्तम है।
73 तेरे हाथों ने मुझे बनाया और रचा है; मुझे समझ दे कि मैं तेरी आज्ञाओं को सीखूं।
74 तेरे डरवैये मुझे देखकर आनन्दित होंगे, क्योंकि मैं ने तेरे वचन पर आशा रखी है।
75 हे यहोवा, मैं जानता हूं कि तेरे निर्णय धर्मी हैं, और तू ने सच्चाई से मुझे दु:ख दिया है।
76 हे प्रभु, मुझे शान्ति दे, क्योंकि तूने अपने दास को जो वचन दिया है, उसके अनुसार तेरी करूणा मुझे शान्ति दे।
77 तेरी दया मुझ पर हो, तब मैं जीवित रहूंगा; क्योंकि मैं तेरी व्यवस्था से प्रसन्न हूं।
78 अभिमानी लज्जित हों, क्योंकि उन्होंने अकारण मुझ से कुटिलता की है; परन्तु मैं तेरे उपदेशों पर ध्यान करूंगा।
79 जो तेरे डरवैये हैं, वे मेरी ओर फिरें, और जो तेरी चितौनियों को जानते हैं वे भी मेरी ओर फिरें।
80 मेरा मन तेरे नियमों के मानने में सिद्ध रहे, तब मुझे लज्जित होना न पड़ेगा।
81 कैफ्ही: मेरा प्राण तेरे उद्धार के लिये व्याकुल है, परन्तु मैं तेरे वचन पर आशा रखता हूं।
82 मेरी आंखें तेरे वचन सुनने की बाट जोहते रह गई हैं, और मैं कहता हूं, तू मुझे कब शान्ति देगा?
83 क्योंकि मैं धुएँ में की कुप्पी के समान हो गया हूँ; तौभी मैं तेरे नियमों को नहीं भूला।
84 तेरे दास के दिन कितने बचे हैं? तू मेरे सतानेवालों को कब दण्ड देगा?
85 अभिमानी लोग जो तेरी व्यवस्था के अनुसार नहीं चलते, उन्होंने मेरे लिये गड्ढा खोदा है।
86 तेरी सब आज्ञाएं विश्वासयोग्य हैं; वे मुझे अन्याय से सताते हैं; तू मेरी सहायता कर।
87 वे तो मुझे पृथ्वी पर से मिटा डालने ही वाले थे; तौभी मैं ने तेरे उपदेशों को न छोड़ा।
88 अपनी करूणा के अनुसार मुझ को जिला, तब मैं तेरे मुंह की चितौनियों को मानूंगा।
89 हे यहोवा, तेरा वचन सदा स्वर्ग में स्थिर रहता है।
90 तेरी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी तक बनी रहती है; तू ने पृथ्वी को स्थिर किया है, और वह बनी रहेगी।
91 वे आज भी तेरे नियमों के अनुसार चलते हैं, क्योंकि सब लोग तेरे दास हैं।
92 यदि तेरी व्यवस्था मेरी प्रसन्नता न होती, तो मैं क्लेश में नाश हो जाता।
93 मैं तेरे उपदेशों को कभी न भूलूंगा, क्योंकि उन्हीं के द्वारा तू ने मुझे जिलाया है।
94 मैं तेरा हूं, मुझे बचा; क्योंकि मैं तेरे उपदेशों की खोज में लगा हूं।
95 दुष्ट लोग मुझे नाश करने की घात में हैं; परन्तु मैं तेरी चितौनियों पर ध्यान करूंगा।
96 मैं ने सब प्रकार की सिद्धियों का अन्त देखा है, परन्तु तेरी आज्ञा का विस्तार अत्यन्त व्यापक है।
97 मेम. मैं तेरी व्यवस्था से कैसी प्रीति रखता हूं! दिन भर मेरा ध्यान उसी पर लगा रहता है।
98 तूने अपनी आज्ञाओं के द्वारा मुझे मेरे शत्रुओं से अधिक बुद्धिमान बनाया है, क्योंकि वे सदैव मेरे साथ रहती हैं।
99 मैं अपने सब शिक्षकों से भी अधिक समझ रखता हूँ, क्योंकि मेरा ध्यान तेरे चितौनियों पर लगा है।
100 मैं पुरनियों से अधिक समझदार हूँ, क्योंकि मैं तेरे उपदेशों को मानता हूँ।
101 मैं ने अपने पांवों को हर एक बुरे मार्ग से रोक रखा है, जिस से मैं तेरे वचन के अनुसार चलूं।
102 मैं तेरे नियमों से नहीं हटा, क्योंकि तू ही ने मुझे सिखाया है।
103 तेरे वचन मुझे कितने मीठे लगते हैं! हां, मेरे मुंह को मधु से भी अधिक मीठे लगते हैं!
104 तेरे उपदेशों के कारण मैं समझ प्राप्त करता हूं, इसलिये मैं सब मिथ्या मार्गों से घृणा करता हूं।
105 नून. तेरा वचन मेरे पांव के लिये दीपक, और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है।
106 मैं ने शपथ खाई है, और उसे पूरा भी करूंगा, कि मैं तेरे धर्ममय नियमों पर चलता रहूंगा।
107 मैं बहुत संकट में पड़ा हूं; हे यहोवा, अपने वचन के अनुसार मुझे जिला।
108 हे यहोवा, मेरे मुंह से निकली हुई स्वेच्छाबलि स्वीकार कर, और अपने नियम मुझे सिखा।
109 मेरा प्राण निरन्तर मेरे हाथ में रहता है, तौभी मैं तेरी व्यवस्था को नहीं भूलता।
110 दुष्टों ने मेरे लिये फंदा लगाया है, तौभी मैं तेरे उपदेशों से नहीं भटका।
111 मैं तेरे उपदेशों को सदा के लिये अपनी निज सम्पत्ति मानता हूं, क्योंकि वे मेरे हृदय के हर्ष का कारण हैं।
112 मैं ने अपने मन में यह ठान रखा है, कि अन्त तक तेरे नियमों पर चलता रहूं।
113 मैं व्यर्थ विचारों से घृणा करता हूं, परन्तु तेरी व्यवस्था से प्रेम रखता हूं।
114 तू ही मेरा शरणस्थान और मेरी ढाल है; मैं तेरे वचन पर आशा रखता हूं।
115 हे कुकर्म करनेवालो, मेरे पास से दूर हो जाओ; क्योंकि मैं अपने परमेश्वर की आज्ञाओं को मानूंगा।
116 अपने वचन के अनुसार मुझे सम्भाल, तब मैं जीवित रहूंगा, और मेरी आशा के विषय में मुझे लज्जित न होना पड़े।
117 हे प्रभु, तू मुझे सम्भाल, तब मैं सुरक्षित रहूंगा; और मैं निरन्तर तेरे नियमों पर ध्यान करता रहूंगा।
118 तूने उन सब को कुचल दिया है जो तेरे नियमों से भटक जाते हैं, क्योंकि उनका छल झूठ ही है।
119 तू पृथ्वी के सब दुष्टों को धातु के मैल के समान दूर करता है; इसलिये मैं तेरी चितौनियों से प्रीति रखता हूं।
120 तेरे भय से मेरा शरीर कांपता है, और मैं तेरे नियमों से डरता हूं।
121 ऐन: मैंने न्याय और इंसाफ़ किया है; इसलिए मुझे मेरे अन्धेर करनेवालों के हाथ मत छोड़ो।
122 अपने दास की भलाई के लिये उत्तरदायी हो; अभिमानी मुझ पर अत्याचार न करने पाएं।
123 मेरी आंखें तेरे उद्धार और तेरे धर्ममय वचन के प्रति आसक्त हो गई हैं।
124 अपने दास से अपनी दया के अनुसार बर्ताव कर, और मुझे अपनी विधियां सिखा।
125 मैं तेरा दास हूँ; मुझे समझ दे कि मैं तेरी चितौनियों को समझूं।

126 हे यहोवा, तेरे लिये काम करने का समय आ गया है, क्योंकि उन्होंने तेरी व्यवस्था को व्यर्थ कर दिया है।
127 इसलिये मैं तेरे आदेशों को सोने से भी अधिक, वरन कुन्दन से भी अधिक प्रिय मानता हूं।
128 इसलिये मैं तेरे सब उपदेशों को सब बातों के विषय में धर्मी जानता हूं, और सब मिथ्या मार्गों से घृणा करता हूं।
129 पी.ई. तेरी चितौनियां अद्भुत हैं, इसलिये मैं उन को मन से मानता हूं।
130 तेरे वचनों के प्रवेश से प्रकाश निकलता है; उस से भोले लोग समझ प्राप्त करते हैं।
131 मैं ने मुंह खोलकर हांफ दिया, क्योंकि मैं तेरे आदेशों का अभिलाषी था।
132 जैसे तू अपने नाम के प्रेमियों के साथ करता है, वैसे ही मुझ पर भी दृष्टि कर और दया कर।
133 अपने वचन के अनुसार मेरे कदमों को मार्ग दिखा, और किसी अनर्थ बात को मुझ पर प्रभुता न करने दे।
134 मुझे मनुष्य के अन्धेर से छुड़ा, तब मैं तेरे उपदेशों को मानूंगा।
135 अपने दास पर अपने मुख का प्रकाश चमका, और मुझे अपनी विधियां सिखा।
136 मेरी आंखों से जल की धारा बहती रहती है, क्योंकि वे तेरे नियम को नहीं मानते।
137 तज़द्दी: हे यहोवा, तू धर्मी है, और तेरे निर्णय ठीक हैं।
138 तेरी दी हुई चितौनियाँ धर्ममय और अति विश्वासयोग्य हैं।
139 मेरी जलन ने मुझे भस्म कर दिया है, क्योंकि मेरे शत्रु तेरे वचनों को भूल गए हैं।
140 तेरा वचन बहुत पवित्र है, इसलिये तेरा दास उसे प्रेम करता है।
141 मैं छोटा और तुच्छ हूं, तौभी मैं तेरे उपदेशों को नहीं भूलता।
142 तेरा धर्म सदा का धर्म है, और तेरी व्यवस्था सत्य है।
143 संकट और संकट ने मुझे पकड़ लिया है; तौभी मैं तेरी आज्ञाओं से प्रसन्न हूं।
144 तेरी चितौनियों की धार्मिकता सदा की है; मुझे समझ दे, तब मैं जीवित रहूंगा।
145 हे यहोवा, मैं ने पूरे मन से प्रार्थना की है; हे यहोवा, मेरी सुन ले; मैं तेरे नियमों को मानूंगा।
146 मैं ने तेरी दोहाई दी है; मुझे बचा, और मैं तेरी चितौनियों को मानूंगा।
147 मैं ने भोर होने से रोककर पुकारा, मैं तेरे वचन पर आशा रखता हूं।
148 मेरी आंखें रात के एक एक पहर में लगी रहती हैं, कि मैं तेरे वचन पर ध्यान करूं।
149 अपनी करूणा के अनुसार मेरी बात सुन; हे यहोवा, अपने न्याय के अनुसार मुझे जिला।
150 जो बुराई के पीछे भागते हैं, वे तेरे निकट आते हैं; वे तेरे नियम से दूर रहते हैं।
151 हे यहोवा, तू निकट है; और तेरी सब आज्ञाएं सत्य हैं।
152 मैं तो बहुत समय से जानता हूं कि तेरी चितौनियां सदा के लिये स्थिर की गई हैं।
153 मेरे दुख पर ध्यान दे और मुझे छुड़ा ले, क्योंकि मैं तेरी व्यवस्था को नहीं भूला।
154 मेरा मुक़द्दमा लड़ और मुझे छुड़ा; अपने वचन के अनुसार मुझे जिला!
155 दुष्टों से उद्धार दूर है, क्योंकि वे तेरे नियमों की खोज नहीं करते।
156 हे यहोवा, तेरी दया बड़ी है; अपने नियमों के अनुसार मुझे जिला।
157 मेरे सतानेवाले और शत्रु बहुत हैं; तौभी मैं तेरी चितौनियों से नहीं हटता।
158 मैं अपराधियों को देखकर उदास हुआ, क्योंकि उन्होंने तेरे वचन का पालन नहीं किया।
159 ध्यान कर कि मैं तेरे उपदेशों से कितनी प्रीति रखता हूं; हे यहोवा, अपनी करूणा के अनुसार मुझे जिला।
160 तेरा वचन आदि से सच्चा है, और तेरे एक एक धर्ममय नियम युगानुयुग स्थिर रहेंगे।
161 शिन्. हाकिमों ने मुझे अकारण सताया है, परन्तु मेरा हृदय तेरे वचन से भय खाता है।
162 मैं तेरे वचन सुनकर ऐसा आनन्दित हूं, जैसा कोई बड़ी लूट पाकर आनन्दित होता है।
163 झूठ से तो मैं घृणा करता हूं, परन्तु तेरी व्यवस्था से प्रीति रखता हूं।
164 तेरे धर्ममय निर्णयों के कारण मैं प्रतिदिन सात बार तेरी स्तुति करता हूँ।
165 तेरे व्यवस्था से प्रेम रखनेवालों को बड़ी शान्ति होती है, और उनको कोई बात ठोकर नहीं खिलाती।
166 हे यहोवा, मैं तेरे उद्धार की आशा रखता हूं, और तेरी आज्ञाओं का पालन करता हूं।
167 मेरा मन तेरे चितौनियों को मानता है, और मैं उन से बहुत प्रीति रखता हूं।
168 मैं तेरे उपदेशों और चितौनियों को मानता आया हूँ; क्योंकि मेरे सारे चालचलन तेरे सम्मुख प्रगट हैं।
169 हे यहोवा, मेरी दोहाई तेरे सम्मुख पहुंचे; अपने वचन के अनुसार मुझे समझ दे।
170 मेरी प्रार्थना तेरे पास आ; अपने वचन के अनुसार मुझे छुड़ा।
171 जब तू मुझे अपनी विधियां सिखाएगा, तब मेरे मुंह से तेरी स्तुति निकलेगी।
172 मेरी जीभ तेरे वचन बोलेगी, क्योंकि तेरी सब आज्ञाएं धर्ममय हैं।
173 तेरा हाथ मेरी सहायता कर, क्योंकि मैं ने तेरे उपदेशों को चुन लिया है।
174 हे यहोवा, मैं तेरे उद्धार की अभिलाषा करता हूं; और तेरी व्यवस्था मेरा सुख है।
175 मेरा प्राण जीवित रहे, और वह तेरी स्तुति करे; और तेरे निर्णय मुझे सहायता दें।
176 मैं खोई हुई भेड़ की नाईं भटक गया हूं; अपने दास को ढूंढ़ ले, क्योंकि मैं तेरी आज्ञाएं नहीं भूला हूं।

अध्याय 120

1 संकट में मैं ने यहोवा को पुकारा, और उसने मेरी सुन ली।
2 हे यहोवा, मेरे प्राण को झूठ बोलनेवाले होठों से और छल करनेवाली जीभ से बचा ले।
3 हे झूठ बोलनेवाली जीभ, तुझे क्या दिया जाएगा? या तुझ से क्या किया जाएगा?
4 पराक्रमी के तीखे तीर, और सनोवर के अंगारे।

5 हाय मुझ पर, कि मैं मेशेक में परदेशी होकर रहता हूं, और केदार के तम्बुओं में रहता हूं!
6 मेरा मन बहुत दिनों से उसके संग रहता है जो मेल से बैर रखता है।
7 मैं तो शांति चाहता हूँ, परन्तु जब मैं बोलता हूँ, तो वे युद्ध चाहते हैं।

अध्याय 121

1 (डिग्री का एक गीत) मैं अपनी आंखें पहाड़ों की ओर लगाऊंगा, जहां से मेरी सहायता आती है।
2 मुझे सहायता यहोवा की ओर से मिलती है, जिसने आकाश और पृथ्वी को बनाया है।
3 वह तेरे पांव को टलने न देगा, तेरा रक्षक कभी ऊंघेगा नहीं।
4 देखो, इस्राएल का रक्षक न ऊंघेगा, न सोएगा।
5 यहोवा तेरा रक्षक है; यहोवा तेरे दाहिने हाथ की आड़ है।
6 दिन में सूर्य तुझ को कष्ट न देगा, और न रात में चन्द्रमा।
7 यहोवा तुझे सारी बुराई से बचाएगा, वह तेरे प्राण की रक्षा करेगा।
8 यहोवा अब से लेकर सदा तक तेरे आने जाने में रक्षा करेगा।

अध्याय 122

1 (दाऊद का एक गीत) जब लोगों ने मुझ से कहा, कि आओ, हम यहोवा के भवन में चलें, तब मैं आनन्दित हुआ।
2 हे यरूशलेम, हमारे पांव तेरे फाटकों के भीतर खड़े रहेंगे।
3 यरूशलेम एक ऐसा नगर है जो एक साथ मिलकर बना है:
4 वहां यहोवा के गोत्रों के लोग इस्राएल की साक्षी के पास यहोवा के नाम का धन्यवाद करने को जाते हैं।
5 क्योंकि वहां न्याय के सिंहासन, अर्थात दाऊद के घराने के सिंहासन रखे हुए हैं।
6 यरूशलेम की शान्ति के लिये प्रार्थना करो; जो तुझ से प्रेम रखते हैं वे सफल होंगे।
7 तेरी शहरपनाह के भीतर शान्ति और तेरे महलों में समृद्धि हो।
8 अपने भाइयों और साथियों के निमित्त मैं अब कहूंगा, कि तुम्हारे भीतर शान्ति बनी रहे।
9 अपने परमेश्वर यहोवा के भवन के कारण मैं तेरी भलाई का यत्न करूंगा।

अध्याय 123

1 (डिग्री का एक गीत।) हे स्वर्ग में रहने वाले, मैं अपनी आँखें तेरी ओर उठाता हूँ।
2 देखो, जैसे दासों की आंखें अपने स्वामी के हाथ की ओर, और कुमारी की आंखें अपनी स्वामिनी के हाथ की ओर लगी रहती हैं, वैसे ही हमारी आंखें अपने परमेश्वर यहोवा की ओर तब तक लगी रहेंगी, जब तक वह हम पर दया न करे।
3 हे यहोवा, हम पर दया कर, हम पर दया कर; क्योंकि हम अत्यन्त घृणा से भर गए हैं।
4 हमारा मन सुखी लोगों की ठट्ठा से, और अभिमानियों की घृणा से अत्यन्त भर गया है।

अध्याय 124

1 (दाऊद का एक गीत) यदि यहोवा हमारी ओर न होता, तो अब इस्राएल कहता;
2 यदि यहोवा उस समय हमारी ओर न होता, जब लोग हमारे विरुद्ध उठे थे,
3 जब उनका क्रोध हम पर भड़का, तब उन्होंने हम को तुरन्त निगल लिया।
4 तब जल ने हम को डुबा दिया, और धारा हमारे प्राणों के ऊपर से बह गई।
5 तब घमंडी जल हमारी आत्मा पर बह गया था।
6 धन्य है यहोवा, जिसने हमें उनके दांतों का शिकार नहीं बनने दिया।
7 हमारा प्राण पक्षी के समान बहेलिये के जाल से छूट गया है; जाल टूट गया है, और हम बच गये हैं।
8 हमारी सहायता यहोवा के नाम से होती है, जिसने आकाश और पृथ्वी को बनाया है।

अध्याय 125

1 जो यहोवा पर भरोसा रखते हैं, वे सिय्योन पर्वत के समान हैं, जो टल नहीं सकता, वरन सदा बना रहता है।
2 जैसे यरूशलेम के चारों ओर पहाड़ हैं, वैसे ही यहोवा अपनी प्रजा के चारों ओर अब से लेकर सर्वदा रहेगा।
3 क्योंकि दुष्टों की लाठी धर्मी के भाग पर न पड़ेगी, ऐसा न हो कि धर्मी अपना हाथ कुटिलता की ओर बढ़ाए।
4 हे यहोवा, जो लोग भले हैं, उनका भला कर, और जो मन से सीधे हैं।
5 जो लोग अपने टेढ़े मार्गों पर चलते हैं, यहोवा उन्हें कुटिल काम करने वालों के संग निकाल लेगा; परन्तु इस्राएल पर शान्ति बनी रहेगी।

अध्याय 126

1 जब यहोवा ने सिय्योन के लोगों को बन्दियों से छुड़ाया, तब हम स्वप्न देखने वालों के समान हो गए।
2 तब हमारा मुंह हंसी से और हमारी जीभ जयजयकार से भर गई; तब अन्यजातियों में से लोग कहने लगे, यहोवा ने उनके लिये बड़े बड़े काम किए हैं।
3 यहोवा ने हमारे लिये बड़े बड़े काम किए हैं; हम उनसे आनन्दित हैं।
4 हे यहोवा, हमारे बन्धुआई को दक्षिण की नदियों के समान लौटा ले आ।
5 जो आँसू बहाते हुए बोते हैं, वे आनन्द से कटेंगे।
6 जो कोई बहुमूल्य बीज लेकर रोता हुआ निकलेगा, वह निश्चय ही पूलियां लेकर आनन्दित होकर लौटेगा।

अध्याय 127

1 (सुलैमान के लिए एक गीत) यदि यहोवा घर नहीं बनाता, तो उसके बनाने वालों का परिश्रम व्यर्थ होता है; यदि यहोवा नगर की रक्षा नहीं करता, तो पहरेदार व्यर्थ जागता है।

2 तुम्हारे लिये सवेरे उठना और देर तक बैठना और दु:ख भरी रोटी खाना व्यर्थ है; क्योंकि वह अपने प्रिय को इसी रीति से सोने देता है।
3 देखो, लड़के यहोवा के भाग हैं, और गर्भ का फल उसकी ओर से प्रतिफल है।
4 जैसे वीर के हाथ में तीर होते हैं, वैसे ही जवानी के बच्चे होते हैं।
5 धन्य है वह मनुष्य जिसका तर्कश उनसे भरा हुआ है; वे लज्जित न होंगे, वरन फाटक पर शत्रुओं से बातें करेंगे।

अध्याय 128

1 धन्य है हर एक मनुष्य जो यहोवा का भय मानता है, और उसके मार्गों पर चलता है।
2 क्योंकि तू अपने परिश्रम का फल भोगेगा; तू धन्य होगा, और तेरा कल्याण होगा।
3 तेरी पत्नी तेरे घर के चारों ओर फलवन्त दाखलता के समान होगी; और तेरे बालक तेरी मेज़ के चारों ओर जैतून के पौधे के समान होंगे।
4 देखो, जो मनुष्य यहोवा का भय मानता है, वह इसी रीति से धन्य होगा।
5 यहोवा तुझे सिय्योन से आशीष देगा, और तू जीवन भर यरूशलेम का कुशल क्षेम देखता रहेगा।
6 हां, तू अपने नाती-पोतों को देखने पाएगा, और इस्राएल पर शांति बनी रहेगी।

अध्याय 129

1 (डिग्री का एक गीत) मेरी जवानी से ही उन्होंने मुझे कई बार दुख दिया है, अब इस्राएल कहे:
2 बचपन से ही वे मुझे बार बार दु:ख देते आए हैं, तौभी वे मुझ पर प्रबल नहीं हुए।
3 हल चलानेवाले मेरी पीठ पर हल चलाते थे, और अपनी लम्बी-लम्बी लकीरें बनाते थे।
4 यहोवा धर्मी है; उस ने दुष्टों की रस्सियां काट डाली हैं।
5 जो सिय्योन से बैर रखते हैं, वे सब लज्जित हों और पीछे हट जाएं।
6 वे छत पर की घास के समान हों जो बढ़ने से पहले ही सूख जाती है।
7 उस से घास काटनेवाला अपना हाथ नहीं भरता, और न पूले बान्धनेवाला अपनी छाती भरता है।
8 और न कोई चलता हुआ यह कहता है, कि यहोवा का आशीर्वाद तुम पर हो; हम यहोवा के नाम से तुम्हें आशीर्वाद देते हैं।

अध्याय 130

1 (एक गीत की डिग्री) हे यहोवा, मैं ने गहरी खाई में से तुझ को पुकारा है।
2 हे प्रभु, मेरी आवाज़ सुनो; अपने कान मेरी प्रार्थना की आवाज़ पर लगाओ।
3 हे यहोवा, यदि तू अधर्म के कामों पर दृष्टि करे, तो हे प्रभु, कौन खड़ा रह सकेगा?
4 परन्तु तेरे पास क्षमा है, इसलिये लोग तेरा भय मानते हैं।
5 मैं यहोवा पर आशा लगाए हूं, मेरा प्राण उस पर आशा लगाए हुए है, और मैं उसके वचन पर आशा लगाए हूं।
6 मेरा प्राण यहोवा की बाट जोहता रहता है, उस से भी अधिक जो भोर का इंतजार करता रहता है। मैं कहता हूं, मेरा प्राण यहोवा की बाट जोहता रहता है, उस से भी अधिक जो भोर का इंतजार करता रहता है।
7 इस्राएल यहोवा पर भरोसा रखे; क्योंकि यहोवा करुणा करनेवाला और बड़ा छुटकारा देनेवाला है।
8 और वह इस्राएल को उसके सारे अधर्म के कामों से छुड़ाएगा।

अध्याय 131

1 (दाऊद का एक गीत) हे यहोवा, मेरा हृदय घमण्डी नहीं है, न मेरी आंखें घमण्ड से भरी हैं; न मैं बड़े कामों में, न उन बातों में जो मेरे लिये अधिक ऊंची हैं, परिश्रम करता हूं।
2 निश्चय मैं उस बालक के समान चुप रहता हूं जो अपनी मां से दूध छुड़ाया हुआ हो; मेरा प्राण भी दूध छुड़ाए हुए बालक के समान है।
3 इस्राएल यहोवा पर अब से लेकर सर्वदा आशा रखता रहे।

अध्याय 132

1 हे यहोवा, दाऊद को और उसके सब क्लेशों को स्मरण कर।
2 उसने यहोवा की शपथ खाई, और याकूब के पराक्रमी परमेश्वर की मन्नत मानी;
3 निश्चय मैं अपने घर के तम्बू में न आऊंगा, और न अपने बिछौने पर चढ़ूंगा;
4 मैं अपनी आँखों को नींद नहीं दूँगा, और न अपनी पलकों को ऊंघने दूँगा,
5 जब तक मैं यहोवा के लिये स्थान, अर्थात् याकूब के शक्तिशाली परमेश्वर के लिये निवासस्थान न ढूंढ़ लूं।
6 देखो, हम ने एप्राता में उसके विषय में सुना; हम ने उसे जंगल के मैदान में पाया।
7 हम उसके मण्डपों में जाएंगे, और उसके पांवों की चौकी के पास दण्डवत् करेंगे।
8 हे यहोवा, तू अपनी सामर्थ्य के सन्दूक समेत अपने विश्राम में आ जा!
9 तेरे याजक धर्म का वस्त्र पहिने रहें, और तेरे भक्त लोग जयजयकार करें।
10 अपने दास दाऊद के कारण अपने अभिषिक्त की इच्छा न टाल।
11 यहोवा ने दाऊद से सच्ची शपथ खाई है; वह उससे न मुकरेगा; मैं तेरे वंश में से एक को तेरी गद्दी पर बैठाऊंगा।
12 यदि तेरे वंश के लोग मेरी वाचा और मेरी चितौनियों को जो मैं उन्हें सिखाऊंगा मानते रहें, तो उनके वंश के लोग भी सदा तेरी गद्दी पर बैठते रहेंगे।
13 क्योंकि यहोवा ने सिय्योन को चुना है; उसने उसे अपने निवास के लिये चाहा है।
14 यह मेरा युगानुयुग का विश्राम है; यहीं मैं वास करूंगा, क्योंकि मैं ने इसकी अभिलाषा की है।
15 मैं उसकी भोजन-सामग्री पर आशीष दूंगा; मैं उसके दरिद्रों को रोटी से तृप्त करूंगा।

16 मैं उसके याजकों को उद्धार का वस्त्र पहनाऊंगा, और उसके भक्त लोग जयजयकार करेंगे।
17 वहीं मैं दाऊद का सींग उगाऊंगा; मैं ने अपने अभिषिक्त के लिये एक दीपक ठहराया है।
18 मैं उसके शत्रुओं को अपमान का वस्त्र पहनाऊंगा, परन्तु उसके सिर पर मुकुट शोभायमान रहेगा।

अध्याय 133

1 (दाऊद का एक गीत) देखो, यह क्या ही भली और मनोहर बात है कि भाई लोग आपस में मिलजुल कर रहें!
2 वह सिर पर लगाए गए उस बहुमूल्य इत्र के समान है, जो हारून की दाढ़ी पर बहकर उसके वस्त्र के छोर तक पहुँच गया था;
3 हेर्मोन की ओस के समान, और सिय्योन के पहाड़ों पर गिरने वाली ओस के समान; क्योंकि यहोवा ने वहीं युगानुयुग जीवन की आशीष ठहराई है।

अध्याय 134

1 (डिग्री का एक गीत।) देखो, यहोवा के सब सेवको, तुम जो रात को यहोवा के भवन में खड़े हो, यहोवा को धन्य कहो।
2 पवित्रस्थान में अपने हाथ उठाकर यहोवा को धन्य कहो।
3 यहोवा जिसने आकाश और पृथ्वी को बनाया है, वह सिय्योन में से तुझे आशीष दे।

अध्याय 135

1 यहोवा की स्तुति करो! यहोवा के नाम की स्तुति करो; हे यहोवा के सेवको, उसकी स्तुति करो!
2 हे यहोवा के भवन में, हमारे परमेश्वर के भवन के आंगनों में खड़े हो,
3 यहोवा की स्तुति करो, क्योंकि यहोवा भला है; उसके नाम का भजन गाओ, क्योंकि वह मनभाऊ है।
4 क्योंकि यहोवा ने याकूब को अपने लिये और इस्राएल को अपने निज धन के लिये चुन लिया है।
5 क्योंकि मैं जानता हूं कि यहोवा महान है, और हमारा प्रभु सब देवताओं से श्रेष्ठ है।
6 जो कुछ यहोवा ने चाहा, वही उसने स्वर्ग में, पृथ्वी पर, समुद्र में, और सब गहिरे स्थानों में किया।
7 वह पृथ्वी की छोर से भाप उठाता है; वह वर्षा के लिये बिजली बनाता है; वह अपने भण्डारों से पवन निकालता है।
8 उसने मिस्र के पहलौठों को मारा, चाहे मनुष्य हो या पशु।
9 हे मिस्र, तू ने तेरे बीच फिरौन और उसके सब कर्मचारियों के विरुद्ध चिन्ह और चमत्कार दिखाए हैं।
10 तू ने बड़ी बड़ी जातियों को मारा, और बलवन्त राजाओं को घात किया;
11 एमोरियों के राजा सीहोन, बाशान के राजा ओग और कनान के सब राज्य।
12 और उनकी भूमि को अपनी प्रजा इस्राएल के लिये मीरास कर दिया।
13 हे यहोवा, तेरा नाम सदा तक स्थिर रहेगा; हे यहोवा, तेरा स्मरण पीढ़ी पीढ़ी में बना रहेगा।
14 क्योंकि यहोवा अपनी प्रजा का न्याय करेगा, और अपने दासों के विषय में पछताएगा।
15 अन्यजातियों की मूरतें सोने-चाँदी की हैं, वे मनुष्यों के हाथ की बनाई हुई हैं।
16 उनके मुंह तो हैं, परन्तु वे बोल नहीं सकतीं; उनके आंखें तो हैं, परन्तु वे देख नहीं सकतीं;
17 उनके कान तो रहते हैं, परन्तु वे सुनते नहीं; और न उनके मुँह में कुछ साँस चलती है।
18 जो उन्हें बनाते हैं वे उनके समान हैं; और जो कोई उन पर भरोसा रखता है वह भी उनके समान है।
19 हे इस्राएल के घराने, यहोवा को धन्य कहो! हे हारून के घराने, यहोवा को धन्य कहो!
20 हे लेवी के घराने, यहोवा को धन्य कहो; हे यहोवा के डरवैयों, यहोवा को धन्य कहो।
21 यहोवा जो यरूशलेम में वास करता है, वह सिय्योन में धन्य है। यहोवा की स्तुति करो!

अध्याय 136

1 यहोवा का धन्यवाद करो, क्योंकि वह भला है; उसकी करूणा सदा की है।
2 हे ईश्वरों के परमेश्वर का धन्यवाद करो, क्योंकि उसकी करुणा सदा की है।
3 हे प्रभुओं के प्रभु का धन्यवाद करो, क्योंकि उसकी करुणा सदा की है।
4 वह अकेला ही बड़े बड़े आश्चर्यकर्म करता है, उसकी करूणा सदा की है।
5 उस ने बुद्धि से आकाश बनाया, उसकी करूणा सदा की है।
6 उस ने पृथ्वी को जल के ऊपर फैलाया है, उसकी करूणा सदा की है।
7 उस ने बड़ी बड़ी ज्योतियां बनाईं, उसकी करूणा सदा की है।
8 दिन पर प्रभुता करने के लिये सूर्य को नियुक्त किया है, उसकी करूणा सदा की है।
9 रात पर प्रभुता करने के लिये चन्द्रमा और तारागण को बनाया है, उसकी करूणा सदा की है।
10 उसी ने मिस्रियों को उनके जेठे बच्चों से मारा, उसकी करूणा सदा की है।
11 और इस्राएल को उनके बीच से निकाला, उसकी करूणा सदा की है।
12 बलवन्त हाथ और बढ़ाई हुई भुजा से, उसकी करूणा सदा की है।
13 उसी की जय हो जिसने लाल समुद्र को दो भागों में विभाजित किया, उसकी करुणा सदा की है।
14 और इस्राएल को उसके बीच से पार कर दिया, क्योंकि उसकी करूणा सदा की है।
15 परन्तु उसने फिरौन और उसकी सेना को लाल समुद्र में परास्त कर दिया; उसकी करूणा सदा की है।
16 जो अपनी प्रजा को जंगल में ले आया, उसकी करूणा सदा की है।
17 उस ने बड़े बड़े राजाओं को मारा, उसकी करूणा सदा की है।
18 और उसने प्रतिष्ठित राजाओं को मार डाला, क्योंकि उसकी करूणा सदा की है।

19 एमोरियों के राजा सीहोन को, उसकी करूणा सदा की है।
20 और बाशान के राजा ओग को, उसकी करुणा सदा की है।
21 और उनकी भूमि को मीरास में दे दिया, उसकी करूणा सदा की है।
22 वह अपने दास इस्राएल के लिये एक भाग है, क्योंकि उसकी करूणा सदा की है।
23 उसने हमारी दीनता में हमारी सुधि ली, उसकी करूणा सदा की है।
24 और हमें हमारे शत्रुओं से छुड़ाया है, उसकी करूणा सदा की है।
25 वह सब प्राणियों को आहार देता है, उसकी करूणा सदा की है।
26 हे स्वर्ग के परमेश्वर का धन्यवाद करो, क्योंकि उसकी करूणा सदा की है।

अध्याय 137

1 बाबुल की नदियों के किनारे हम बैठ गए, और सिय्योन को स्मरण करके रोए।
2 हमने अपनी वीणाएँ उसके बीच में लगे विलो वृक्षों पर लटका दीं।
3 क्योंकि जो लोग हमें बंधुआ करके ले गए थे, वे वहां हम से गीत मांगते थे; और जो हमें बरबाद करते थे, वे हम से आनन्द मांगते थे, और कहते थे, हमारे लिये सिय्योन का कोई गीत गाओ।
4 हम पराये देश में यहोवा का गीत कैसे गाएँ?
5 हे यरूशलेम, यदि मैं तुझे भूल जाऊं, तो मेरा दाहिना हाथ अपनी चतुराई भूल जाए।
6 यदि मैं तुझे स्मरण न रखूं, तो मेरी जीभ मेरे तालू से चिपक जाए; यदि मैं यरूशलेम को अपने मुख्य आनन्द से अधिक प्रिय न समझूं।
7 हे यहोवा, यरूशलेम के दिन एदोमियों की बात स्मरण कर, जिन्होंने कहा था, उसको उखाड़ दे, उसको उसकी नेव तक उखाड़ दे।
8 हे बाबुल की बेटी, तू जो नाश होनेवाली है, धन्य है वह मनुष्य जो तुझे हमारे समान सेवा का फल देगा।
9 धन्य है वह व्यक्ति जो तेरे बच्चों को लेकर पत्थरों पर पटक दे!

अध्याय 138

1 (दाऊद का एक भजन) मैं पूरे मन से तेरा धन्यवाद करूंगा; देवताओं के सामने मैं तेरा भजन गाऊंगा।
2 मैं तेरे पवित्र मन्दिर की ओर दण्डवत् करूंगा, और तेरी करूणा और सच्चाई के कारण तेरे नाम की स्तुति करूंगा; क्योंकि तू ने अपने वचन को अपने बड़े नाम से अधिक महान ठहराया है।
3 जिस दिन मैं ने पुकारा, उसी दिन तू ने मुझे उत्तर दिया, और मेरे मन में सामर्थ देकर मुझे दृढ़ किया।
4 हे यहोवा, पृथ्वी के सब राजा तेरे मुंह के वचन सुनकर तेरी स्तुति करेंगे।
5 वे यहोवा के मार्गों पर गीत गाएंगे, क्योंकि यहोवा की महिमा बड़ी है।
6 यहोवा महान् है, तौभी वह नम्र लोगों पर कृपादृष्टि रखता है; परन्तु अभिमानियों को वह दूर से ही पहिचान लेता है।
7 चाहे मैं संकट के बीच में चलूं, तौभी तू मुझे जिलाएगा; तू मेरे क्रोध के शत्रुओं के विरुद्ध अपना हाथ बढ़ाएगा, और तेरा दाहिना हाथ मुझे बचाएगा।
8 यहोवा मेरे लिये सब कुछ पूरा करेगा; हे यहोवा, तेरी करुणा सदा की है; अपने हाथ के कामों को मत छोड़।

अध्याय 139

1 हे यहोवा, तू ने मुझे जांच कर जान लिया है।
2 तू मेरा उठना-बैठना जानता है, तू मेरे विचारों को दूर से ही समझ लेता है।
3 तू मेरे मार्ग और लेटने की जगह की रक्षा करता है, और मेरे पूरे चालचलन का भेद जानता है।
4 क्योंकि मेरे मुंह में कोई वचन ऐसा नहीं जिसे तू न जानता हो, हे यहोवा, देख, तू उसे पूरी रीति से जानता है।
5 तू ने मुझे आगे पीछे से घेर रखा है, और अपना हाथ मुझ पर रखे हुए है।
6 ऐसा ज्ञान मेरे लिये बहुत कठिन है; वह बहुत ऊंचा है, मैं उसे प्राप्त नहीं कर सकता।
7 मैं तेरे आत्मा से दूर होकर किधर जाऊं? वा तेरे साम्हने से किधर भागूं?
8 यदि मैं स्वर्ग पर चढ़ जाऊं तो तू वहां है; यदि मैं अपना बिछौना अधोलोक में बिछाऊं तो देख, तू वहां है।
9 यदि मैं भोर के पंख चढ़कर समुद्र की छोर पर जा बसूं,
10 वहां भी तेरा हाथ मेरी अगुवाई करेगा, और तेरा दाहिना हाथ मुझे पकड़े रहेगा।
11 यदि मैं कहूं, निश्चय अन्धकार मुझे ढांप लेगा, और रात का प्रकाश मेरे चारों ओर होगा।
12 अन्धकार तुझ से छिपा नहीं रहता, परन्तु रात तो दिन के समान चमकती है; अन्धकार और उजियाला दोनों तेरे लिये एक समान हैं।
13 क्योंकि तू ने मेरे हृदय को अपने वश में कर लिया है; तू ने मुझे मेरी माता के गर्भ में छिपा रखा है।
14 मैं तेरी स्तुति करूंगा, क्योंकि मैं भयानक और अद्‌भुत रीति से रचा गया हूं; तेरे काम तो आश्चर्य के हैं, और मेरा प्राण इसे भली भांति जानता है।
15 जब मैं गुप्त में बनाया गया और पृथ्वी की गहराई में रचा गया, तब मेरा स्वरूप तुझ से छिपा न था।
16 तेरी आंखों ने मेरे असिद्ध स्वरूप को देखा; और मेरे सब अंग जो उस समय बने ही नहीं थे, रचे गए थे, वे सब तेरी पुस्तक में लिखे हुए थे।
17 हे परमेश्वर, तेरे विचार मेरे लिये क्या ही बहुमूल्य हैं! उनका जोड़ कितना बड़ा है!
18 यदि मैं उनको गिनूं तो उनकी गिनती बालू के किनकों से भी अधिक होगी; जब मैं जागता हूं तब भी मैं तेरे संग रहता हूं।
19 हे परमेश्वर, तू तो दुष्टों को मार डालेगा; इसलिये हे खूनी लोगो, मेरे पास से चले जाओ।
20 क्योंकि वे तेरे विरुद्ध दुष्टता से बातें करते हैं, और तेरे शत्रु तेरा नाम व्यर्थ लेते हैं।
21 हे यहोवा, क्या मैं तेरे बैरियों से घृणा नहीं करता? और क्या मैं तेरे विरोधियों से दुखी नहीं होता?
22 मैं उन से पूर्ण घृणा करता हूं, मैं उन्हें अपना शत्रु मानता हूं।

23 हे परमेश्वर, मुझे जांचकर जान ले! मुझे परखकर मेरे विचार जान ले!
24 और देख कि मुझ में कोई बुरी चाल है कि नहीं, और अनन्त के मार्ग में मेरी अगुवाई कर।

अध्याय 140

1 (प्रधान संगीतकार के लिए, दाऊद का एक भजन।) हे यहोवा, मुझे बुरे मनुष्य से बचा; उपद्रवी मनुष्य से मेरी रक्षा कर;
2 वे अपने मन में अनर्थ कल्पनाएं करते रहते हैं; वे निरन्तर युद्ध के लिये इकट्ठे होते रहते हैं।
3 उन्होंने अपनी जीभ को साँप की नाईं तेज़ कर लिया है; उनके होठों में नागों का विष है।
4 हे यहोवा, मुझे दुष्टों के हाथ से बचा ले; उपद्रवी मनुष्य से मेरी रक्षा कर; उन्होंने मेरे मार्ग में बाधा डालने की युक्ति की है।
5 अभिमानियों ने मेरे लिये फंदा और रस्सियाँ छिपा रखी हैं; उन्होंने मार्ग के किनारे जाल बिछाया है; उन्होंने मेरे लिये जाल बिछाया है।
6 मैं ने यहोवा से कहा, तू ही मेरा परमेश्वर है; हे यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन।
7 हे यहोवा परमेश्वर, हे मेरे उद्धारकर्ता, तूने युद्ध के दिन मेरे सिर को ढांप लिया है।
8 हे यहोवा, दुष्टों की अभिलाषा पूरी न कर; उसकी बुरी युक्ति को पूरा न कर, कहीं ऐसा न हो कि वे घमण्ड करें। सेला।
9 जो लोग मुझे घेर लेते हैं, उनके सिर पर उनके ही मुंह की बुराई छा जाए।
10 उन पर अंगारे गिराए जाएं; वे आग में डाल दिए जाएं; और गड़हों में डाल दिए जाएं, कि वे फिर ऊपर न उठें।
11 दुष्ट लोग पृथ्वी पर अपना घर न बनाने पाएं; दुष्ट लोग उपद्रवी को गिराने के लिये उसका पीछा करेंगे।
12 मैं जानता हूं कि यहोवा दीन लोगों का न्याय और दरिद्रों का न्याय चुकाएगा।
13 निश्चय धर्मी लोग तेरे नाम का धन्यवाद करेंगे; सीधे लोग तेरे सम्मुख वास करेंगे।

अध्याय 141

1 (दाऊद का एक भजन) हे यहोवा, मैं तुझे पुकारता हूं; मेरे पास फुर्ती कर; जब मैं तुझे पुकारूं, तब मेरी ओर कान लगा।
2 मेरी प्रार्थना तेरे सम्मुख धूप की नाईं, और मेरे हाथ उठाना संध्याकाल की बलि के समान ठहरे।
3 हे यहोवा, मेरे मुंह के आगे पहरा बैठा; मेरे होठों के द्वार की रखवाली कर।
4 मेरे मन को किसी बुरी बात की ओर न फेर, कि मैं कुटिल मनुष्यों के साथ मिलकर बुरे काम करूं, और न मुझे उनकी स्वादिष्ट भोजनवस्तु खाने दे।
5 धर्मी मुझे मारे; यह कृपा होगी; और वह मुझे डांटे; यह उत्तम तेल होगा, जिस से मेरा सिर न फूटेगा; क्योंकि मेरी प्रार्थना भी उनकी विपत्ति में रहेगी।
6 जब उनके न्यायी पथरीली भूमि पर गिराए जाएंगे, तब वे मेरे वचन सुनेंगे, क्योंकि वे मधुर हैं।
7 हमारी हड्डियाँ कब्र के मुँह पर बिखरी पड़ी हैं, जैसे कोई लकड़ी को काटकर धरती पर फेंकता है।
8 परन्तु हे परमेश्वर यहोवा, मेरी आंखें तेरी ओर लगी हैं; मेरा भरोसा तुझी पर है; मेरे प्राण को असहाय न छोड़।
9 मुझे उन फन्दों से बचा जो उन्होंने मेरे लिये बिछाए हैं, और कुटिल काम करनेवालों की युक्तियों से बचा।
10 दुष्ट लोग अपने ही जाल में फँस जाएँ, परन्तु मैं बच निकलूँगा।

अध्याय 142

1 (दाऊद की प्रार्थना; जब वह गुफा में था।) मैंने यहोवा को अपनी आवाज से पुकारा; मैंने यहोवा से अपनी आवाज से प्रार्थना की।
2 मैं ने उसके साम्हने अपनी शिकायत खोलकर रखी; मैं ने उसके साम्हने अपनी परेशानी बताई।
3 जब मेरी आत्मा मेरे भीतर अभिभूत थी, तब तूने मेरा मार्ग जान लिया। जिस मार्ग पर मैं चलता था, उसमें उन्होंने मेरे लिये गुप्त रूप से जाल बिछाया है।
4 मैं ने अपनी दाहिनी ओर देखा, परन्तु कोई भी मुझे नहीं जानता था; मुझे शरण न मिली; किसी ने मेरे प्राण की चिन्ता न की।
5 हे यहोवा, मैं ने तुझ को पुकारा है; मैं ने कहा है, तू ही मेरा शरणस्थान है, और जीवितों के बीच में मेरा भाग है।
6 मेरी दोहाई पर ध्यान दो, क्योंकि मैं बहुत ही दुखी हूं; मुझे मेरे सताने वालों से बचाओ, क्योंकि वे मुझ से अधिक शक्तिशाली हैं।
7 मेरे प्राण को बन्दीगृह से निकाल, तब मैं तेरे नाम की स्तुति करूंगा; धर्मी लोग मेरे चारों ओर घेर लेंगे, क्योंकि तू मुझ से उदारता का बर्ताव करता है।

अध्याय 143

1 (दाऊद का एक भजन।) हे यहोवा, मेरी प्रार्थना सुन, मेरे गिड़गिड़ाहट पर कान लगा; अपनी सच्चाई और धार्मिकता से मुझे उत्तर दे।
2 और अपने दास से मुक़द्दमा न लड़, क्योंकि तेरे सम्मुख कोई भी जीवित मनुष्य निर्दोष न ठहरेगा।
3 क्योंकि शत्रु ने मेरे प्राण को सताया है; उसने मेरे प्राण को मिट्टी में मिला दिया है; उसने मुझे मरे हुओं के समान अन्धकार में रहने को विवश किया है।
4 इस कारण मेरी आत्मा मेरे भीतर व्याकुल हो गई है, मेरा हृदय भीतर से उदास है।
5 मैं प्राचीनकाल के दिनों को स्मरण करता हूं; मैं तेरे सब कामों पर ध्यान करता हूं; मैं तेरे हाथों के काम पर ध्यान करता हूं।
6 मैं अपने हाथ तेरी ओर फैलाता हूं; मेरी आत्मा प्यासी भूमि की तरह तेरे लिए प्यासी है। सेला।
7 हे यहोवा, फुर्ती करके मेरी सुन ले! मेरा प्राण जाता रहता है; अपना मुख मुझ से न छिपा, कहीं ऐसा न हो कि मैं कबर में पड़े हुओं के समान हो जाऊं।
8 भोर को मुझे अपनी करूणा की बातें सुना, क्योंकि मैं तुझी पर भरोसा रखता हूं; मुझे वह मार्ग दिखा जिस पर मुझे चलना चाहिए, क्योंकि मैं अपना मन तेरी ओर लगाता हूं।
9 हे यहोवा, मुझे मेरे शत्रुओं से बचा ले; मैं तेरे पास छिपने के लिये भागता हूं।
10 मुझे अपनी इच्छा पूरी करना सिखा, क्योंकि तू ही मेरा परमेश्वर है; तेरी आत्मा भली है; मुझे धर्म के देश में ले चल।

11 हे यहोवा, अपने नाम के निमित्त मुझे जिला; अपने धर्म के निमित्त मेरे प्राण को संकट से निकाल।
12 और अपनी करूणा से मेरे शत्रुओं को नाश कर डाल, और मेरे प्राणों को सताने वाले सभों को नाश कर डाल; क्योंकि मैं तेरा दास हूँ।

अध्याय 144

1 (दाऊद का एक भजन) धन्य है यहोवा मेरा बल, जो मेरे हाथों को युद्ध करना और मेरी उंगलियों को युद्ध करना सिखाता है:
2 वह मेरी भलाई है, और मेरा गढ़ है; वह मेरा ऊंचा गढ़ और मेरा छुड़ानेवाला है; वह मेरी ढाल है, और वह जिस पर मैं भरोसा करता हूं, और जो मेरी प्रजा को मेरे वश में रखता है।
3 हे यहोवा, मनुष्य क्या है कि तू उस पर ध्यान देता है? या आदमी क्या है कि तू उसका विचार करता है?
4 मनुष्य व्यर्थ है, उसके दिन ढलती हुई छाया के समान हैं।
5 हे यहोवा, आकाश को झुकाकर नीचे आ; पहाड़ों को छू, तब उन से धुआँ उठेगा।
6 बिजली गिराकर उन्हें तितर-बितर कर दे; अपने तीर चलाकर उन्हें नाश कर दे।
7 अपना हाथ ऊपर से बढ़ा; और मुझ को छुड़ाकर गहिरे जल से, और परदेशी लड़कों के हाथ से छुड़ा;
8 उनके मुँह से तो व्यर्थ बातें निकलती हैं, और उनका दाहिना हाथ झूठ का दाहिना हाथ है।
9 हे परमेश्वर, मैं तेरे लिये एक नया गीत गाऊंगा; मैं वीणा और दस तार वाले बाजे पर बजाकर तेरा भजन गाऊंगा।
10 वह राजाओं को छुड़ानेवाला है, वह अपने दास दाऊद को घातक तलवार से बचाता है।
11 मुझ को छुड़ाकर परदेशी लड़कों के हाथ से छुड़ा, जिनके मुंह से व्यर्थ बातें निकलती हैं, और जिनका दाहिना हाथ झूठ का दाहिना हाथ है।
12 कि हमारे बेटे जवानी में पौधों के समान बड़े हों; और हमारी बेटियाँ महल के समान चमकीली कोने की शिलाएँ हों।
13 कि हमारे भण्डार भरे रहें, और उन में सब प्रकार का भण्डार रहे; और हमारी भेड़-बकरियां हमारे सड़कों में हजारों-लाखों बच्चे पैदा करें।
14 कि हमारे बैल काम करने के लिये हृष्ट-पुष्ट हों; और न तो कोई भीतर घुसे, और न बाहर निकले, और न हमारे सड़कों में कोई शिकायत करे।
15 धन्य है वह जाति, जिसका परमेश्वर यहोवा है। धन्य है वह जाति, जिसका परमेश्वर यहोवा है।

अध्याय 145

1 (दाऊद का स्तुति-भजन) हे मेरे परमेश्वर, हे राजा, मैं तुझे सराहूंगा; और तेरे नाम को सदा सर्वदा धन्य कहूंगा।
2 मैं प्रतिदिन तुझे धन्य कहा करूंगा, और तेरे नाम की स्तुति सदा सर्वदा करता रहूंगा।
3 यहोवा महान और अति स्तुति के योग्य है; और उसकी बड़ाई अगम है।
4 एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी के लोगों के साम्हने तेरे कामों की प्रशंसा करेगी, और तेरे पराक्रम के कामों का वर्णन करेगी।
5 मैं तेरे ऐश्वर्य की महिमा और तेरे आश्चर्यकर्मों का वर्णन करूंगा।
6 और लोग तेरे भयानक कामों की शक्ति की चर्चा करेंगे, और मैं तेरी महानता का वर्णन करूंगा।
7 वे तेरी बड़ी भलाई का स्मरण बहुतायत से करेंगे, और तेरे धर्म के विषय में गीत गाएंगे।
8 यहोवा अनुग्रहकारी और दयालु है, वह विलम्ब से कोप करनेवाला और अति दयालु है।
9 यहोवा सभों के लिये भला है, और उसकी दया उसकी सारी सृष्टि पर है।
10 हे यहोवा, तेरी सारी सृष्टि तेरी स्तुति करेगी, और तेरे भक्त तुझे धन्य कहेंगे।
11 वे तेरे राज्य की महिमा की चर्चा करेंगे, और तेरे पराक्रम की बातें करेंगे;
12 कि मनुष्यों पर उसके पराक्रम के काम और उसके राज्य की महिमा प्रगट करे।
13 तेरा राज्य युग युग का राज्य है, और तेरी प्रभुता पीढ़ी पीढ़ी तक बनी रहेगी।
14 यहोवा सब गिरते हुओं को संभालता है, और सब झुके हुओं को सीधा खड़ा करता है।
15 सभों की आंखें तेरी ओर लगी रहती हैं, और तू उनको समय पर आहार देता है।
16 तू अपनी मुट्ठी खोलकर सब प्राणियों की इच्छा पूरी करता है।
17 यहोवा अपने सब मार्गों में धर्मी, और अपने सब कार्यों में पवित्र है।
18 जितने यहोवा को पुकारते हैं, अर्थात् जितने उसको सच्चाई से पुकारते हैं, उन सभों के वह निकट रहता है।
19 वह अपने डरवैयों की इच्छा पूरी करेगा, वह उनकी दोहाई सुनकर उनका उद्धार करेगा।
20 यहोवा अपने सब प्रेमियों की तो रक्षा करता है, परन्तु सब दुष्टों को नाश करता है।
21 मेरे मुंह से यहोवा की स्तुति निकलेगी, और सारे प्राणी उसके पवित्र नाम को सदा सर्वदा धन्य कहते रहेंगे।

अध्याय 146

1 यहोवा की स्तुति करो! हे मेरे मन, यहोवा की स्तुति करो!
2 जब तक मैं जीवित रहूंगा, यहोवा की स्तुति करता रहूंगा; जब तक मैं जीवित रहूंगा, अपने परमेश्वर का भजन गाता रहूंगा।
3 तुम प्रधानों पर भरोसा न रखो, न किसी आदमी पर, क्योंकि उस में कोई बचाव करने की शक्ति नहीं।
4 उसका प्राण निकल जाता है, वह मिट्टी में मिल जाता है; उसी दिन उसकी सब कल्पनाएं नाश हो जाती हैं।
5 क्या ही धन्य है वह मनुष्य जिसका सहायक याकूब का परमेश्वर है, और जिसका भरोसा अपने परमेश्वर यहोवा पर है!
6 जिसने आकाश और पृथ्वी और समुद्र और जो कुछ उनमें है सब को बनाया, जो सदा सत्य रखता है।
7 जो सताए हुए लोगों का न्याय चुकाता है, जो भूखे को भोजन देता है। यहोवा बन्दियों को छुड़ाता है।
8 यहोवा अंधों की आंखें खोलता है; यहोवा झुके हुए को सीधा खड़ा करता है; यहोवा धर्मियों से प्रेम रखता है।
9 यहोवा परदेशियों की तो रक्षा करता है, और अनाथों और विधवाओं को छुड़ाता है; परन्तु दुष्टों के मार्ग को उलट देता है।
10 हे सिय्योन, यहोवा सदा तक राज्य करता रहेगा, तेरा परमेश्वर पीढ़ी से पीढ़ी तक राज्य करता रहेगा। यहोवा की स्तुति करो।

अध्याय 147

1 यहोवा की स्तुति करो! हमारे परमेश्वर का भजन गाना अच्छा है; क्योंकि यह मनभावना और स्तुति मनभावनी है।
2 यहोवा यरूशलेम को बनाता है; वह इस्राएल के निकाले हुओं को इकट्ठा करता है।
3 वह टूटे मनवालों को चंगा करता है, और उनके घावों पर पट्टी बाँधता है।
4 वह तारों की गिनती बताता है, और उन में से एक एक को नाम रखता है।
5 हमारा प्रभु महान है, और बड़ा सामर्थी है; उसकी बुद्धि अपरम्पार है।
6 यहोवा नम्र लोगों को सम्भालता है, और दुष्टों को भूमि पर गिरा देता है।
7 यहोवा का धन्यवाद करते हुए गीत गाओ; वीणा बजाकर हमारे परमेश्वर का भजन गाओ:
8 जो आकाश को बादलों से ढक देता है, जो पृथ्वी के लिये मेंह तैयार करता है, जो पहाड़ों पर घास उगाता है।
9 वह पशुओं को उनका आहार देता है, और कौवों के बच्चों को भी जो चिल्लाते हैं।
10 वह घोड़े के बल से प्रसन्न नहीं होता, न ही वह मनुष्य के पैरों से प्रसन्न होता है।
11 यहोवा उन लोगों से प्रसन्न होता है जो उससे डरते हैं, उन लोगों से जो उसकी करुणा की आशा रखते हैं।
12 हे यरूशलेम, यहोवा की स्तुति करो; हे सिय्योन, अपने परमेश्वर की स्तुति करो!
13 क्योंकि उसने तेरे फाटकों के बेड़ों को दृढ़ किया है; उसने तेरे बच्चों को आशीष दी है।
14 वह तेरे देश में शान्ति करता है, और तुझे उत्तम से उत्तम गेहूँ से तृप्त करता है।
15 वह पृथ्वी पर अपनी आज्ञा भेजता है; उसका वचन अति शीघ्रता से दौड़ता है।
16 वह ऊन के समान बर्फ गिराता है, और राख के समान पाले को छितराता है।
17 वह अपनी बर्फ को टुकड़ों की तरह फेंकता है; उसकी ठंड के सामने कौन खड़ा हो सकता है?
18 वह अपना वचन भेजकर उन्हें पिघला देता है; वह पवन चलाता है और जल बहने लगता है।
19 वह याकूब को अपना वचन, और इस्राएल को अपनी विधियां और नियम बताता है।
20 उसने किसी जाति से ऐसा व्यवहार नहीं किया, और उसके नियम भी किसी जाति के लोग नहीं जानते। यहोवा की स्तुति करो!

अध्याय 148

1 यहोवा की स्तुति करो! स्वर्ग से यहोवा की स्तुति करो! ऊंचे स्थानों पर उसकी स्तुति करो!
2 हे उसके सब स्वर्गदूतो, उसकी स्तुति करो; हे उसकी सारी सेनाओं, उसकी स्तुति करो!
3 हे सूर्य और चन्द्रमा, उसकी स्तुति करो; हे प्रकाश के सब तारागण, उसकी स्तुति करो।
4 हे स्वर्ग के स्वर्ग, और हे आकाश के ऊपर के जलो, उसकी स्तुति करो!
5 वे यहोवा के नाम की स्तुति करें, क्योंकि उसी ने आज्ञा दी और वे सृजे गए।
6 उसने उन्हें युगानुयुग स्थिर किया है; उसने ऐसी विधि ठहराई है जो कभी नहीं टलेगी।
7 हे अजगरों, और हे सब गहिरे सागर, पृथ्वी में से यहोवा की स्तुति करो!
8 आग और ओले; हिम और भाप; और उसका वचन पूरा करने वाली प्रचण्ड वायु।
9 हे पहाड़ों और सब पहाड़ियों, हे फलवन्त वृक्षों और सब देवदारों,
10 हे सब प्रकार के पशु, और घरेलू पशु, और रेंगने वाले जन्तु, और उड़ने वाले पक्षी,
11 हे पृथ्वी के राजाओं और राज्य राज्य के सब लोगों, हे हाकिमों और पृथ्वी के सब न्यायियों,
12 क्या जवान, क्या कुमारियां, क्या बूढ़े, क्या बालक,
13 यहोवा के नाम की स्तुति करो, क्योंकि उसका नाम ही उत्तम है; उसकी महिमा पृथ्वी और आकाश के ऊपर है।
14 वह अपनी प्रजा के सींग को भी ऊंचा करता है, और अपने सब पवित्र लोगों की स्तुति करता है, अर्थात इस्राएल की सन्तान की स्तुति करता है, जो उसके निकट की प्रजा है। यहोवा की स्तुति करो।

अध्याय 149

1 यहोवा की स्तुति करो! यहोवा के लिये नया गीत गाओ, और पवित्र लोगों की सभा में उसकी स्तुति गाओ!
2 इस्राएल अपने रचयिता के कारण आनन्दित हो; सिय्योन की सन्तान अपने राजा के कारण मगन हो!
3 वे नाचते हुए उसके नाम की स्तुति करें; वे डफ और वीणा बजाते हुए उसका भजन गाएँ।
4 क्योंकि यहोवा अपनी प्रजा से प्रसन्न होता है; वह नम्र लोगों को उद्धार देकर शोभायमान करता है।
5 पवित्र लोग महिमा के कारण आनन्दित हों; वे अपने बिछौने पर पड़े हुए ऊंचे स्वर से गाएं।
6 उनके मुँह में परमेश्वर की स्तुति हो, और उनके हाथ में दोधारी तलवार हो;
7 कि अन्यजातियों से पलटा लो, और देश देश के लोगों को दण्ड दो;
8 उनके राजाओं को जंजीरों से और उनके रईसों को लोहे की बेडियों से जकड़ना;
9 कि उन पर लिखा हुआ न्याय पूरा हो: यह आदर उसके सब पवित्र लोगों को मिले। यहोवा की स्तुति करो।

अध्याय 150

1 यहोवा की स्तुति करो! परमेश्वर के पवित्रस्थान में उसकी स्तुति करो! उसकी शक्ति के आकाशमण्डल में उसकी स्तुति करो!
2 उसके पराक्रम के कामों के कारण उसकी स्तुति करो; उसकी उत्तम महानता के अनुसार उसकी स्तुति करो।
3 नरसिंगा बजाकर उसकी स्तुति करो, सारंगी और वीणा बजाकर उसकी स्तुति करो।
4 डफ बजाकर और नाचकर उसकी स्तुति करो; सारंगियों और वाद्यों से उसकी स्तुति करो।

5 ऊंचे शब्द वाली झांझ पर उसकी स्तुति करो, ऊंचे शब्द वाली
झांझ पर उसकी स्तुति करो।
6 जितने प्राणी प्राण रखते हैं वे यहोवा की स्तुति करें। यहोवा की
स्तुति करो!